झरोखो

[साहित्य-संस्कृति रा निबंध]

सम्पादक
श्याम महर्षि

पैं'लो संस्करण : 1986
मोल—20 रु.
प्रकाशक :
राजस्थानी विभाग,
राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति,
श्रीडूंगरगढ (राज.)
मुद्रक :
सांखला प्रिण्टर्स, बीकानेर

JHAROKHO Edited by Shyam Maharshi

दो सबद–

लारला वरसां सूं देखता रैयां हां, कै राजस्थानी भाषा मांय निबंधां री पोथ्यां थोड़ी है, कीं पोथ्यां छपी, वै'भी एकल लेखकां री अर उण मांय वां'रा नीजू इन्ट्रेस्ट रा निबंध छप्या जिण सूं निबंध री सगळी विधावां नीं छपी। इण री पूर्ति सारू संस्था कई बरसां सूं आ सोच रैई ही, कै इस्यो निबंध संग्रै छाप्यो जावे जिण मांय घणा सा विषय सामल हुवै।

ईं बात नै लेय'र संस्था इण निबंध संग्रै नै छाप रैयी है। हेताळू पाठकां नै आ पोथी भी दाय आयसी, म्हानै आस है।

प्रकाशक

विगत

राजस्थानी लोक संस्कृति रो बदलतो स्वरूप

—दीनदयाल ओझा

माणस जीवण रो ज्यूं-ज्यूं विकास हुवै, उणी भांत उणरै जीवण में नित नूंवी धारणावां पुराणी धारणावां रो ठावी ठौड़ लेवती जावै। धरम, कला, साहित्य, स्थापत्य, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत कला, लोक गीत, लोकवार्तावां आद-आद रै सागै-सागै संस्कृति सूं जुड़ियोड़ा जिता भी विषय है वांमें आवणवाळो बदलाव इण बात री पुखता साख भरै कै पुराणी मानतावां दिन दिन टूटती बिखरती जाय रैयी है। आदिम काळ सूं आज तांई रै सांस्कृतिक विकास रो इतिहास इण बात रो पक्को प्रमाण है कै बदलतै समै रै सागै-सागै सांस्कृतिक बदलाव आवै। अबै अठै ओ सवाल पैदा हुवै कै आवणवाळो ओ सांस्कृतिक बदलाव कितो जन कल्याणकारी है अर कितो माणस जीवण रो विनास करणवाळो अथवा उणनै पतन कानी ले जावणवाळो है।

आ विरत रै विद्वानां री मानता रैयी कै बदलाव अठो भी हुवै अर

बुरो भी। राजस्थान री सगळी सांस्कृतिक परम्परावां में भी घणा बदलाव, घणा उतार चढ़ाव, घणा मोड़ जोड़ आया। इण सगळै दौर सूं गुजरतां भी राजस्थान आपरी मूळभूत सांस्कृतिक अवधारणावां नैं आछी तरै अंवेर राखी। इण री सगळी नींव माथै दृढ रैवण सूं राजस्थान री संस्कृति अर उणरो क्षेत्र केयी अर्थां में आपगी निजू ओळखाण राखै। पण जद सूं राजस्थान में राजशाही रो दौर रैयो, उणरै बाद मुसळमान बादशाह आया फेरुं अंग्रेज हकूमत आई-इण सगळै समै में राजस्थान री संस्कृति में मोकळा बदलाव आया। अै सगळा बदलाव आप आप रै समै में किता आछा भूंडा रया इण री चर्चा अथवा उण रो लेखो जोखो अठै ओपतो नहीं बैठेला क्यूंकै उण समै रो जीवण जीवणियां माणस उण सगळी अवधारणावां नै अंगीकार करता रैया। इण अंगीकार करण में कठै-कठै मोटो माड़ो विरोध जरूर रैयो हुवेला, पण आजादी रै बाद जिको आज सांस्कृतिक बदलाव आय रयो है उणसूं पतो लागै कै अबै सामंती संस्कृति रा पुराणा गढ़ ढैवता जाय रैया है। इण ढैवता गढां नैं थोड़ो घणो सायगो देवणवाळो तबको बाकी जरूर बच्यो है अर बो तबको आपरै पुराणै सस्कारां रै उणियारै उण संस्कृति रो मौको आयां दरसाव भी करै। पण अबै जिको बदलाव आय रैयो है-उणनै देखतां थका मालम पड़ै कै संस्कृति सामंती गढां सूं तर-तर नाचै उतर जन जीवण कानी ढ़ळतो जाय रैयो है। जन जीवण रो बदलतो सरूप संस्कृति री सगळी छोटी-मोटी आधारभूत बातां में आछी तरै परतख दीखण लागो है। अै बदलाव थाया अनचायां सैंवणा पड़सी।

इण सांस्कृतिक बदलाव रो जे मोल तोल कियो जावै तो परतख दीखै कै समाज रो सगळो मांयलो अर बारलो सांस्कृतिक सरूप आज अेक खास संघर्ष सूं गुजर रैयो है। ओ संघर्ष कठैई लड़ाई में नहीं दीख, माणस समाज रै आचार-विचार, बोल-चाल, धरम-ध्यान, वेस-भूषा, राग रंग, तीज-तिंवार, गीत नाच, हरख टोकड़े, मेळै मगरियै, पूजा उपासना, आद-आद अवसरां माथै साफ साफ देखीजै। इण अन्तरद्वन्द्व रो पतो उण बेळा लाग सकै जद कोई बूढ़ै बडेरै या बूढ़ो दादी-नानी नैं इण बाबत पूछयो जावै। बदलाव री इण वहती लेहरां में समाज रो जीवण कितो आछो-भूंडो, ओपतो-बेओपतो बणतो जाय रयो है इण री भी चिंता हुवणी गैर बाजब नहीं है क्यूंकै जे नूंवी नूंवी रीतां नैं हिवड़ै धार नित रै जीवण

जुगत मे उतारली तो जीवण किण ढाळ निकी ढळ जासी—औ विचारणो भी जरूरी है ।

माणस मन री अवधारणा में बदलाव लावणवाळा आज रै समै रा जिता सबळा वैज्ञानिक साधन ज्यूं टेलीविजन, रेडियो, वीडीयो, सिनेमा, टेप-रेकार्ड, माईक, वेष भूषा, शिक्षा, नित नू वा छपणवाळा दैनिक, पखवाड़ियो मासिक, त्रैमासिक छापा, नी पढण जोग पुस्तकां, नी सुणण जोग गीत, आद आद जिता छोटा—मोटा सबळा साधन है, उण साधनां रै चारू मेर चक्कर काटतै माणस नै आपरो साचो परम्परागत जुगत जीवण में घणो खलल पैदा करै । इण रै सागै-सागै बदळतै समै रा सामाजिक मोल जिण में छोरा-छोकरियां री बराबर ठौड़ है—साथै साथै उठणो—बैठणो पढणो—लिखणो, खेलणो, कूदणो नोकरी करणो है, उण बीतयोड़ै समै नै याद कर जीवणो घणो औखो ई नहीं नामुमकन है । अबै तो पुराणी शिक्षा री रीत भार आश्रमां री बातां गांव री धीमरो बेन बराबर गांव रै अेकै घर रो जवाई सगळै गाव रो जवाई पड़दो-घूंघट घट्टी ओखली बीया'र घेनड़ जलमण रा गीत आडी दियाळी आद—आद सगळो परम्पराआं हवा में उड़ती सी लागै । धन जोड़ण में माणस किती मर्यादाओं नै छोड़ रैयो है, पळ भर रै सुख भोग सारू जीवण नै कितरो धूड़ में मिलाय रैयो है किती कूड़-कपट कर फैशन मे रैवण री हवस पूरी कर रैयो है । किता क्लबां में जाय, जूओ खेल, अखाद्य खाय अर अपेय पी रयो है, इणरो जे लेखो जोखो कियो जावै तो साफ मालम पड़सी के नागर संस्कृति रा अे बदलता सरूप हवळै-हवळै गावां कानी भी पगल्या कर रैया है । गांव भी ज्यूं-ज्यूं विकास कर रया है बठै अे सगळी आछी-भूडी प्रवृत्तियां धीरै-धीरै पूग रैयो है । पण अजूं ताई आंख्यां वाळी सरम राजस्थान रै गांवा अर नगरां में बाकी है । संस्कृति रो ओ बदलाव अर इण बदलाव रा नूंवा, पुराणा मिळया-जुळया सरूप राजस्थान में आज भी घेनड़ जलमण बीआ बधावणे तीज तिवार बेवधे रयोण, गोढ घूघरो राती जगै मोकळावे मेले मर्यादिये आद-आद अवसरां माथै परतख दीखै ।

संस्कृति रै इण बदलाव में पूंजीवाद-सामंतवाद, साम्राज्यवाद समाजवाद, साम्यवाद आद-आद वादां रा हिमायती अर इण वादां रै मूळ-भूत गढ़ा रा माणस आप-आप रै विचारां रै उणियारै सारकृतिक बद-लाव सारू घणै सबळै ढग-सूं खपतो थको मोकळी विधावां में आपरा पग फैलाय रया है । माणस मन इण संक्रांति री बेळां में औ चुणाव नहीं

कर पाय रैंयो है के उणरै जीवण नै किसी धारणावां सुखदायी है ? किसी किसी नू वी बातां ग्रवणावण जोग ग्रर छोड़ण जोग है । संघर्ष री इण जबरी आंधी मे कठै तो यो ग्रांख मीच दो पग धर आगे बधतो जाय रैंयो है ग्रर कठै वो दो पग पाछा मेल ग्रापरा पाछला पग संभाळ जीवण, जीवण सारू दो घड़ी थम विचार कर रैंयो है । नूंवी पीढी जिकी आज रैं भौतिक सुखां रैं भुनै भूमती कई-कई भूलों कर रैंयी है उणनैं उठती ऊमर में पतो नही लाग रैंयो है । होड़ री हबस में आपो भूळ आज रो माणस जद जद बदलते सांस्कृतिक संदर्भा सूं जुड़ ग्रोपतो ग्रादर जोग जीवण जीवणो चावै उण वेळा साथ ई ग्रो पुराणै सांस्कृतिक परिवेश पुराणी परम्परावां नैं भूळ नूंवै रंग मे आछी तरै रच पच रगीज जावै । पण थोड़ोक ऊपर बधतो, परवार रैं फैलाव ग्रर ग्रनुभव री कसोटी मायं सगळो जवानी री गतिविधियां नै कसतां उणनैं साफ-साफ मालम पड़ण लाग जावै के ग्रे मिरगतिरसणा आछी नही है । पण "गाय करै ज्यूं गैली नैं भी करणो पड़ै" इण कैवत रैं उणियारैं सगळा जिण दिस कांनी भागै वो भी चावतां ग्रनचावतां पाछ नी राखै ।

दरग्रसल राजस्थानी लोक संस्कृति रो बदलतो सरूप नगरां मे पुखता पग ग्रर बदलाव रो रग जिण भांत दिखाय रैंयो है उण री तुलना में राजस्थान रो ग्रामीण जीवण अजूं ताई लोक संस्कृति री मूळ अवधारणावां नैं हिवड़ै रो हार कर धारण कर रयो है । क्यूं के राजस्थान रो बुद्धिवादी तबको नागर संस्कृति सूं जुड़ियोड़ो है, गांव री संस्कृति सूं उणरो न तो सबळो जुड़ाव है न थोड़ो घणो लगाव ही । पण जिका गाव रो जीवण जी रैंया है, ग्रथवा जिकां रो गांवा सूं सैंठो संबध है वै इण बात नैं आछी तरै जाणै के बठै बदलती संस्कृति रा सरूप अजूं ताई पुर जोर तरीकै सूं सामनैं नही ग्राय रैया है । नगरां रा रैवणवाळा जांध जवान ग्रथवा नवोढावां गांवों में जावतै ई गांव री संस्कृति रैं उणियारै ई ग्रापरो जीवण ढालण में दोय घरां री साख शोभा समझै । बम्बई, कलकत्ते जिसे महानगरां रैं बंगलां में केक्टस (थोर) उगावणवाळी ग्रथवा उणनैं चाव सूं सींचण वाळी नूंवी नवेली नैं ग्रे कर तो गांव मे आय चौक मे तुलसी रैं बिरवै नैं सींचणो, सवेरे संध्यां जोत करणी, माथो निवणो जरूरी है । बूढां-बडेरा सूं पण थोड़ो घणो घूंघट निकालणो, तीज तिवारां रैं ग्रवसर माथै मैंदी राचणी, होळी-दीवाळी राम-राम करणा, देवी देवतावां रैं पूजण रैं दिन

अगतो रास पूजा करणी आद-आद रीत-रिवाज सांस्कृतिक परम्परावां चावते अथवा अणचावते निभावणी पड़ै।

भौतिक बदलाव रै दायरै चढ़ियोड़ी, पळ भर रै सुखां री लालसा में अणमोल जीवण जुगत नै कोड़िया बदळै खतम करणवाळी नूंवी नूंवी *अवधारणावां जिको सांस्कृतिक बदलाव नै रंग दे रैयी है, उणमें माणस* नै माणस बणाय राखण री बात किती सबळी,सैठी अर अनुकरण जोग है अे बातां भी विचारणीय है। जीवण रा मूलभूत तत्व जिण तत्वां माथै समाज री नींव घणी गैहरी अर मजबूती सूं राख्योड़ी है अर उण ऊपर जिका सांस्कृतिक अवधारणावां रा अमेटू भाव चितराम मांड्योड़ा है जे वानै आज भौतिक सुखां री हवस में आपरै ई हाथां सूं रगड़-रगड मिटाय दिया तो आवणवाळो जीवण कितो थोथो, देखापे रो, अपणायत बायरो अर लोभ-लालच, लिप्सावां अर ऐसणावां सूं भरयोड़ो हुवण रै सागै-सागै क्रोध तणावे, अभाव,कुण्ठावां,सूं सराबोर हुयोडो रैयसी अर इण तरै रै जीवण में सायद ढूंढणै सूं भी राग, रंग, हास-परिहास अपणायत ठठा-मस्करी, आणद उच्छाव नजर नहीं आवैला। इण खातर संस्कृति रै बदलाव री इण संक्रांति री वेळा में हियै हाथ राख विचारणो जरूरी है के सार-सार अर समाज उत्थान परक तत्वां नै ग्रहण कर बाकी निसार, अकल्याण कर बातां नै, चावै वे किती ही होड़ा-होड अर देखाणै में चोखी हुवो, छोडणी जरूरी है। क्यूंकै संस्कृति री जड़ां घणी गैहरी आत्मा तांई पूग्योड़ी हुवै अर उणी माथै हरेक देस, प्रान्त अर समाज आपरी निजू ओळखाण राखै। राजस्थान रो वीर भूंझारू माणस इण अबखायां नै झैली है अर फेरूं भी झेलतो थको आपरी सांस्कृतिक अवधारणां नै सबळी सैठी धार जीवण नै जुगत सूं जीवतो थको आगै पग धरतो विकास री मजलां तय करसी। जिको बदलाव आज दीख रयो है, ओ बदलाव नागर जीवण रो देखापे रो बदलाव है, पण अन्तर में गांव-गांव ढाणी-ढाणी आपरी संस्कृति री मूळ बातां नै अजूं तांई नहीं छोड़ रैयी है आ बात साच ई घणै हरस री है। इण खातर ओ बदलाव ऊपरी बदलाव है, अन्तस रो हिवड़ै रो बदलाव नहीं है।

आज की प्रगतिशील कविता

रमेश 'मयंक'

आदि काल सूं मिनख आप आपरी इच्छावां नै पूरी करण खातर भांत भांत रा जतन करतो रैयो है। मिनखपणै रा विकास री जातरा रै सागै उण रा तौर-तरीकावां में बदलाव आवता रैया। नूंवी चेतणा गैलो बणावती रैयी। मिनख अेक दूजै सूं जुड़ग्यो: समाज बणग्यो। जद, समाज री भलो चावणियो, आगै बधावणियो साहितकार अधिकारां री मांग करण खातर कविता करण लाग्यो तो हिवड़ा री बात आखरां में ढलण लागी।

आज शिक्षा, विज्ञान, उद्योगां रो घणो पसारो होग्यो है। आवण जावण रा साधन बधग्यां। मिनख एक दूजे सूं छेटी रैवता थकां भी कनै मैसूस करण लाग्यो है। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक जीवण में बद-लाव आवण लाग्या है। आज सुख सुविधा भोगण रा तमाम तामझाम जुटावण रा फैर में मिनख-मिनख में आंतरो बधग्यो है। लूण रो खार मिनखां में बापरग्यो। इच्छावां रो बधेपो होवण रै सागै-सागै पूंजी रो इतरो पसारो होग्यो के अबै समेटणो भारी पड़ग्यो है। जदे-जदे भी

मिनख में सुवारथ घुसग्यो, शोषण होवण लाग्यो तो कवि उण शोषण री खिलाफत करण खातर पूठ कोनी दरसाई, परपिरोड़ी मानतावां रा जूनांतरी रूंखड़ा उखाड़ता थका नूंवा नूंवा विचारा री पौध रोपण री सरावण जोग कारज औसर आयां कवि करियो है; जिण नैं अणदेख्यो कोनी करियो जा सके है।

आज राजस्थान री प्रगतिशील कवितावां तो बीजी भासा री कवि-तावां री लैंण मे दो पावंडा आगै इ है। अठा रा प्रगतिवादी काव्यान्दो-लनां री अेक सैंजोरी परम्परा रैयी है। अठा री आम जनता गुलामी री टीस नैं भोगता-भोगता बागी होवण लागी। अंगरेजा री विरोध करण रै सागै-सागै जुलम रा मोटा-मोटा मगरा रा मगरा धरड़ावता जमीदारा, सेठ-साहूकारां सूं न्याव री मांग उकळतै आखरां में करी है। पगा री रेत रेवणियो करसाण मजदूर आपरी फूस री टापरी मे बैठ'र मरणों मन्जूर करियो पण बेगार करण खातर नटग्यो। उण आधळते बखत में आपरी हिम्मत रै पाण जठै-जठै चाल्यो बठै ही गैला पड़ग्या। जठै-जठै थम्यो बठै ही मजला होगी। घर कूंचा-घर मजला करतो थको आप बीती री पुख्ता टीप बिगत-वार मांडता थकां दीठ मे सतरंगी सुपना सजाया तो आजादी रो चिलको उण नैं निजरै आवण लाग्यो। बरसां ताई धरम रै नांव माथै पालतो पाशविक क्रूरता, गुलामी भोगता, भूख-तिरस सैण करता, जागीरदारां-सेठ साहूकारां रा चुंगल में फसता, अकाळ सूं झूंझता लोई चूसणिया सूं मुंडो फेर'र नफरत करण लाग्या, नूंवी किरान्ती रो दरसाव हुवण लाग्यो, पण जद सुपनां ठकलियां में राइ री भांत बिखरण लाग्या तो मिनख सावचेत होग्यो।

राजस्थान में प्रगतिवादी काव्य सिरजण री नूंवी चेतणा छायावादी काव्य री पूठ पे पग देय 'र आई। 'राजस्थानी प्रगतिवादी कवियां री रचनावां जुग री मांग रो पड़ूतर ही खास करने रैयी है।'[1] जद १९३६ में मुंशी प्रेमचन्द री देख-रेख में प्रगतिशील लेखक संघ री थरपणा हुई, उण समै अठा रो मिनख अंगरेजां, जागीरदारां, पूंजीपतियां रा जुलम सैण करतो हो।

---

1. डा० किरण नाहटा, राजस्थानी नूंवी कविता-जागती जोत-अंक 3 1975।

आयो इंगरेज मुलक रै ऊपर,
आहंस लीघा खैंची उरा
धणियां मरै न दीधी धरती,
धणियां ऊभां गई धरा'।[1]

अंगरेजां अर जागीरदारां सूं रोवण पड़तां होय'र महात्मा गांधी री अलावण में देस आजादी री अलख जगावतो हो उण टैम गांधी जी रा सुर मे सुर मिलाता थका राजस्थान रो मिनख इन्कलाब री नूंवी चेतणा सागै जुलम सैंण करतो प्रगति रै मारग मायै बध रियो हो —

मर्दांमों रै हाथ जोड़बो छोड़, आख्यां राती कर दो।

खुशामद नै दूरो धर दो।
भूठो अब मत पीवो जर दो।
यो मरद नशो डीला में भर दो।

मर्दाग्नों रै
बन्दे मातरम् गीत गावज्यो सब टोली।
बन्दूक्यां री टळसी गोळी।
तरवार मूठ सूं हो खोली।
पाप्यां की हो जासी होळी।[2]

पाप्यां री होळी चेतावण खातर मोट्यारां नै माथा देवण रो नूंतों देवणो पड्यो —

मुलक नै मोट्यारां माथा देणा पड़सी।
देस नै मोट्यारा माथा देणा पड़सी।
बीत गयो जूनो जुग सारो,
बदल रयो दुनियां रो धारो।
जुग नै हाथ लगावो।

1. कवि राजा बांकी दास–राजस्थान का स्वाधीनता कालीन काव्य पृ० 151।
2. वही–माणिक्य लाल वर्मा–पीडितों का पंछीड़ा, पृ० 51
3. वही–जनकवि उस्ताद पृ० 137

अंगरेजां ने मुलक सूं भगावण, देस ने आजाद करावण री भार गांधीजी लीदो —

फौजां रोकी फिरंगरी,
तोकी वह तरवार।
गांधी ती लीधो गजब,
भारत री भुज भार।[1]

अंगरेजां ने मुलक सूं भगावण, देस ने आजाद करावण खातर राजस्थान रा प्रगतिवादी कवियां कलम री कोरणी सूं कवितावां रा भात-भात रा चितराम माडता थकां घणो सरावण जोग कारज कीदो।
पण,

देस आजाद हुया पछै भी अठा रा मिनख ने सुख री सीलो-बायरी कोनी आई। आजादी रे इतरा बरसां पछै भी अठा रो मिनख भूख-तिरस सैण करै है, अकाल सूं लड़ै है।

गरीबी ने भोगता थका जुलम रो विरोध करै है, तूंबी किरान्ती लावण री बात करै है जो आज री प्रगतिशील कविता में मुंडै बोले है।

राजस्थान रा प्रगतिवादी कवियां सैर री ओड़ गांव सूं करण लाग्या अर आजादी रे पैला अर आज रे बीच बंधतां आंतरा री टीप माडण लाग्या —

कठैई की तो को बदलियो नीं
म्हारो गाव
बठै रो बठै
बैड़ो रो बैड़ो है।
हरेक घर री पोळ में देवता है
घर हरेक घर रै पिछवाड़ै
ऊकरलो है
हरेक घर के तुलसी थानै
दीवो बलै
घर

1. राजस्थान का स्वाधीनता कालीन काव्य—नाथूदान महियारिया पृ० 47

हरेक घर रै चूल्हे में
वारते बुझयोड़ी है।[1]

इण बधते आतरे मे मिनख नूंवी बाता सोचण रा फेर में भापरै मिन
पणैं री जूनी मोळखाण गमाय दी –

म्है गमाय दियो म्हारो गांव
सोवण री घास
पर्गा री पाणी
टांक दियो मूण्डो
कांकड़ री सेजड़ो
जूनी, घणी जूनी
जिण री बात म्हारा दाता कैवता[2]

इण जातरां में मिनख रै रैवण री रंगत बदलगी उण रै सोचण रा सो
तरीका भी नूंवा होयग्या–

इत्तो जरूर व्हियो है
कै ल्होड़िये गांव रै भाज काले
मूंछयां भायगी है–
कढावणी री खुरचण
सगलां ई खावणी छोड़ दी,
तूटगी उण नीमड़ै री डाल
जिण सूं भुरणी रमता हा
नैना हाथ
किलकारी भरता किता ई कंठ
भां ई बरसां में
छोडग्या इण गांव नै-
जाणैं क्यूं ?[3]

गांव री गलियां, सूनी होयगी। सगळा गांव छोड़'र टुरग्या, च्यारू मे
सुनसाण ही सुनसाण बापरगी –

---

1. नन्द भारद्वाज, अंधार-पख पृ० 25-26
2. भर्जुनदेव चारण, जुग बोध, राजस्थली–पृ० 6
   भाठवें दशक री प्रगतिशील कविता विशेषांक 1981
3. श्री नन्द भारद्वाज, अंधार पख पृ० 51

सेर
गांव
घर छाज्यां बिच्चै
धोकत उड़ती
धूड़
—म्हैर काळ पड़ायो इण मुलक में
गुमग्यो फेरूं
कमीनां रो काम-[1]

मिनख गांव छोड़'र मजदूरी करण सारू कमीनां रा काम पै जावण लाग्या।

म्हूं
धाताई गांव में फरग्यो
नीं मिनख
नीं मिनख रो जायो
कोई कोनी निजरै आयो
च्यारूंमेर
कागला बोलै है
मठोनै/बठोनै
पांखियां-पांखियां बतावता
भूखा/तिरस्या जिनावर डोलै है[2]

कंवारी कूंखड़ियां रा छान उड़ावता
भटकण लाग्या भूतला
नीसरगी भळ माजनै कानी
हाड़का नीसरग्या छोरां रा, मिनखां रा
पाताळ पेसग्यो पाणी
भूख अर तिरस सूं
मरण लागग्या मिनख
मजो होयो काग-गिरभड़ां रै[3]

---

1. नन्द भारद्वाज, अंधार पख पृ० 13-14
2. रमेश मयंक-प्रकाश : तीन चितराम
3. रामेश्वर दयाल श्रीमाली, म्हारो गांव पृ० 47

ठाकर-जमीदार, सेठ-साहूकार, हाकम-हवेलियाँ रे आगै-पाछै फिरतो मिनख खुशामद छोड़ दीनी, मजूरी करण लागग्यो। इण नुंवी चेतणा सूं भूख अर तिरस रा चितराम उण रे खातर अेक इतहास बण'र रैयग्या-

आभै रे सिखाणै
धोरां रै आंगणै
मांड्यो है कोई
इतहास भूख रो
चितराम तिरस रो

प्रगतिशील चेतना रा ग्यान सूं मिनख मजदूरी सूं हेत करण लाग्यो, पूंजीपति सूं नफरत बापरगी अर कविता मे मजदूर, करसाण रा जीवण माथै चरचा होवण लागी जो आंख्यां ने हिरदै रो पाठ पढ़ावण री पुरजोर सरुआत होय सकै है -

ग्यान बगसै-
फूलां नै गंध
पंख नै हवा
रूंख नै आकास वासो
झरणे ने संगीत अर नदी ने प्रीत
जंगल ने जिया जूण अर
ओ आख्यां ने हिरदै रो पाठ पढावण री कला[1]

इण

नुंवे ग्यान सूं मिनख करसाण, मजदूर रै प्रति सहानुभूति बतावण लाग्यो। काल मार्क्स रा विचारां री पुख्ता छाप छोड़ता थका कविता रो सिरमौर विषय मजदूर-करसाण होयग्यो, कवि आपरी कलम सूं इण मैणत करणिया मजदूर री मजबूरी बतावै, उण रा सुख-दुख री कूंत करें, उण री खिमता रो बखाण करै, उण री झूंपड़ी जूण रा अन्धार पंख नै चौड़े लावै -

मूं कांई केह सकूं आपनै
देस रो करसो हूं

1. पुरुषोत्तम छंगाणी, सासां री सुत पृ० 22
2. श्री ओंकारश्री, राजस्थली, प्र० का० वि० 1981 पृ० 19।

टूट्योड़ी टापरी नै भेलो दो[1]

आज री नूंवो प्रगतिशील चेतणा री मांग मुजब ताज महल, राज-महल, सभा भवन, राज भवन, बणावणियां मजदूर ने रोटी, कपड़ो, मकान री सुविधा पुगावणो जरूरी होयग्यो है–

घणा बणाया-
ताज महल/राज महल/सभा भवन/राज भवन/
कला भवन/
पिण अै सगळा जिका बणावै
इण दुनियां रो
सुंदर/मजबूत/रंगीन भवन
उण रै रोटी रो/कपड़ें रो/रोजी रो/
रैवण रै घर रो/नहीं हुवै पूरो सरतन[2]

मिनखां रा लोही चूसणियां सेठ–साहूकार रो भवै अन्त आयग्यो। वे मूरख कोनी बणा सकै है। मिनख उणां रा जुलम–जोर जबरदस्ती सैन कोनी करै, उकळतै आखरां में रोस कर र पडूतर देवै। उणा सूं नफरत करै है –

आ बात सगलां नै
अेक दिन समझणी पड़सी
के मुट्ठी भर लोग
हजारां - लाखां लोगां नै
कठां ताई मूरख बणावता रैवैला[3]

लोगां रा ताता पसीना नै पीवता थकां
थारा कंठ नीं दाझ्या, नीं निकली थारै
कोढ़ भर नी मरयो थारो कोई
जवान बेटो काचो मौत सूं[4]

---

1. ईश्वरलाल दर्शक, अंतस रा आखर पृ० 140
2. सत्य नारायण पुरोहित, जागती जोत नवम्बर 1980 पृ० 13
3. कमर मेवाड़ी, सिरजण पृ० 127
4. गोरधन सिंह शेखावत, खुदसूं खुद री बातां, जागती जोत पृ 13 जुलाई 1977

राजस्थान रो मिनख सेठ-साहूकारां रा जुलम सैण करतो थको रीस कर'र उण रा सरवनास री कामना करै है तो धरम रै नांव माथै चालती पाशविक क्रूरता रो विरोध करतो थको अंध विश्वासां ने मेटण साह आगै आवै है–

> मेल छुरी अंदाता रै माथा–माथै
> अर काढ़ न्हाक
> अमरिया अंदाता रै कानां री कुड़कली
> तीखा सींगा सूं खोद न्हाक
> इण नीमड़ै री जड़ां
> अर मूत सूं धोय न्हाक
> सिंदूरी पुड़ता
> अंदाता बाजतै इण भाटै ने नागो कर दे
> अेकदम नागो
> अर
> कावरकी पारड़ी लारै बोबाड़ो करतो
> टुरजा पाछो
> टोला बिचालै[1]

नूंवी चेतणा सूं मिनख नै धरम रै नांव पै लूटणियां री पोल रो बैरो पड़ग्यो। अबै धरम रो काम करम ठीक रै कानी लागै -

> उण इतिहास री ओळा में
> अलोप व्हैग्या है
> धरम रा बीज
> आखरनीती रा
> अर मिनख पणै रो
> कठै बावड़ ई कोनी[2]

इण भांत पन जो मारू[3] गीता अर महाभारत कोनी बांचे है ।

आजादी रा सुपना संजोतो मिनख आजादी रो लावो लूंटणियां नेता लोगा रा फेर मे फसग्यो। राजस्थान रै प्रगतिशील कवि राजनेतावां रा

---

1. चन्द्रप्रकाश देवल, पागी
2. पुरूषोत्तम छंगाणी, सासां रो सूत पृ० 22
3. गोरधन सिंह शेखावत को अेक कविता

दोगला पणां नै थोड़ी ई कोनी कर्यो, वणां रो सफा नागो रूप घर मणूतो करतूतां सूं सगलां नै वाकिफ करातां थकां उणा पे आपरी लेखणी रा व्यंग बाणां सूं वार करणं सूं भी कोनी चूकियो है।

सुणियो है
आजकल काले सांप
आपरो सगलो कालास
मांयनै छिपाय लियो है
अब धारण कर लीनी
सफेद पोसाक[1]

o

वै आय रह्या है
पांच साला खेती रा मालिक
काल में जिणां रा धावा चढ़ै
काल में जिणा री साखा नीपजै
काल में जिका लाटा लाटै[2]

o

भासण देय 'र खावै
योजना बता'र खावै
योजना बणा'र खावै
चतर सिकारी है वे[3]

o

वै आय रह्या है
म्हारी भूख नै चिण 'र
बंगलो बणावता
भासण सूं क्रान्ति लावता
काल में साखां उगावता[4]

---

1. रामेश्वर दयाल श्रीमाली, म्हारो गांव पृ० 65
2. वही पृ० 48
3. वही पृ० 49
4. वही पृ० 50

इन्कलाब जिंदाबाद रा नारा लगाय
पेट भरणे री म्हारी आदत
घणी पुराणी हुय 'र बिगड़गी है,
अब मैं
चोराये/तीकूटै अर गली कूंचलां माय
घेराव/सत्याग्रह/ अर हड़ताल बेच'र
पेट भरूं[1]

भूख, अज्ञान, अत्याचार म्हारै गांव री जनता नैं गांधीजी रा तीन बांदरा बणाय दीना जिण सूं वै समझता थकां भी देखे कोनी, देखता थकां भी बोले कोनी, जाणता थकां भी सुणैं कोनी। नेता कैवेहा के आजादी रो नूं वो सूरज उगग्यो पण साफ-साफ बात कवि कैवण सूं कोनी चूके–

सूरज तो उग ग्यो
पण उगतो ई
नेतावा रे घरै पूगग्यो[2]

अर,

मिनख साव चेत होय'र आये पाच बरसां में टोपिया री लड़ाई देखतो रैयो उण ने की बिगत कोनी पड़ी है-

म्हे चमगूंगे ज्यूं देखूं
टोपियां म्हारो माथो बचावण नै
आपसरी में क्यूं लड़ै !
क्यूं लड़ै इतरी जोरदार कागजी लडाई
भासणां रा अलूटै समदर
पोस्टर हिलोलै चढै
भूनलियै उडे सभावा[3]

आज री प्रगतिशील चेतणा रो कवि शोषण रा सांगो पांग चितराम मांडै है, नूंवी किरान्ती करावण खातर पुख्ता भोमका तैयार करैं, नूंवा सिरजण रो माणस बणावै अर नूंवै नूंवै विचारां री पौध रोपता थकां नूंवै समाज रो सिरजण करैं। इण नूंवै समाज रा सिरजण में आज रो

1. श्याम महर्षि प्र० क० वि० राजस्थली पृ० 95
2. भवर सिंह सामोर वही पृ० 64
3. रामेश्वर दयाल श्रीमाली म्हारो गांव पृ० 53

प्रगतिशील कवि युवा माणस रो नैछो महताऊ सहयोग चावै है। उण नैं आपरी मैणत, खिमता पै पूरो भरोसो है– इणीज भांत रा भरोसेमन्द आखरां रैं पाण नू वीं भोर रो सुपनो देखै है–

सींच रगत सू धरती थारी
दीवटियां ने ऊंचो मेल
मांड मन्डासो मैणत रो थू
अन्धारा ने पाछो ठेल
ताक भाग री पोथी नेमत
थारो पंथ निहारै भोर[1]

इण, भोर रो पंथ आत्मा री पुकार सूं क्रांति रा गीत गाता थकां निहारणो पडसी-

म्हारी आत्मा री पुकार
नव सिरजण रो हठ करै

०

म्हारी सासां–धड़कनां
उगेरणा चावै
क्राति रा गीत[2]

क्रांति रा गीत, जुग री मांग है। इण गीतां नैं गावता नूंवी चेतणा रैं प्रगतिशील कवियां नैं मत बरजो, मत रोको-

परभात रैं पोर रैं इण उजास में
दीखण दो ऊजला उणियारा
धोळा–धट दिन मे
उकळता आखर नैं मत बरजो[3]

०

थूं रोक नीं सकै
म्हनैं वै गीत गाता
जिका म्हारी रगां मे
रगत रैं साथै फड़कै है

---

1. श्री नन्द किशोर चतुर्वेदी, लखाण पृ० 100
2. पुरुषोतम छंगाणी, सांसां रो सूत पृ० 4-5
3. आई दान सिंघ भाटी, आगूंच 2-3 पृ० 18

चाइजे है आज री प्रगतिशील कवि। उणनें यो सैण कोनी के प्रगति रै नांव पे लोगा री लोई चटीजतो रेवै अर थोड़ा लोगां रै कनै ही सगळी सुख सुविधा सिमट जावै। तिखडैं मैल सूं बदूक ले'र डरावता लोगा सूं उण ने घिण है। वो च्यारूं खूट राम राज देखणो चावै है। बधती आबादी सूं उण नै अबखाई है।

इण भांत,

आज री प्रगतिशील कविता में देस'रे खातर समरपण री भावना है, देस नै आगै बधावण री हेतालू इच्छावा है, देस री प्रगति मे योगदान देवण री आपरी पूरी राय है। भूखा तिरसा मिनख रा मुळकता चेहरा री चाव है। आज री प्रगतिशील कविता री मिनख अन्याव सैण कोनी करै, अन्याव मेंटण नै त्यार रेवे है। औसर आयां वो नूंवी किरान्ति करण सूं कोनी चूकै पण किरान्ती रो मतलब विनास कोनी, नूंवै समाज रो सिर-जण करणो है। भाग-भरोसै मिनखा जूण पूरी करणो उण री लक्ष्य कोनी, वो मैणत रै पाण आपरी तकदीर बणावणो चावै है। शोषण कर-णिया सूं मुंडो फैर र शोषक रै प्रति उण रै हिवड़े मे लाड है वो पिरेम सू उण रा दुःख—दरद नै सुण र दूर करणो चावै है। जूंनी मान्यतावा, अन्धविस्वासां री विरोध करता थका राजनीतिक दोगला पण रै मुखोटा नै उतरता थका, मैणत नै भगवान मानै है। धरम रा ढकोसला अर सरकारी तन्त्र रा अलूभाड उणरै विकास में आडै कोनी आ सकै है। विकास रो सूरज सैर रै आगणै ही कोनी चिलकै, गाव—गाव पूगै, आ इण जुग री पुकता माग है। वो नारी जगत नै भी ऊंची उठावणो चावै है। नारी ने उण रा हक देवणो उण रो लक्ष्य है।

इण भांत,

संखेप मे, आज री प्रगतिशील कविता इण नूंवे उजाळै मे आपरै मारग मायै बधती जाय रैयी है।

साहित्य रै सन्दर्भ में राजस्थानी पत्रिकावां

डॉ. गोरधनसिंह सेखावत

आंज राजस्थानी लेखक रै सामैं सगळा सूं मोटो संकट प्रकासन रो है क्यूं'क साहित्य नैं रफ्तार देवण अर मौजूदा लेखन री ओळखाण सारु पत्रिकावां रो छपणो घणो जरूरी है। पत्रिकावां रै अभाव में नी लिखारां नैं किणी ढंग री प्रेरणा अर प्रोत्साहन मिलै तो नी पाठकां नैं ओ ठा होवै'क उणां री भासा में कलम चाल रैयी है या बंद है। राजस्थानी भासा रै विकास अर सिरजण रै छेत्र री अेक अबखाई साहित्यिक पत्रिका री कमी है। इण कमी रै कारण नी तो सिरजण रो बिगसाव होवै अर नी पाठकां रै मांय ई किणी ढंग री जागरुकता आवै। जिण रो नतीजो ओ होवै'क रचनात्मक दृष्टि सूं उण भासा रो साहित्य पिछड़तो जावै। लेखन रै स्तर नैं बिछाणबा सारू, ढंग री रचनावां नैं टाळवा सारू अर लेखक-पाठक री समस्यावां मांथै विचार करण सारू पत्रिकावां री महताऊ भूमिका गिणीजै। आ पत्रिकावां रै माध्यम सूं ही सामाजिक अर राजनीतिक परिवेस रै मांय साहित्यकार री जागरुक चेतना रो ठा पड़ै अर साहित्य जगत अर जिंदगी री वास्तविकता नैं उजागर करै।

पण अठै ओ सवाल भी महताऊ है 'क पत्रिका फगत पत्रिका नी होवै, बल्कि उण रै लारै अेक द्रस्टि होवै, विजन होवै अर रचनावां रो मोल-तोल

करण री साफ-सुथरी निजर होवै । इण सूं आ बात साफ होवै 'क पत्रिकावां रै मांय रचनावा गे सकलण करणो नी है । सम्पादक री आपरी अेक दीठ होवै अर उण दीठ रै जरियै रचनावां छंटीजै । जको सम्पादक रचना माथै आपरी निजर राखसी, बो जरूर अेक स्रेष्ठ अर स्तरीय रचना नै आपरी पत्रिका रै जगां देसी । पछै पत्रिका रै साथै कीं आर्थिक सकट रा प्रस्न भी विचार करणै लायक है । पत्रिका फगत व्यक्तिगत प्रयास सूं इ निकळ रैयी है या किणी संस्थान सूं । क्यूं 'क पत्रिका री रूप-रंग अर आकार भी आपरो अेक मायनो राखै । इण रै साथै ई साथै पत्रिका रो मासिक, दुमाही, तिमाही अर सालना होणो भी उण री अेक सीमा नै सामै रारवै । जे पत्रिका रै साथै अे सगळी बातां सोचां तो उण सूं जुड़योड़ो पाठक वर्ग भी, पत्रिका रै मूल्यांकन में आपरो हिस्सो राखै ।

इण सदर्भ मे जे राजस्थानी पत्रिकावां बाबत बात करां तो इयां लागै 'क घणकरी पत्रिकावा उत्साही लेखका रै प्रयास सूं छपीजी इण वास्तै बै थोड़ा दिन निकळ 'र बद हुयगी । की अेड़ी पत्रिकावा ही जकी लगोलग दस-पन्द्रै बरसां ताई निकली पण आ पत्रिकावां रै लारै रचनावां रै सकलन री द्रस्टि रैयी अर उणा रै माय नूवै-पुराणै सगळै ढग री रचनावा धड़ल्लै सूं छपी । यां रो मूल उद्देस भी राजस्थानी भासा री रचनावा नै प्रोत्साहन देवणो हो। सन् १९५३-५४ रै अेड़े-छेड़े 'मरुवाणी' अर 'ओळमो' पत्रिकावा निकळी । आ मे रूप-सज्जा अर आकार रो नूवोपणं हो तो रचनावा गे विविधता भी । अे साहित्यिक पत्रिकावा ही । आ पत्रिकावा मे जठै मौलिक रचनावा छपती बठै दूजी भासावा रा अनुवाद भी छप्या । कविता नै लेय'र विसेसाक भी निकळया । पण यां विसेसाकां रै लारै कोई दीठ नी ही इण वास्तै हल्की-भारी, चोखी-बुरी सगळी भात री रचनावा सू थोड़ो आकार नै बढा देवणो ही विसेसाक री मूल योजना रैवती । पत्रिकावा रै अभाव मे राजस्थानी रा सगळा लिखारा आ मे रचना भेजता अर वा मोड़ी वेगी अठै छप ज्यावती । आज अे दोनू पत्रिकावा बद है पण आ पत्रिकावा नै बरोबर निकाळण रै लारै आ रा सम्पादका री मेंणत अर साहस नै भुलावणो किणी भात उचित नी ।

आ पत्रिकावा रै पछै राजस्थानी भासा मे 'जाणकारी' (जोधपुर) जलम भोम (बीकानेर) हरावळ (जोधपुर) राजस्थानी (रणसीसर) नैणसी(कलकत्ता) दीठ (रणसीसर) चम्बल (कोटा) राजस्थली (श्रीडूगरगढ) जागती जोत (बीकानेर) हेलो (बीकानेर) ओळखाण (जोधपुर) कचनार (अता) इसरलाट (जयपुर) अप-रच (जोधपुर) आगूंच (जोधपुर) बतलावण (पिलानी) बिणजारो (पिलानी] गोरबद [लक्ष्मणगढ] इत्याद साहित्यिक पत्रिकावा निकळी । आ रै माय

'राजस्थली' नैं छोड़ 'र बाकी पत्रिकावा बंद हुयगी। बिणजारो' अर 'गोरबंद' सालाना पत्रिका है जकी अब भी चालू है। पत्रिकावां रै बद हुवण रो मूल कारण आर्थिक संकट रैयो। 'हरावल' पत्रिका रो साहित्यिक द्रस्टि सूं अेक महताऊ स्थान रैयो है। इण पत्रिका में समकालीन सिरजण री चेतना रा विविध रूप कहाणी, कविता अर दूजी विधावां में दीसया अर पत्रिका पाठकां रै माय ई आपरी ठावी ठौड बणाई। 'हरावल' मे जठै स्रेष्ठ रचनावा छपी वठै ही आलोचनात्मक लेख अर समीक्षा रो भी अेक सुतंतर स्तम्भ रैयो। समकालीन स्रेष्ठ कृतियां री विस्तृत समीक्षा 'हरावल' रै माय छपी अर वै रचनावा चर्चित होयी 'हरावल' रै माध्यम सू की नूंवा लेखक भी सामै आया तो की साहित्यिक सवाला नैं लेय 'र 'हरावल' आपरै ढग सूं चर्चा भी छेडी। 'हरावल' रा सुरू रा अंका मे जरूर द्रस्टि रो अभाव हो पण आखरी अंका में 'हरावल' आपरी ओळखाण रो अेक रूप बणा लियो हो।

नूंवी कविता री सबळी ओळखाण रो तिमाही छापो "राजस्थानी" अेक (सं. तेजसिंह जोधा) निकळ्यो। ओ फगत अेक ई अंक छप्यो पण इण रो साहित्यिक दृष्टि सूं घणो चर्चित रूप रैयो। इण पत्रिका रै लारै अेक दृष्टि ही। आजादी रै पछै राजस्थानी कविता मे कथ्य अर सिल्प री दृष्टि सू जको बदलाव आयो, उणनै पाठकां रै सामै राखणो अर नूंवी कविता री ओळखाण कराणी, इण अंक री खास बात ही। इण अंक रै माय गोरधन सिंह सेखावत, पारस अरोड़ा, ओंकार पारीक, मणि मधुकर अर तेजसिंह जोधा की कुल २४ कवितावा प्रकासित होयी। इण रै माय ओंकार पारीक री नैनी कवितावा भी ही तो तेजसिंह जोधा री "ई गाव मे कठैई की व्हैगो,, जैडी लम्बी कविता भी। म्हारै खयाल सूं राजस्थानी री नूंवी कविता री सबळी ओळखाण आं कवितावा में है जकी समकालीन चेतना अर परिवेस सूं घणी जुडयोड़ी है। तेजसिंह जोधा रो सम्पादकीय कविता अर नूवी कविता बाबत की अैडा सवाल उठाया जका, अेक विवाद रो रूप लियो अर राजस्थानी लेखन रै माय गैरी हलचल माचगी। साहित्यिक दृष्टि सू 'राजस्थानी अेक' रो आज भी महताऊ स्थान है। इणी भात तेजसिंह जोधा 'दीठ' (दुमाही) पत्रिका री सुरूआत करी अर उण रा भी च्यार-पांच अंक निकल्या। 'दीठ' छोटी पत्रिका होता थका भी साव अेक दीठ नैं लेय'र चालण आळी ही। इण वास्तै इण रै अंका मे जकी कवितावा अर कहाण्यां छपी, वै आज राजस्थानी री चर्चित रचनावा है। 'दीठ' मे कन्हैयालाल सेठिया, विजयदान देथा, नन्द भारद्वाज, मणि मधुकर, गोरधन सिंह सेखावत, पारस अरोड़ा री चुनीदा, रचनावा छपी। अै दो पत्रिकावां अैडी ही जिण सूं राजस्थानी लेखन रै चिंतन रा की नूंवां आयाम सामै आया. पण अै पत्रिकावां

पर फूंक तमासा देखण माळो गत में ही, इण वास्तै दो तीन अंकां पछै बन्द हुयगी। आं दोन्यूं पत्रिकावा रै सन्दर्भ में आ बात भी निरवै ई अंगेजणी पड़सी क तेजसिंह जोधा मे सम्पादन री आपरी मौलिक द्रस्टि रैयो है इण रै साथै ई साथै समकालीन साहित्य नै पिछाणण सारू गैरी समझ भी।

साहित्यिक पत्रिकावा में अपरच, राजस्थली अर जागती जोत रो भी अेक महताऊ स्थान रैयो है। पारस अरोड़ा रै सम्पादन में 'अपरंच' भी अेक व्यक्तिगत प्रयास रैयो, इण वास्तै उणा रा सात-आठ अंक निकळ्या। 'अपरंच' साफ-सुथरी अर चुनीदा रचनावां री सैंठी पत्रिका हो। समकालीन लेखन रो ताजा अर सामाजिक सरोकार सूं जुड्योड़ी रचनावां ई पत्रिका में छपी। 'अपरंच' रो मूल स्वर वामपथी निजर सूं देस अर समाज री समस्यावां नै जागरूक होयर देखणो हो। 'अपरच' री की कवितावां घणी सरावण जोग रैयी है। साहित्यिक पत्रिकावा में 'राजस्थली' (श्रीडूंगरगढ) री न्यारी निरवाळी पिछाण है। आ पत्रिका लारला सात बरसां सूं तिमाही रूप मे छप रैयी है। ई पत्रिका रै लारै राजस्थानी साहित्य अर भासा री रचनात्मक खिमता नै लगोलग बधावण रो मिसन रैयो है। नूंवै लेखका री प्रतिभा नै सामै ल्यावण अर टाळवी रचनावां नै विसेसाक रै रूप मे छापण में 'राजस्थली' रो महताऊ काम रैयो है। छोटी पत्रिका होता थका भी 'राजस्थली' रा 'राजस्थानी लघु कथा, 'आठवें दसक री प्रगतिसील कविता 'पावंडा कहाणी रा, अर 'राजस्थानी नाटक' विसेसाक सरावण जोग है। समकालीन लेखन री चेतना सू जुड़योड़ा नूंवा लिखारा री तलास 'राजस्थली' रो अेक उद्देस्य रैयो है इण रै अलावा राजस्थानी आदोलण री गत नै ई थोड़ी-घणी चेतावण मे 'राजस्थली' आगै रैयी है।

'जागती जोत' पैला सगम री अर पछै अकादमी री मासिक पत्रिका रैयो। आज आ बन्द है। सरकारी ढाचै अर विधान सूं सचालित अकादमी री रीति-नीति रै मुजब 'जागती-जोत' रा सम्पादक बदळता रैया अर इण वास्तै राजस्थानी लेखन सारू आ पत्रिका आपरी पिछाण नी बणा सकी। पैलां आ कदै तिमाही तो कदै छमाही छपी। अप्रेल ७७ मे 'जागती जोत' पैलीबार तेजसिंह जोधा रै सम्पादन मे मासिक बणी अर उणां रै सम्पादन मे इण रा ६ अक निकल्या। नूंवै अर पुराणै लेखका नै छापता थका उणा री द्रस्टि स्रेस्ठ रचनावा माथै रैयी। तेजसिंह जोधा रै सम्पादन री अेक विसेसता आ है, क रचनावां नै छाटण मे वै सदा ई लिखारा री बजाय रचना नै महत्त्व दियो। ओ ई कारण है क, 'जागती जोत' रै छः अंका मे नूंवी कविता गीत अर निबन्ध री दीठ सूं टाळवी रचनावा छपी। 'जागती जोत' मे छपी बरसां रा डीगोड़ा डूंगर लाधिया (नारायणसिंह भाटी) गळो जिसी गळी (सावर दइया) खुद सू खुद री बाता

(गोरधन सिंह सेखावत) खुलती गांठां (पारस अरोड़ा) बापड़ो कसाई (जहूर खां-मेहर) इत्याद रचनावा रो साहित्यिक द्रस्टि सूं आपरो महत्व रै'यो है। पण छ: अंका रै पछै जागती-जोत फेरूं अेक ढर्रे री पत्रिका बणगी। उण नैं नी तो कोई द्रष्टिवान सम्पादक मिल्यो अर नी टाळवी रचनावा नैं सोधण आळी दीठ।

बिणजारो (पिलानी) गोरबद (लक्ष्मणगढ) अर आगूंच (जोधपुर) जैड़ी पत्रिकावां मे भी टाळवी रचनावां छपी। बिणजारो अर गोरबंद सालाना पत्रिका है।

राजस्थानी री पत्रिकावा मे 'माणक' (जोधपुर) रो भी आपरो महत्व है। ओ पारिवारिक छापो है जिण रो दृस्टिकोण व्यावसायिक है। राजस्थानी रै प्रचार-प्रसार अर पाठक त्यार करणै मे माणक रो जबरदस्त योगदान गिणीजै। सुरू मे इण रा सम्पादक तेजसिंह जोधा रै'या। उण बगत कहाणी अर कविता रै क्षेत्र मे भी टालवी रचनावा सामैं आई। साहितकारां री बतल अर आम-आदमी नैं पत्रिका सूं जोडण मे 'माणक' री सेवा सरावण जोग है। राजस्थानी पत्रि-कावां में व्यावसायिक अर गैर व्यावसायिक जैंडो विभाजन तो नी है। सगळी पत्रिकावा साहित्यिक उद्देश्य नै लेय'र चाली इण वास्ते बरोबर नी निकल सकी।

आज राजस्थानी पत्रिकावा रो अभाव लिखारा रै सामै गरो संकट है। जद ताईं दृस्टिवान अर समर्थ सम्पादका सूं साहित्यिक पत्रिकावा री सुरूआत नी होवैला तद तांई रचनात्मक लेखन नैं नी तो दिसा मिल सकै अर नी गति ई। दो तीन पत्रिकावा जैड़ीं भी हालत मे निकल रै'यी है, आ गरव करणैं जोग स्थिति है।

▭

संस्कृति : मानखे रो संघर्ष

भंवर भादानी

'संस्कृति' सबद री सीमावा घणी व्यापक अर अरथ सम्पन्न है। इण सबद रो इतियास आदमी रै सागै-सागै पनप्यो है। मानखै री गतिविधियां रै सागै सागै इण मे निखार आतो रैयो अर औ अेक सरूप धारतो रैयो है। इण रो जित्तो लाम्बो इतियास है उत्तो ई विवादां रै घेरे मे अळूझ्योड़ो रैयो है।

घणा विद्वान सस्कृति सबद नै अरथ रै अेक खास घेरे मे बाधण री बिध करता रैया है। उणा रै मुताबिक संस्कृति, बौद्धिकता अर पारलौकीय मूल्यां सूं जुड़्योडो अेक सबद है। इण मे धर्म, दर्शन, साहित्य अर कला जिसा सुरुचिपूर्ण विषय भणीजै। डॉ० गोविन्दचन्द्र पाण्डे रो कैणो है कै-"संस्कृति तत्वत. अेक मूल्य-व्यवस्था है जिणरो ग्यान सकेत-गोचर आत्मबोध या आदर्श-बोध रै विवेचन सूं हुवै।" सस्कृति रा मानीता विद्वान संस्कृति सबद नै आदर्श-बोध री भणाई ताई ई अटकायोड़ो राखणो चावै। अै लोग संस्कृति नै 'सुरुचि', पारलौकीय अर आदर्श-बोध रै मूल्यां री सीमावां में रोड़'र ईण रै अरथ विस्तार नै की छोटो करण रो जतन करता रैया है। अै विद्वान इतियास में इणी तरै री संस्कृति रै अध्ययन माथै जोर देवै इण सूं जुदा दूजी चीज उणा खातर बेमानी है। बात खाली आ ई नी है कै संस्कृति में इण विषया रो अध्ययन नी हुणो चाईजै पण खास बात आ है कै संस्कृति मे खाली इणी विषया रो

घेरे में ही फंसियोड़ो रैयो अर छोटो सो तबको बुर्जुआ अर सामन्ती मूल्यां रो घालमेल बणग्यो । अं मूल्य जिका अेक समै प्रगतिशील हा अबै होळै-होळै विकृत हुणा सरू हुयग्या अर समाज में अेक मूल्यहीनता री इस्थिति पैदा करदी। आज मूल्यहीनता ही समाज रै अेक ऊपरी तबकै रा मूल्य बणगया है । च्यारूं-मेर आपाधापी अर 'अेनाकी' है । दूजै कांनी समाज रै अेक बोत बड़े तबके रै मूल्या अर चेतना रो निर्धारण भौतिक इस्थितियां रै पेटे सूं हुय रैयो है ।

आज समाज में दो इस्थितिया आंमी-सांमी है-अेक मूल्यहीनता अर दूजी उभरते मूल्यां री । पैलड़ी इस्थिति पूंजीवादी अर साम्राज्यवादी सस्कृति री हामी है। अर दूजी आपरी जमीन, आपरी मिट्टी री संस्कृति अर जनवादी संस्कृति री हामी है । आ संस्कृति समाज रै बडे तबके री भौतिक इस्थितिया सूं पनप रैयी है इण खातर स्वस्थ अर साफ सुथरी है । आ बात भी साफ है कै दोनूं संस्कृतियां संघर्ष री स्थिति में है ।

राजस्थान : चेतना रा धरातल

राजस्थान भूगोल री दीठ सूं अेक नी है । उण री भोगौलिक इस्थिति अेक दूजै क्षेत्र सूं मोकळी भिन्न है । अरावली रो आथूणो, उत्तरी–आथूण रेतीले धोरा सूं सावं ई न्यारो है । पैलो उपजाऊ तो दूजो तपती रेत रो महासागर। इण मोटी भिन्नता रै अलावा स्थानीय स्तर माथै भी घणो भेद है । भूगोल री पीठ सूं ई नी आदमियां रै पहरावै, बोली अर रूपरंग में भी घणो फरक है । धनवाना रै रैवण रै तरीकै, उण रै खान-पान रै स्तर, पहरावै अर गरीब रै जीवण स्तर मे अेक मोकळो आन्तरो है । ओ आन्तरो इत्तो परभावी है कै जीवण रै दूजै क्षेत्रा नै भी गैराई सूं परभावित करै ।

भोगौलिक भिन्नता रो आन्तरो जित्तो साफ है उत्तो ई सांस्कृतिक अळगाव आदमी–आदमी रै बिच्चे मुखर है सास्कृतिक भिन्नता वर्ग-सापेक्ष है अर आ सीवा रेखा मोकळी साफ अर गैरी है । आ भिन्नता राजस्थान रै घणखरा क्षेत्रा में साफ निंजर आवै । आखै प्रान्त, सहर अर गांव री चेतना रै बिच्चे मोकळी भिन्नता है । चेतना रा घणा स्तर निजर आवै । इसा घणा ई सबूत दीया जा सकै है जिकां सूं प्रान्त रा लोगां रै सास्कृतिक धरातल रो गुमान हुय सकै । अरावली रै अंचल मे बसियोडे उदयपुर सहर री महिमा ही न्यारी है । महाराणावा रा आलीशान मैहल स्थापत्य री दीठ सूं आपरो अेक अलैदो ठसको राखै । राजस्थान साहित्य अकादमी अर जग-विख्यात लोक कला मण्डल रा दफ्तर जठै प्रान्तरा जाण्या-मान्या साहित्यकारा रो सगम हुवै । लोक कला रा पद्मश्री विद्वान लोक-

भी महाग्रन्थ है वे सगळा इण छोटे से तबके री ही रचनावा है। इण सूं इण-ग्रन्था री महत्तियत कम नी हुवै पण इण रै साथै-साथै आ बात भी सोळै आना खरी है कै अै महाग्रन्थ आम आदमी अर उण रै जीवण-मूल्यां रै न्यारा-न्यारा पखां माथै किणी तरै री रोसनी नी नांखै। इण खातर दूजै पख री सांस्कृतिक जातरा नै जाणण खातर आखै मानखै री भौतिक गतिविधियां रो अध्ययन घणो जरूरी है।

अठै आ बात भी जाणणी घणी जरूरी है कै इण महाग्रन्थां री प्रकृति धार्मिक है इण खातर अै इतियास लेखन सारू 'सेक्यूलर' साधन नीं बण पावै। जद अै इतियास री धारा नी दरसाय सकै तो संस्कृति री धारा खातर भी अै ग्रन्थ अेकपखी है।

संस्कृति : न्यारा-न्यारा सरुप

ऊपर री बातां सूं अेक बात साफ हुय जावै कै उत्पादन करणआळै अर बेसी उत्पादन नै हड़पणआळै री संस्कृति अर सांस्कृतिक-मूल्य न्यारा-न्यारा हुवै। दो साव ई न्यारी मूल्य-व्यवस्थावां पनपै। मूल अन्तरविरोध इणी मूल्यां रै बिच्चै हुवै अर संघर्ष रा बिन्दु भी घणा 'शार्प' हुवै। इण संघर्ष में अेक नै जीवण मिळै सांस मिळै तो दूजै नै पतन अर मृत्यु।

संस्कृति परिवर्तनगामी है। समाज रै हर दौर में इण रो वस्तु-तत्व बदळ जावै पण अेक खास बात संस्कृति री निरन्तरता री ही जिकी अंग्रेजां रै आणै तक जारी रही। दास अर सामन्ती-व्यवस्था में दास अर करसे रा मूल्य मालिक अर सामन्त रै मूल्यां सूं साव ई अळगा हा। अेक मूल्य-व्यवस्था बोदी पड़ती जांवती दूजी उण री स्यान लेंवती जाती। इणी तरै साम्राज्यवादी संस्कृति रै खिलाफ अलग-अलग स्तर माथै संघर्ष हुयो। उण समै अेक नूंई राष्ट्रीय संस्कृति पनपी। इण सस्कृति में भी चेतना रा भिन्न स्तर हा। कैवण रो अरथ ओ है कै सस्कृति री अेक विकास-जातरा रैयी है अर उण में निरन्तरता रैयी है।

देश री आजादी रै बाद अेक नूंवी संस्कृति पनपी। इण संस्कृति सूं पनप्या मूल्य सामन्ती मूल्यां रा थोडी हद ताई विरोधी हा पण इणरै साथै-साथै आ बात भी सही है कै अै मूल्य समाज रै समूचै तबकै रा मूल्य नी हा। अै सांस्कृतिक मूल्य प्रगतिशील हा। पण इणां री सामन्ती मूल्यां सूं समझौतो घणो घातक सिध हुयो। इण रो नतीजो ओ हुयो कै समाज रो अेक बोत बडो तबको तो सामन्ती मूल्यां रै कला रा न्यारा-न्यारा सरूप दरसावै। दूजै कांनी भील है

जिका आपरी 'प्रिमिटिव' इस्थितिया सूं ई आगैं नीं निकल सक्या है।

जयपुर रो तो ठसको अर ठमक ई न्यारी है। इण सहर नैं प्रान्त री राजधानी रो ई खाली रुतबो नी है पण इण री अहमियत घणा दूजा सास्कृतिक कारणां सूं भी है। अेक कांनी सवाई जयसिंह री विग्यान बुद्धि नैं दरसावती जन्तर-मन्तर प्रयोगशाला है अर प्रान्त री भाग्य विधात्री विधानसभा अर इण रैं कर्णधारां रा पड़ाव है। सेहर में अेक विश्वविद्यालय अर घणा ई अकादमिक दफ्तर हैं। घणा ई पद्मश्री शिल्पी, कलाकार अर साहित्यकार है। विधानसभा रो गैलेरी अर सिविल लाईन रैं सत्ता रैं गळियारां में जिकां रैं पांवडा रा निशान इण बात रा सबूत है कै उणा रा हाथ जगन्नाथ है। अेक कांनी सत्ता रो चौगान अर उण तक पूंचण रा मोकळा गळियारा है तो दूजै कानी मृगमरिचिका है, दूर फैलियोड़ी रेत, पाणी नैं तरसता कुआ अर खाली पेट री करोड़ - कूंडिया है।

सास्कृतिक अेकता रो जठै ताईं सवाल है। राजस्थान रैं लोगा रा न्यारा-न्यारा चेतना रा स्तर है। चेतना रो स्तर वस्तुगत इस्थितियां तय सूं हुवै। राजस्थान औद्योगिकरण री दौड़ सूं घणो पिछड़्योड़ो है। इण खातर लोगां रा मूल्य अन्धविश्वासां अर बोदी व्यवस्था सूं परभावित है। जनवादी संस्कृति री थरपणा सारू सामन्ती अर मूल्यहीनता री इस्थिति रैं खिलाफ लम्बी लडाई री जरूरत है।

▭

फागरा गीतां रौ रूपालौ रूप

सौभाग्य सिंह शेखावत

होळी हिन्दू समाज रा चार मोटा तिंवारां मे सिरै तिंवार गिणीजै । सिरै इण कारण कै होळी च्यारू वरण रा मिनख मनावै । छूत-छात नै आभड़-भीट रा, नेम धम रा पंजां मे काठो कसियौ-फसियौ हिन्दू समाज होळी माथै खुली छूट पावै । जात-पात, न्यूतौ-न्यात आखा विधि बधाणा नै झाटक नै आपसरी मे अक-मेक बणनै होळी रौ प्रव मनावै । हिन्दू समाज री अकता रौ नमूनौ दिखावै अर जात-न्यात, गोत-ग्वाड रा फिड़का–फाटां नै न्यारा राख नै होळी रै मौकै अेको जतावै । होळी रै दिन नी भेदभाव रा भूत रौ भै डरपा सकै नी आभड़ भीट आपरौ अड़ंगो अड़ा सकै । सब प्रकार री खळ खळी खुल्ली छूट समाज नै होळी माथै मिळै । इण सूं राखी, दिवाळी नै दसरावा सूं होळी री महती महत्ता मानीजै । च्यारूं वरणां रै हेळ मेळ, मिलणा मिलाप री हबोळ होळी रो तिंवार भणीजै ।

होळी मनावण रै लारै तीन भात री न्यारी न्यारी मानतावां कहीजै । पैली तो खेती रो ज्याग । भारत रै अस्सी सैकडा खेती–खड़ मानखां रौ खेती रै बळ निभाव हुवै । होळी रै मास फागण में नूवौ धान पाक नै त्यार हुवै । लोग बाग गोहूँ री दंणिया झळ मे सेक नै होळा खावै । नूंवौ धान जाड़ तळै बैरी ऊभौ बाड़ तळै । गोहूं, जो, चिणां, सरसों सूं अखार भखार भर जावै जणां मिनख बैरी सूं कांई डरै । कोठळी मे बाजरी तो पछै कुण करै हाजरी । होळां रै

कारण ईज कई पिंडत होळी री उतपत मानै । बीजी धारणा आ मानीजै के होळी रै दिन राखसराज हिरणाकुस आपरा पाटवी पूत पहलाद नैं आपरी बरपायोड़ी बैन होळीका री गोद मे बैसाण नै पहलाद नैं बाळ जाळ नैं कूचो काटणो चायो। पण आग में न बळवाली होळका रा तो होळा व्है गया अर पहलाद सोळवां सोना री तरै तापो तपायो जीवतो जागतो बच आयो। जद सूं होळका रा तिवार रो चलण हुवो बतावै । कवै कै होळका रै बीजे दिन पहलाद नैं ढूंढण रै कारण ईज ढूंढा राखस नै ढूंढ रो रिवाज पडियो। राजस्थान में पैळी होळी नै आवती होळी रै बीच जनमियोड़ा डावड़ां नै ढूंढण नै जंवार रा फूलिया नैं पतासा बाटण री चाळी सरू हुवो। पण कई विद्वान मानै के होळी बसत रो आगीवाण तिवार। बसंत कामदेव री जनम रुत। कामदेव सगळी जीवा-जूण रै जनम रो कारण। इण वास्तै बसत रै तिवार रै रूप मे होळी रो गौरव आकीजै । जितरी मूंडकी उतरीईज बातां। पण सगळा तिवारां रो राजवी तिवार होळी। तिवारा री ताज होळी फागण रै फबीले रंगीले मास मे आवै । फागण मे सीत-सियाळा रो रयो सयो दाब ताव मिट जावै । दा'वा सू दाझियोड़ा, पाला सूं पैमाळ हुयोड़ा, सीत री मायवी सूं संतायोड़ा, पतझड़ रूप पांखडा सूं नागा पेड़ पौधा में नूंवो जीव आवै, रसबापरै, विपदा रो काळो कटै। कूपला चालै, पान-पत्ता निकळै । गुल्ला फूटै। छागण सूखै नैं नूंवी पांगर पसरै । गडा रूप गीला, सम्पा रूप सलकती समसेरां, मेह रूप मद वहाता मैंगल सगला पराजय रै पैंडे लाग जावै नै, सियाला री सरजोरी गैल लागै । पद पावड़िया पर बैठा पदवीदार पछाड़ खावै नै पतझड़ पागरण लागै । जुल्मा सू दबियोड़ी बनसपती रा भाग जागै । काची काची कूंपळा ठूंठां री डाळियां माथै पंखेरुवांरी रीत फुदकती रमती लखावै । कूंपळा पवन रै भूलै झूमै । मीठी महकती सौरभ जाणै कूंपल कन्हैया नै लोरी देय देय नै लडावै । आखी रोही हरियाळी सूं हरी भरी व्है जावै जांणी मकरधुज री जम्म गांठ मनावै कै सीत सायदा री पराजय पर उमावै । ठाठ रो ठरको कै सेळी रो सळको कै पद रो पळको मिटण रै उछाव मे नाचै गावै । मगळ धमळ करै । सुख री सोरी सांस लेवै नै बसत रुत नैं लाख लाख दाद देवै ।

फागण रसीळो मास । फाग अनुराग रो मास । अबीर गुलाल रो मास । लूहर घूमर रो मास । गीदड़ गैहर रो मास । चंग ढफ रो मास । दड़ी दौटा सौटा रमण रो मास । रंग रो मास, भंग रो मास, मसत रो मास । कोड रो मास, होड़ रो मास । खेल रो मास, मेल रो मास । पछै फागण में मिनख नाचै तो बधती वात कांई तीन तिलोकी रो नाथ कान्हो ईज नाचियो, फाग रमियो, अम्रत री ठोड़ पहूड़ो पियो--

फागण महिनै फाग रमै, गोपणियां रो नाह।
महूड़ा रो मद पीवै, वाह रे साई वाह॥

राजस्थान मे फागण रै मास में मिनख घणो हरखीजै। फागण लागण रै साथ ईज आछा वार नै सुभ सातरो मूहरत जोय नै फागण रो डांडो रोपीजै। गाव रै बीचोबीच ग्वाड़ मे नगारो मेलीजै। पछै गीदड़ घलीजै। घूमर रमीजै। लूहर गायीजै। धमाळां सूं आकास गूंजीजै। चाचर लेयीजै। चंग बजीजै। गीदड़ खेलीजै। फाग रमीजै। गुलाल उडीजै। रग बरसीजै। पिचकारियां छूटीजै। खाल री डोलिया चालीजै। कोरड़ा री मार पडीजै। रंग री रमझोळा उडै। धमाळ गीतां सूं गयण गरणावै। फागण मे फाग रमण नै देई देवता भी राजस्थान मे आवण नै ललचावै। राजस्थान रा रंगीला रसीला मानखा रो भाग सरावै। फागण में मिनखा मे अंड़ी मस्ती मचोळा हबोळा मारण लागै के नीं बूढा नीं ठाढा नीं बाळक नी जवान सैंग झूम-झूम उठै। मसती मे घूम घूम उठै—

काती कुतिया माह बिलाई, फागणपुरख नै चैत लुगाई।

फागण पुरखां रो प्यारो ममतीलो तिंवार। फागण होळी रो महिनो। होळी बसत रो लाडली। फूलां री झोळी भरनै बसंत होळी रा लाड करै। खेत वयार दड़ो रडी-रोही सैंग ठोड फूलां री महक। होळी रा उछाव में राजस्थानी डावड़ियां नाच रै साथ आपरा सुरीला स्वरां में गावती थकी खेलै। झिरमटियो रमै—

होळी आयी अे फूलां री झोळी झिरमटियो लो
ओ कुण खेलै अे केसरिया बागै झिरमटियो लो

राजस्थानी जूना गद्य मे अेक ठोड़ फागण मास रा बरणन में लिखियो है—"फाग खेलीजै छै। नाचीजै छै। हास विनोद कीजै छै। हास रस हुय नै रह्यो छै। फागोटा रा मुख सवाद लीजै छै। घर घर बसंत राग हुलरावीजै।" फागण मे लाज री पाज नै आजाद री मेढ नै भाग-छांग ने फागोटां गावण री छूट मिळै। लोगबाग फागोटा रै मिस आपरा मन री मैल, कळुपता रा कोयला चोड़े धाड़े मन माय सू काढ़ नै बारै बगाय नै निरमळ व्है जावै।

फागण मे मन मोर री ज्यूं नाचै। कोयला री ज्यू गावै। छैला छबीला छछोहा छोटा फालरा री ज्यूं मस्तायोडा फिरै। घर घर मे राग रंग चग री घूम मंडै। डफ, बीणा, नगाडा रा सुर गूंजै। महाकवि प्रथीराज री वाणी में फागण रै फाग रो वरण देखीजे—

बीणा डफ महुयरि वंस बजाय्रे, होरी करि मुख पंचमराग।
तरणी तरूण विरहीजण दुतरणि, फागुण घरि घरि खेलै फाग ॥

तरणां री तरै इज तरुणियां भी फागण में फागणियां चोर ओढ़ नै लूहर गावे। फागणिया री फरमास करती थकी कहे–

फागण आयो रसिया फागणियो रंगाय दो
पीळिया में रम रहियै होळी, रम रहियै होळी
फागणियो रंगाई दो।

ऊन्हाळा मे पोमचा नै सावण में लहरिया माथै मचळबा वाळी गोरी फागण में बिना फागणियै फीकी लागे।

आपरी जोडी रा नै जिद माड नै कंवै–
ऊन्हाळा रा पोमचा, चौमासा रा लहरिया
फागण रा फागणिया रगावो म्हारी जोड़ी रा

रगां री रसली रमणिया जद बणठण नै फागण में नीसरै जद उरबसी री भतीज के बूंदी री तीज कै आभारी बीज-सी निजर आवै। मुठ काचरा-सी मोटी आंख कै सतरा सो फाक। हाथ री आंगल्या कै मूंग री फल्यां, अंड़ी कामणियां भामणियां फनफनाट करती, तेल फुलैल सोधा री सोरम बिखेरती हाथ में कोरडा, पिचकारिया, चमडा री डोलियां लिया रसीला कबीला रा देवरां पर पिचकारां री मार करै जद कितराई पाणीदार मोटियारां रा पाणी उतार नै धूळ धाणी कर नाखै। मरद मोटियार पग धूजाय नै पाछला पगां नाठै। छाती धकै चढ़ियोड़ा छैला री छोत उतार नाखै। पाणी री मार सू पीळा मुख करनोखै। उण समै गुलाल नै अबीर रा गोटां सू सूरज धुंधळो सो लखावै जाणै धरती रा पूतां सपूता री तोल मे लजातुर व्है नै मुख लुकावै।

फागण मे देवर–भोजाया रो फाग जंग तो अनूठो सो इज रंग जमावै–

मच्या रग रा कीच छै, आंगण आगण फाग।
तरूणाई रो व्याह छै, चमक्यो भाग सुहाग ॥

पण हठीलो देवर तो भाभी रो लाडलो। पिचकारी भर नै चोर पर बावै जद चीर पाणी री मार सू लीर लीर व्है जावै। पछै आप रै वार री मरदानगी दिखावतो थको कंवै--

होली है पोळी खुली, संभळो भाभी आज।
खेल बताऊ रंग सू., रण साका रा साज ॥

पण भावज भी उण समै बाघ जायो बाघणी-सी बण जावै-

देवर बेटी बाघ री, करूं करारा वार।
भाग न जाज्यो सूरमां, पिचकारा री मार॥

अैड़ी फाग राजस्थान में रमीजै, जिण रै सुरीला कंठ सुरां रा बोल रसिया रावरां रै भार पार कढीजै-

अे गरबीली गोरड़ी, खेल रयीछै फाग।
उड़्यो काळजां चीरतो, इण रो मारू राग॥

आगण आंगण में फाग, ग्वाड़ ग्वाड़ में घूमर, पोळ पोळ में गैहर नै कंठ कंठ मे धमाल। परदेशी पीव री परणेतण सुहाग भाग रा धणी छोगाळा छैला नै फाग रमण रो न्यूतो देवती-सी कैवै-

गामां गैहर गेह, आंनक बजत अपार।
त्यां आगळ गैहर रमै, छोगाळां सरदार॥

छोगळा सरदार, सायीनां संग रा।
ज्यारै करण बणाव, जुदा रंग रंग रा॥

सिर बादळ तुरराह, टंकण कोई सेलियां।
होडोहड़ रगियाह, हाथां बिच भेलियां॥

बंवळी, घोवड़ा, गंगेरण नै बीजी भांत रा रंग रंगीली धारियां रा डंडियां, नागी तलवारां, मूसल आद हाथा में लिया जद ग्वाड़ में नगारा रै च्यारूंमेर चकर घालता, भांत भांत रा पहरान पहरियां पुरस घूमर रमै अर घूमर गीत रो अलाप करै जद मसती रो महराण भळकता सो लागै-

म्हारी घूमर छै नखराळी माय, घूमर रमबा जाऊं अे माय।
म्हनैं घूमर रमती नैं लाडूड़ो लाद्यो म्हारी माय, घूमर रमबा जाऊ अे॥
म्हनैं सेखाणां री बोली प्यारी लागै अे माय, घूमर रमबा जाऊ अे।

इण भांत घूमर गरणाती गमक रो नखरो किण नर नार रै हिया में नेह रो नाळो नीं बहा दे।

गळी गळी में गीदड़ नाचणिया रा टोळा नै चंग माथै धमाळ री धमरोळ मचै फागण में-

वीणा डफ महुयरि वंस बजाम्रे, होरो करि मुख पंचमराग।
तरणी तरूण विरहीजण दुतरणि, फागुण धरि धरि खेलै फाग॥

तरुणां री तरै इज तरुणियां भी फागण में फागणियां चीर ओढ़ नै लूहर गावे। फागणिया री फरमास करती थकी कहे–

फागण आयो रसिया फागणियो रंगाय दो
पोळिया में रम रहियै होळी, रम रहियै होळी
फागणियो रंगाई दो।

ऊन्हाळा में पोमचा नै सावण में लहरिया माथै मचळवा वाळी गोरी फागण में बिना फागणियै फीको लागै।

ग्रापरी जोड़ी रा नै जिद माड नै कैवै–
ऊन्हाळा रा पोमचा, चौमासा रा लहरिया
फागण रा फागणिया रगावो म्हारी जोड़ी रा

रगा री रसली रमणियां जद बणठण नै फागण में नीसरै जद उरवसी री भतीज के बूंदी री तीज कै ग्राभारी बीज-सी निजर ग्रावै। मुठ काचरा-सी मोटी ग्राख के सतरा सी फाक। हाथ री ग्रांगल्या कै मूंग री फल्यां, अेड़ी कामणियां भामणिया फनफनाट करती, तेल फुलैल सोधा री सोरम बिखेरती हाथ में कोरड़ा, पिचकारिया, चमड़ा री डोलियां लिया रसीला कबीला रा देवरां पर पिचकारा री मार करै जद कितराई पाणीदार मोटियारां रा पाणी उतार नै धूळ धाणी कर नाखै। मरद मोटियार पग धूजाय नै पाछला पगां नाठै। छाती धकै चढ़ियोडा छैलां री छोल उतार नाखै। पाणी री मार सू पीळा मुख करनाखै। उण समै गुलाल नै अबीर रा गोटां सू सूरज धुंधळो सो लखावै जाणै धरती रा पूतां सपूतां री तोल मे लजातुर व्है नै मुख लुखावै।

फागण मे देवर–भोजाया रो फाग जंग तो ग्रनूठो सो इज रंग जमावै–

मच्या रग रा कीच छै, आंगण ग्रागण फाग।
तरुणाई रो ब्याह छै, चमक्यो भाग सुहाग॥

पण हठीलो देवर तो भाभी रो लाडलो। पिचकारी भर नै चीर पर बावै जद चीर पाणी री मार सूं लीर लीर व्है जावै। पछै ग्राप रै वार री मरदानगी दिखावतो थको कैवै--

होली है पोळी खुली, संभळो भाभी ग्राज।
खेल बताऊ रंग सू, रण साकां रा साज॥

पण भावज भी उण समै बाघ जायो बाघणी-सी बण जावै-

देवर बेटी बाघ री, करूं करारा वार।
भाग न जाज्यो सूरमा, पिचकारा री मार॥

ऐड़ी फाग राजस्थान में रमीजै, जिण रै सुरीला कंठ सुरां रा बोल रसिया रायवरां रै भार पार कढीजै—

ओ गरबीलो गोरड़ी, खेल रयीछै फाग।
उड़्यो काळजा चीरतो, इण रो माड़ राग॥

आंगण आंगण में फाग, ग्वाड़ ग्वाड़ में घूमर, पोळ पोळ में गैहर नै कंठ कंठ में धमाल। परदेशी पीव री परणेतण सुहाग भाग रा धणी छोगाळा छैला ने फाग रमण रो न्यूतो देवती-सी कवै—

गामां गैहर गेह, आनक बजत अपार।
त्यां आगळ गैहर रमै, छोगाळां सरदार॥

छोगळा सरदार, सायीनां संग रा।
ज्यारै करण बणाव, जुदा रंग रग रा॥

सिर बादळ तुररांह, टंकण कोई सेलियां।
डीडोहड़ रंगियांह, हाथां बिच झेलियां॥

बवळी, धोवड़ा, गंगैरण नै बीजी भांत रा रंग रंगीली घारिया रा डंडियां, नागी तलवारां, मूसल आद हाथां में लिया जद ग्वाड़ में नगारा रै च्यारूंमेर चकर घालता, भांत भांत रा पहरान पहरियां पुरस घूमर रमै अर घूमर गीत रो अलाप करै जद मसती रो महराण झबळकता सो लागै—

म्हारी घूमर छै नखराळी माय, घूमर रमबा जाऊं अे माय।
म्हनै घूमर रमती नै लाडूड़ो लाद्यो म्हारी माय, घूमर रमबा जाऊ अे॥
म्हनै सेखाणां री बोली प्यारी लागै अे माय, घूमर रमबा जाऊ अे।

इण भांत घूमर गरणाती गमक रो नखरो किण नर नार रै हिया में नेह रो नाळो नी बहा दै।

गळी गळी में गींदड़ नाचणिया रा टोळा नै चंग माथै धमाळ री धमरोळ मचै फागण में—

गळियारां में टोळियां, गावै धमळ धमाळ।
जगा जगा धूंसा बजै, गीदड़ पाले बाल।।

रामानुज लक्षमण रै सकती बाण री धमाळ गीत तो राम रावण जुद्ध री याद कराय नै पुराण काल री भावना जगा देवै–

सकती बाण धमाल रो, करै अंबरां चोट।
वीरगाथ रूघनाथ री, मिटै काळजां खोट।।

फागण री धमाळा मे राजस्थान रा मिनखां री आजादी सै प्रेम नै देस गौरव भी मिळै। 'आछो गोरा हटजा' में तो अंग्रेजां नै भरतपुर रा जाटा रै जंग रो जोसीलो बखाण है। जाटा री वीरता नै दृढ़ता री महमा धमाळ मे सुणीजै-

आछो गोरां हट ज्या भरतपुर गढ़ बांको रे किलो बांको।
तूं
मे लडै रे कवर दसरथ का ·· · · · ··· गोरा हटज्या
भरतपुरगढ़ बांको

भरतपुर रै धावे नै घेरै माथै जाटा, गोरां में जिकी भूंडी बिताई वा धमाळ गीता मे होळी रा दिना मे चंगा मे गाय गाय नै घणी दरसाई। राजा दसरथ रा कवर राम लिछमण रै लाका गढरै झगड़ा सी जताई। अंग्रेज तो काई राजस्थान

मे मराठा री रापट रौळा रो लेखो जोखो भी होरी गीतां मे आंकायो। ग्वालेर रा धणी महादाजी पटेल री अजोगती बदगुमानी भी राजस्थानी धमाळ में सुर पायो मुगल बादसाही रा दिनां मे मरेठा राजस्थान री जनता नै घणी मच मचाई। उण री अबकाई होळी री धमाळ मे गाय गाय धमाळिया सुणाई–

ऊंचा राणाजी रा गोखड़ा नीचै पीछोला री पाळ।
पटेल्या माळवी मारयो जासी रे, राजा की बैठक छोड दै
खेती रो धंधो धार पटेल्या माळवी रे
मारयो तो जायलो खेत में रे, कलंगी
झोला खाय पटेल्या माळवी रे

राजस्थानी लोक-समाज कोरा रग-चग मे ईज अलमसत नी रमियो पण देस माथै धाड़ गैरणिया नै भी फागण रा गीतां मे ललकारया, फटकारया, दुतकारया है। महादाजी पटेल रा गीत मे राजस्थान री जाग्रत जनता रो सुर गूंजियो है।

धमाळ गीतां मे राजा प्रजा रै बीच री भेद-भीत, पदरी पाज नै आपसरी री आतरी कोसा आतरै लखावै नै मेळ मिलाप बाथ-घालिया दिखावै-गढ़ म्हारो बीकाणो, होळी आयी राजाजी रै देस, गढ सूं तो होळी माता ऊतरी कोई हाथ कंगण सिर मोड़, अ राजाजी री होळी अर चंग बीकाणै बाजै, चग जोधाणै बाजै, चंग सेखाणै बाजे सबदां मे राजस्थान री ऐकता रा भाव, नै ममता रा पहूप सरसता बिखेरता, खिलता सा लागै। सो, होळी कीच-कादा, गाळ गुलबा, भेद-भमाव रो तिंवार नीं है। ओ तो मिनख मिनख मे हेत-प्रीत सरसावणो मनभावणो सुहावणो तिंवार है, इण वासतै होळी रो सन्देस सुणीजै–

कायर कूड़ा जळ मरै, इण होळी री आग।
सूरा निकळै कनक सा, रहै खेलता फाग।।

फाग रमै जिको गोरिया कैंड़ीक है सुणीजै–

जिका परी इंदरी जिका चंद री कळासी
जिकां आभ बिजळी, जिका होळका भळासी
जिका रूप रीभणी खीभणी नाहरी निडर।
जाणणी जिकां विधा सरब भूलणी नारी हिडुर।।

अैड़ी बीरबानियां जिकी जाणै इन्दरा अखाड़ा सूं ईज धरा-धाम पर आई कै मदनरस मे मस्तायोड़ी मेणका री जाई कै नागलोक रै राजा री भोजाई कै बूंदी री तीजण कै उरबसी री भतीजण ईज सैदेही हुवै। अैड़ी नवेली नारियां नैण ज्यांरा कटारियां प्रीतमांरी प्यारियां, केसर री क्यारियां नैणां सू मीठी मीठी करती मनवारियां, घूमर रमती गोरड़ियां, लूहर लेती गोरड़ियां फागण में अनुराग जताती, गीत गाती लखावै जिका री जोड़ मे नाग लोक, अमर लोक री नारिया ईज न आवै अर इणा रा रूप नै निरख नै लजावै। राजस्थान री अैड़ी फागण किण रै चित न भावै, सगळा ईज फागण में मस्तावै।

राजस्थानी बातां मांय संगीत–चर्चा

डॉ० मनोहर शर्मा

राजस्थान ऊपर सूं भळां ही सूको-फीको निजर आवै पण भीतर सूं ईं रो जण-जीवण घणो सरस है। ईं रो पक्को प्रमाण राजस्थानी जनता रो कळा प्रेम है, जिको अठै नाना रूपा में प्रकाशमान रैयो है। राजस्थान री प्रजा सुभाव सूं कळा-प्रेमी है। अठै अनेक भांत री लोक–कळावां जीवण माय एक-रस हुयर रम्योड़ी है। लोक-कलावां रो हीज विकसित अर उन्नत रूप शास्त्रीय कळावां है। राजस्थान रो स्थापत्य, मूर्ति, चित्र, संगीत तथा काव्य सम्बंधी कळावां रो आप रो इतिहास है, जिणां रो देश-विदेश रा कळा-पारखी दिल खोलर घणी-घणी तारीफ करी है अर आज भी या परम्परा चालू हीज है।

ईं ललित-कळावां मांय सगीत रो आपरो निरवाळो स्थान अर महत्व है। संगीत री रजकता अनूठी हुवै, जिण सूं प्रभावित हुयर मिनख ही नी, पसु-पंखेरू भी मगन हुय जावै।

राजस्थान माय अगणित 'बाता' प्रचलित है। साधारण तौर पर राजस्थान मे 'कहाणीं, नै 'बात' कैयो जावै,। ये बाता मौखिक तथा लिखित दोनूं रूपा मांय मिलै। लिखित बाता साथै प्रायः लेखक रो नाव नी मिलै जिण सूं परगट हुवै कै या साहित्य-सामग्री समाज री सम्पति मानी गई है। बातां मांय राजस्थान रै जन-जीवण रो पूरो सरूप ही देख्यो जा सकै है।

अठै राजस्थान री संगीत सम्बंधी थोड़ी सी बातां पर चर्चा करी जावै है, जिण सूं सिद्ध हुवै कै राजस्थानी जन-साधारण रो संगीत प्रेम कितरै ऊंचो दरजै रो रैयो है। सब सूं पैलां तीन बातां री 'वस्तु' रो सार-सरूप देखो–

१. तमाइची री बात–

दिल्ली रो बादशाह फीरोज सिंध पर आक्रमण करयो अर सिंध रै बादशाह तमाइची नै कैद कर दिल्ली लेय आयो। अठै दिल्ली मांय तमाइची खातर सगळी बातां री सुविधा करी गई, जिण सूं उणनै कैद मांय भी किणी प्रकार री तकलीफ अथवा तंगी अनुभव नी हुवै। पहरै-चौकी पर भी भला आदमी हीज राख्या गजा।

सगळी व्यवस्था हुवता-थकां भी तमाइची सदा उदास हीज रैवतो अर जद भी आकास मांय बादळ देखतो तो उण री आंख्यां भर आवती। ई बातरी चर्चा फीरोजसाह आगै चाली तो साह तमाइची नै ई रो कारण पुछवायो। तमाइची अरज करी कै बो एकान्त रै कारण दुखी है। जे सिंध रै कवि सावळ सूध रो बेटो गेहो (अथवा हेगो) उण रै साथै रैवण-सारू बुलवाय लियो जावै तो उण रो बखत सोहरो कटै। तमाइची री अरज मंजूर कर ली गई अर उण री संगत-सारू सिंध सूं सांवळ रै बेटै गेहे नै बुलवायो गयो।

गेहो ऊंचै दरजै रो गुणी हो। संगीत-विद्या मांय उण रो मुकाबलो कोई नीं कर सकतो। पण गेहो तो दिल्ली रा दूत सिंध पूग्या उण सूं पैलां हीज फकीरी लेय लीनी ही अर बो देश-भ्रमण सारू सिंध सूं निकळ चुक्यो हो। खैर, बात आई गई हुई।

कई दिनां बाद दिल्ली मांय एक फकीर आयो अर बो बाग मांय ठहरयो। यो फकीर भी गान-विद्या मांय बेमिसाल हो। फकीर आपरी संगीत-कळा रै प्रभाव सूं बाग रै पंछियां री चाच बंद कर दीनी अर राज बाग मांय सुन्नता सी बापरगी या खबर फीरोजसाह रै काना पूगी तो फकीर नै दरबार मांय घणै सनमान साथै बुलवायो गयो अर बिचारै पंछियां रो संकट कट्यो।

दरबार मांय फकीर साहब रो गावणो भी करवायो गयो तो सगळो दरबार मंत्र-मुग्ध हुय गयो। फीरोजसाह गुणी फकीर नै मन चाही चीज मांगण-सारू कैयो। अब मालम हुयो कै यो फकीर तो सिंध रै सांवळ कवि रो बेटो गेहो हीज है। पण फीरोजसाह आपरी जबान पर कायम रैयो। गेहो बादशाह सूं तमाइची री मुगती मांगी अर उण री मांग तत्काल मंजूर हुई। तमाइची नैं साथै लेयर गेहो सिंध आ पूग्यो अर सगळै आणंद री लहरां री थिरकण लागी।

२. पदमैं चारण री वात

पदमो चारण गान-विद्या मांय ऊंचै दरजै रो गुणी हो। वो 'जंतर' बजावतो जद सगळो वातावरण रस सूं सरावोर हुय जावतो।

एक बार पदमो आपरी गाड़ी जोड़ी अर मांगणी-खातर गुजरात रै मारग चाल पडचो। उण साथै दूजो कोई नीं हो अर नी उण री गाडी मांय कोई सामान हीज हो। बस, पदमै रो 'जंतर, उण रै साथै हो।

चालतां-चालतां पदमै री गाडी एक बीहड़ मांय सूं गुजरी। रात रो वखत हो। बीहड़ एकदम शान्त अर एकान्त हो। पदमो आपरी गाड़ी मांय बैठयो 'जंतर' बजावण मे लीन हो। अचाणचक चारण री निजर गाडी रै लारलै भाग कांनी पड़ी तो उण माय एक दूजो आदमी भी बैठयो हो। उण रै आवणै री खबर पदमै नैं नीं ही। पूछ्यां पतो पड़्यो कै वो आदमी बीहड़ रो भूत है अर जतर री धुन सू मगन हुयर गाडी माय आ बैठयो है। पण उण सूं भय खावण री कोई वात नी है। वो गायक नैं किणी भात रो नुकसान नी करैलो, हर प्रकार सूं लाभ हीज देवैलो।

पदमो आपरी सगळी बात भूत नैं बताय दीनी अर दोनूं गाडी मांय बैठया साथै ही गुजरात री दिशा में चाल पड़्या। समय पायर दोनूं गुजरात री राजधानी पूग्या अर नगर सू वाहर एक सूनैं मकान मे पदमो भूत साथै डेरो करयो। भूत इसी सूनी जगां मांय हीज राजी रैवैं।

पदमै नै भूत भली भात समझाय दियो कै वो कठै भी मागणी नी करैलो अर नगर माय खुद नैं मत्र-वैद्य रै रूप में परगट करैलो। भूत घनो लोगा रै सिर चढैलो अर मत्र-वैद्य मोटी रकम लेयर भूत उतारणैं रो काम करैलो। पदमैं रो संगीत रस रात नैं डेरै मांय बरसतो रैवैला।

पदमैं रो इलाज खूब चाल्यो। मोटै-मोटै मिनखां रै सिर भूत चढै लागो अर वैदजी उण नैं उतारै लागा। पछै धन रो कांई कमी रैवतो। पदमैं कनै मोकळी माया भेळी हुयगी अर वो पाछो घरे जावण री मनस्या करी। भूत नैं कोई एतराज नी हो। वो भी पदमैं रै साथै ही पाछो चालणैं सातर त्यार हुयो।

दोनूं जणा गाडी माय बैठर चाल पड़्या। आगे भूत रो बीहड़ आयो तो वो गाडी सूं उतरयो अर पदमै सूं विदा लेई। पदमो माया लेयर घरे आयगो।

३. सयणी-बीजाणंद री वात

बीजाणद चारण आपरो 'जतर' लियां गांव-गांव घूमतो रैवतो। उण रै

आगै-पाछै कोई नी हो। बस, जंतर होज उण रो एक मात्र साथी अथवा सहायक हो। बीजाणंद ऊंचे दरजै रो गुणी हो।

एक बार कळाकार बीजाणंद किणी गांव में एक धनी चारण रै घरे उतारो करयो। चारण खुद गान-विद्या रो प्रेमी हो। वो बीजाणंद रै गुण पर मुग्ध हुयगो। चारण री बेटी सयणी भी बीजाणंद सूं प्रभावित हुई। बीजाणंद खुद सयणी कांनी आकर्षित हुयो पण यो प्रेम भाव अप्रकट ही रैयो।

एक दिन घर-धणी चारण बीजाणद रै गान सू इतरो घणो राजी हुयो कै वो उण नै मूंह-मांगी वस्तु देवण रो बचन देय दीनो। बीजाणंद मोको हाथ आयो देखर सयणी नै पत्नी रूप में मागी। चारण नै इसो विश्वास नी हो कै मागतो-फिरतो गवैयो इतरो आगै वध सकै है। उण नै क्रोध उपज्यो पण वचन दिया पाछै मुकरणो किण भात हुवै? चारण बीजाणद री मांग मंजूर करी पण साथै ही एक शर्त भी लगाय दीनी कै एक वरस री अवधि माय बीजाणद एक सौ नवचंदी भैंसा लयर दिखावै तो सयणी रो विवाह-मंगळ उण साथै हुय सकै है।

बीजाणंद या शर्त स्वीकार करी अर आपरो गायन-कळा रै प्रभाव सूं एक सौ नवचंदी भैंसां लावण खातर चाल पड़्यो। आगै गान-विधा रा प्रेमी लोग भैंसां तो घणी ही देवण नै त्यार हा पण बीजाणंद तो नवचदी भैंस हीज लेवतो, दूजी भैंसां सूं उण नै कोई काम नी हो। जिण भैंस रै च्यारूं खुर, दोनूं कान, नाक, माथै अर पूंछ पर सफेदी रो निसान हुवै, उण नै 'नवचंदी' नाव दियो जावै।

बीजाणंद हिम्मत नी हारी अर अगै सू आगै बधतो गयो। नवचदी भैंसा मिली अर अंत मे उणा री संख्या भी पूरी एक सौ हुयगी पण एक बरस री अवधि समापत हुयगी अर बीजाणंद री वात नी बण सकी।

सयणी खुद एक बरस बीजाणंद नै उडीकती रैई पण अवधि समापत हुया पाछै वा घर छोडर हिमाळै पर गलणं खातर चाल पड़ी, किणी री रोकी नो रूकी। जद बीजाणद पाछो आयर या खबर सुनी तो वो भैंसा नै छोड दीनी अर सयणी रै मारग पर हीज चाल पड़्यो।

जद बीजाणंद हिमाळै पूग्यो तो सयणी बरफ पर चढ चुकी ही। बीजाणद उण नै पूठी आवण खातर घणा ही हेला करचा पण वा पूठी नी बावडी अर आगै सूं आगै बधती गई।

बीजाणंद निराश हुयगो। उण नै संसार सूनो लखायो। वो आपरै जतर रा तार तोड दिया अर सूनै मारग पर सूनै मन सू चाल पड़्यो।

ऊपर तीन राजस्थानी बातां रा कथानक सार-रूप में दिया गया है । ये तीनूं ही संगीत-कळा सूं सम्बन्धित है अर घणी रोचक तथा महताऊ है । खास बताया भी है कै ई तीनूं हीज 'बातां' रा प्रधान पात्र चारण है, जिण सूं परगट हुवै कै काव्यकळा साथै संगीत-विधा मांय भी चारण घणा परवीण अथवा पारंगत रैया है ।

ऊपर दी गई तीनूं बाता माय सूं पैली बात रो नायक संगीत-कळा रो चमत्कार दिखावै है । वो असाधारण कळाकार हुवणै साथै सर्वथा स्वारथ-हीण मित्र अथवा स्वामिभक्त भी है । दूजी बात मांय बतायो गयो है कै संगीत सूं जीवता आदमी ही नीं, मरयोड़ा मिनख अथवा भूत भी प्रभावित करया जाय सकै है । तीजी बात रो नायक उच्चकोटि रो मस्त कळाकार हुवण रै साथै आदर्श प्रेमी है । सगणी री बात गुजरात सूं सम्बन्धित है ।

इण बातां रो क्षेत्र-विस्तार बडो है । ये गुजरात, सिंध अर राजस्थान रै विस्तृत-भूभाग सूं जुड़योड़ी है, जिण सूं सिद्ध हुवै कै यो सगळो प्रदेश सांस्कृतिक इकाई रै रूप में लोकमान्य रैयो है । आज ई विषय पर गभीर अनुसधान री जरूरत है ।

c

संस्कृति रै ओलै-दोलै

चेतन स्वामी

कांई हुवै आ संस्कृति ? घणा लूंठा-विद्वान आप-आपरी न्यारी न्यारी परिभाषावां सूं इणरो लेखो जोखो करै। केयी इण नैं मानखै रै क्रमिक विकास री साझेदार समझै। केयी इणरो सगपो मिनख री आत्मा री कळावृति सूं करै। जिणरी जैड़ी लोक संस्कृति उठै रै मानखै री वैड़ी ई मानसिकता।

तत्कालीन सामाजिक क्रिया कळाप उण टैम री संस्कृति रा आधार बणै। वण टैम रै मानखै री कळावृति जिण भांत भांत रा कामा रै-कळावा रै रूप में, उजागर हुवै, वा हीज संस्कृति री धरोहर हुवै। सावळ समझा तो-संस्कृति किणी चोखी चुणियोड़ी, मांडणां मांड्योडी हेली रो नांव नी हुय'र जिण मानखै रै हाथां हेली रो रूपाळो रूप आपा रै साम्हे चोखा काम रै रूप में निगै आवै वा कळावृति ही संस्कृति री धोतक है। मिनख नै सस्कारवान बणावण वाली उण अदृश्य बाण रो नांव है संस्कृति। अठै मैं 'अदृश्य' एक न्यारै अरथ में लिखियो है आखियां सूं देख्योड़ो-दीठ रै पसारै में आयोड़ा सगळा रूपाळा निजारा, मिनख री बाण नैं अदृश्य रूप सूं परिभासित करै। कळा रो सम्मोहन संस्कृति रो पोखना करै। भौतिक रूप सूं निगै आवणवाळी हरेक आछी वसत रो, आत्मिक जाण हो-उणनैं चोखी-माड़ी रो रूप दिरावै।

हरेक मिनख कलाकार कोनी हुवै पण सौंदर्यानुभूति तो हरेक मे हुवै ही है।

चोखै–माड़ै री जाय री दीठ तो हरेक में हुवै ई है। न्यारै-न्यारै वगत री न्यारी-न्यारी खासियतां उण टैम री भात भांत री कळावां रै जरियै चोखी तरै देखी जा सकै। संस्कृति किणी नैम के कायदां में नी बधै अर नी ई संस्कृति री कठैई सीव हुवै–टैम टैम माथै मिनख री आत्मिक अर परिवेशिक सूझ रै सागै सस्कृति रो बदळाव हुंवतो रैवै–सस्कृति रै बदळाव अथवा सैळ भैळ सूं ई मिनख नै घणो गिरबिराणो नी चाहिजै। वगत री माग मुजब ई औ बदळाव आवै अर औ रोकिया भी नी जाय सकै। बदळाव रै बारै में इण बात रो उधारण लियो जा सकै कै राजस्थान जिण मांय छतीस पूंण जातियां रैवास करै-पण न्यारा न्यारा हलकां री आपरी न्यारी सास्कृतिक ओळखाण है। जोधपुर सूं परण'र ल्यायोडी बीनणी कांई श्रीगंगानगर माय आपरै पैरवास, भाषा, गीत नै लेयर आपरी संस्कृति रै नांव माथै अड़ सकै है। या गंगानगर रा वासियां नै उण बीनणी रो बणायोड़ो घोक, रगोळी चोखो नी लाग सकै। सरु-सरु में दोवां-पखां नै की अबेरो जरूर लागै पण धीरै धीरै दोवूं पख एक बीजै री आदता पोख लेवै अर अठै तांई कै एक दूसरै री कळावृतियां रो वरतारो भी सरू कर देवै, जियां आज राजस्थान मे रैवण वाळा मुसळमान भी उणी भांत राजस्थानी मे गीत गाळ करै अर लाड-कोड करै जिण भांत अठै सदीनी रैवंती बीजी जातियां करै। परिवेश हाफै ई संस्कृति री ओळख करणी सिखावै।

संस्कृति रा अंग–मूळ रूप मे विद्वान लोग सस्कृति नै आत्मिक अर भौतिक आं दो न्यारा रूप सूं ओळखै। हरेक कळा कै उद्यम में औ दोवू रूप विराजमान रैवै। जीवण निरवाह खातर करीजण वाळा उद्यम, कारीगरी, क्राफ्ट पोसाका नै दूजी बीजी कळावा रो गनो (संबंध) भौतिकता सूं है तो इणी भांत साहित्य, नीरत-कळा, चितरामकळा, सगीत आ री स्फूर्णा मिनख री मांयली चेतना सगति रै कैयै हुवै। सस्कृति रा आं दोवू ई अगा रै माथै भौगोलिकता रो पूरो पूरो असर पड़ै। संस्कृति रै विकास में भौगोलिकता रो घणो लूठो हाथ हुवै।

किणी बीजै मुलक खातर तो जरूरी है कै नी, पण अठै भारत रै मानखै नै संचालित करण खातर वैदिक अर लौकिक संस्कृति रो गळजुंटो रैयो। जठै वैदिक सस्कृति मिनख नै चक्करियै रै मांय-मांय चालण नै मजबूर करती उठै लोक संस्कृति, उणनै सुतंतर पण खुदरी सूझ बूझ रै सागै आगै बधण खातर मारग खोलतो। जे लोक संस्कृति रो विकास नी हुवतो तो मिनख मशीन री गळाई फगत पुरजो हुय'र रैय जांवतो। लोक सस्कृति मानखै री जीवण पद्धति नै सोरी बणाई नै उणरै मांयली सगळी कळावां री पोखना करी अर खाली कळावां री पोखना ई नी उणनै सैग तरै सूं परोटण रा सगळा सरजाम जुटाया। कैवतां,ओखाणा नै बाता रै जरियै चेतावणी रा चूंटिया भरिया तो लोक गीता रै समर्थ मन री पीड़

प्रवासी अर उणी तरै चितराम मीरत के संगीत कळा आमोद प्रमोद रा साधन बणिया। वैदिक संस्कृति जठै कानून कायदां रो हामळ भरै उठै लोक पाणी री ढळांत दांई सोरा मारग सोधै। वैदिक संस्कृति जठै बदळाव में विश्वास नी राखै उठै लोक संस्कृति बदळती रैवै। वैदिक संस्कृति री कू जी है लोक संस्कृति। लोक संस्कृति रो सिरजणहार समूचो लोक हुवै। इण खातर ई जिण मुलक री लोक संस्कृति सबळी उठै मानखो वितो ई आत्मिक रूप सूं समृद्ध।

राजस्थानी लोक संस्कृति—लोक संस्कृति रो उद्भव क्षेत्रीयता लियोड़ो हुवै। भौगोलिक परिवेश रै मुताबिक ई उणरो विगसाव हुवै। इण तरै राजस्थान री आपरी सांस्कृतिक पँचाण बीजा मुलकां अर प्रान्तां सुं जुदा है। इण प्रान्त रा आपरा न्यारा ठसका अर रंग है।

राजस्थानी संस्कृति नैं कागजां मे अंवेरणी कोई हँसी-खेल नी है अठै रा तो कण कण में अठै री संस्कृति भळाका मारै। लोक संस्कृति रै ई पाण मिनख री मिनखाई बांधियोड़ी नैं सैंठी। ब्याव-सावा, रीत रिवाज, मेळा-खेळा में संस्कृति रा न्यारा न्यारा रंग ढुळियोड़ा। लोक संस्कृति वा चीज हुवै जिण मांय 'ऊच'री कठै ई जग्यां कोनी हुवै। राजस्थानी संस्कृति तो इण मामलै में घणी सैंजोर। राजस्थान जैड़ो सूखो प्रान्त जिण मांय पड़ता काळ-दूकाळ पण कांई मजाल कै ऊंडो पाणी पीवणवाळो अठै रो मानखो नितर जावै। भूख–तिरस सैय'र भी अठैरा मिनखा आपरी काण नैं संस्कृति नैं बचाय राखी नै उण में सवायो बधेपो करण सारूखसता रैया। काण कायदां सू लैस अठै रो मिनख–मिनख रै आडो आवण में घणो हरखीजै नैं वो उणनैं आपरो धरम समझै। अठै री लोक मानतावां, लोक संगीत, लोक साहित्य माय-कैवतां, बाता ओखाण आडियां, दूहा सोरठा, मुहावरा, अर त्यूंहार रीत रिवाज घणा समृद्ध अर गैरा।

गीत गाळ रै जरियै लुगायां आपरा मन रा भाव किण भांत प्रगटावै आ कोई अछानी बात कोनी। लोक संस्कृति री ई घसक हुवै कै निपट अणपढ़ अर गिवाह लुगाया न्यारै आणी–टाणीरा न्यारा न्यारा सैकडूं गीत चेतै राखै अर वै ई लुगाया हरेक आणै टाणै आपरी न्यारी न्यारी कळावां रो प्रदर्शण करण मांय कदांत ई चूकै कोनी। चावै घूमर घालणी हुवो कै आंगणै अथवा कंवळां माथै चौक-रंगोळी करणी हुवै। जीवण रा हरेक कारज लोक संस्कृति री छाप छपियोड़ा हुवै।

किणी नैं सीख, मैणो मोसो देवणो हुवै तो, ओखाणा–कैवतां कै बातां रो दड़ाछड़ प्रयोग हुवणो सरू हुय जावै। दूहा-सोरठां रै रूप पेटां री बात होठां आवै नैं आगलो उणनै सीख समझ झेवेरै। गैणा गाठा कै पैरवास ढोल री इध–

राई दरसावँ । लोक रूपी फूल रँ सिरजण रो जिम्मो समूच लोक रो ई हुवँ । कुण करियो इण रूपाळी लोक संस्कृति रो सिरजण ? किणी अेक मिनख नीं समूची मिनख जात री सुधरायां रो फळ है आ लोक संस्कृति । जीवण री पोखना मे आवणवाळी कठनायां रो एक ही हल हुंवतो लोक संस्कृति । आंथूणे राजस्थान में पीवण रँ पाणी रो तोटो रैयो है सदा सूं ई, काळ-दुकाळां री मार सूं अन्न रो ई तोटो ई रँयो पण फेर भी आयँ बटाऊ रँ आदर माय खलको नी पड़ण देंवणो अठँ रँ मानखँ री मांयली छिब कोरँ । रीत रिवाज अर रिश्तां री ओळख जीवण मे आस्था रो संचरण राख्यो । औसर-मौसर, ब्याव सावां नँ माहेरा मोसाळां री अबखी रीता जकी अरथ सूं जुड़नँ रँ कारण थोड़ी अबखी हुयगी पण फेर भी माहेरँ जेड़ी रीत भाई बँन रँ रिश्तँ री अेड़ी ओळख करावँ । कितो ई पकी छाती वाळो मिनख लुगाया रँ बीरो गावती वेळा उमाव सूं रोय देवँ नँ उण टँम उणरो हिरदो सफा निरमळ हुवँ । गाव मे काण कायदां री घणी पूछ । मिनख ऊंट चढ़ि-योड़ो गाव मांय कर नी वग सकँ, हुय सकँ इण तरँ री रीत रँ लारँ कोई अेड़ी सामाजिक कठणाई हुवँ जिणरो औ हल हुवँ कै मिनख ऊंट चढियोड़ो गांव माय कर नीं निकळ सकँ । क्यूंकँ गांव माय न्हावण घर तो हुवँ कोनी । बँन बेटी धळकोट रँ स्हारँ आपरो न्हावणो करँ तो वा ऊंट चढियोड़ँ मिनख नँ दीसँ । इणी तरँ भूख तिरस री लाबी राता बाता रँ खळखळाट मे कट जांवती अर मिनख एक अबखी रात नँ भूख नँ विसराय काट देवता । अठँ रा मिनख री कलावृति घणी संजोरी रैयी । न्यारा न्यारा त्युंहार, मौसम री अनुकूल उमंगां रँ सागै धोकीजण री रीतां रँ लारँ कांई चितण रैयो हुवँला आ बात सहज समझ में आवँ । खेतो में खस'र ल्योडँ धान री ऊमग माय घणै मोद रँ सागै दीवाळी धोकी-जणी तो, साल भर रो काधूंस मन मांय सूं निकाळण रो तिवार होळी, इणी भात डावड़्यारी गिणगोर नँ, ठंडा भोला दैवण रँमिस गिरमी मे ठंडो धान खावण री चेतावणी सीतळा सात्यूं

लुगाया जकी आपरँ मन रा भाव सहज रूप सूं प्रगट कोनी कर सकँ बै गीतां रँ जरियँ आपरी मन इच्छ्या री बात बता देवँ । इण तरँ संस्कृति मिनख रँ पल-पल रँ क्रिया-कळाप नँ संचालित करँ

संस्कृति रो दुश्मण कुण ? टैम टैम माथै संस्कृति रँ नष्ट हुंवतँ जावण रो रोळो मचँ । लोक संस्कृति जठँ मिनख नँ होळँ-होळँ संस्कार वान बणावँ-उणनँ पांवडँ-पावडँ जीवण सूं ओळखाण करावै उठँ उणनँ व्यैग्यानिक विकासवाद नूंवँ सदर्भां सूं जोड़ँ । विज्ञान रँ प्रचार-प्रसार सूं संस्कृति नँ कोई नुकसाण कोनी पुगँ पण मिनख री उदासीनता संस्कृति नँ जरूर नुकसाण पुगावँ । मिनख विज्ञान नँ आपरी

कठणायां रै हुल रै रूप में नी लैय'र, उपभोग रो अंग मान लेवै तो वो ई उणरी संस्कृति रो दुश्मण बण जावै । क्रमिक विकास, विज्ञान रा भिन्न-भिन्न आविस्कार तो टैम टैम माथै हुंवता ई रैया है पण जै मिनख आपरी आळसू वर विलासी प्रवृति माथै उपभोक्ता संस्कृति नै उखण लेवै तो वा समूच समाज री लोक संस्कृति रै खातर दुखदाई बण जावै । किणी भी प्रदेश कै प्रांत री संस्कृति नै उपभोक्ता संस्कृति घणो नुकसाण पुगावै । मिनख रै मरजादित काण कायदा नै तो नुकसान पुगावै ही उणनै पंगु भी बणावै ।

▭

फार्म ४, नियम ८

१- प्रकाशन का स्थान —श्रीडूंगरगढ़ (चूरू) राज०

२- प्रकाशन की अवधि—त्रैमासिक

३- मुद्रक का नाम —हनुमानमल पुरोहित
   राष्ट्रीयता —भारतीय
   पता —राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़

४- प्रकाशक का नाम —हनुमानमल पुरोहित
   राष्ट्रीयता —भारतीय
   पता —उपरोक्त

५- सम्पादक का नाम —श्याम महर्षि
   राष्ट्रीयता —भारतीय
   पता —राष्ट्र भाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़

६- उन हिस्सेदारों के नाम
   व पते जिनके पास कुल — कोई नहीं
   पूंजी के १%, से अधिक
   हिस्से है

मैं हनुमानमल पुरोहित यह घोषणा करता हूं कि ऊपर दिया गया सारा विवरण, जहां तक मैं जानता हूं तथा मेरा विश्वास है, सत्य है।

हनुमानमल पुरोहित
प्रकाशक

अेक निजर राजस्थानी अनुवाद रै माथै

□ डॉ. गोरधनसिंह शेखावत

मौलिक रचनावां रै साथै अनुवाद रो भी न्यारो निरवाळो मोल गिणीजै। भासा रै विगसाव सारू आ जरूरी है'क दूजी भासावां रा नामी-गिरामी लिखारा री महताऊ रचनावां रो उल्थो करयो जाय। इण सूं अेक फायदो तो निजू भासा रै सबद भण्डार अर साहित रै बधापै रो हुवै तो दूजै कानी इण सूं दूजी भाषावा रै सिरजण रो ई ठा पड़ै अर इण सूं प्रेरणा मिल सकै। हरेक भासा री क्लासिक रचनावा रो अनुवाद किसी भासा मे होवणो, उण री खिमता पर सवेदना नै प्रगट करै। पछै समकालीन साहित रो अनुवाद मौजूदा प्रव्रत्या, विचार अर चिंतन रा नुक नुकौर आयाम आपरी भासा रै पाठकां सामै राखै, इण सूं खुद री भासा री समकालीन साहित चेतना रो अदाज हुवै। आज हरेक भासा में कमती-बित्ती रूप में अनुवाद रो रूप दीसै।

अनुवाद रै बिसै में भी दो तरै रा विचार मिलै। की लोग अनुवाद नै बिसी मानता नी देवै जकी मौलिक रचनावां सारू हुवै। दूजै कानी की लोग अनुवाद नै टेढी खीर मान'र इण री मैणत नै अगेजै। क्यूं'क अनुवादक मौलिक नी लिखै पण रचनावां रो अनुवाद करती बगत उणां री संवेदना, भासा, सिल्प इत्याद

मौलिक लिखारा सूं कम नी हुवै । अनुवादक रै वास्तै जरूरी है'क उण नै दोनूं भासावां रो पूरो ग्यान हुवै अर वो अधिकार रै साथै की कैय सकै । जठै ताईं मूल भासा री गैराई रो पतो नही होसी, बठै ताईं अनुवाद रै मांय मूळ भासा रो आनद नी आ सकै । अनुवाद सूं अनुवाद करणो, रचना रै मूळ भाव अर प्रभाव नैं आपरै असली रूप मे नी प्रगट कर सकै । अनुवादक फगत सबदां रो ई उल्थो नी करै, उण रै माय रचनाकार री सिरजण खिमता, सवेदना अर अभिव्यक्ति री सबळाह हुवै अर जद ई किणी रचना रै अतस मे खोय । रचना रै मूल सरूप नै बतै ई ठावै अर प्रभावी रूप नै उजागर कर सकै ।

अनुवाद रै बार मे अेक ओ सवाल भी उठै'क किणी रचना रो सबदानुवाद करणो ठीक है या भावानुवाद ? सबद अर भाव री स्थिति थोड़ी अलग-अलग है । भावां सारु सबद ढूंढ्या जावै अर सही सबद-प्रयोग सूं ही भाव दूजै ताईं पूगै। भासा इण ढग सू भावा री अभिव्यक्ति रो माध्यम है की हरेक भासा मे भावां मुजब आपरा न्यारा-न्यारा सबद भी हुवै । की सबद आपरी भासा रा निजू हुवै अर उणां रै माय अेक साथै घणी व्यंजना छिप्योडी हुवै । अैड़ी स्थिति मे आ जरूरी नीं'क दूजी भासा मे उण रै जोंड रो सबद हुवै ई, क्यूं'क हरेक भासा रै सबदां री आपरी बुणगट अर अरथ प्रगट करणै रो खिमता हुवै । म्हैं आ तो नी कैवूं'क सबदानुवाद नी हुवै, पण फगत सबदानुवाद भाव री गैराई अर सरसाई नै प्रगट नी कर सकै। भाव रै ओपतै रूप नै जद ताईं सबदा में नी गूंथ्यो जावै तद ताईं अनुवाद री सफलता मानणो ठीक कोनी । पछै कविता अर गद्य रै अनुवाद मे अन्तर भी हुवै । केई बार कविता रो सबदानुवाद करणो सरल लागै पण फेरू भी उण रै मांय भाव री गैराई नी आ सकै । म्हारै खयाल सू संवेदना रै धरातळ माथै किणी भाव नै आपरी भासा मे पोख'र प्रगट करणो अनुवाद री मोटी विसेसता गिणीजणी चाइजे । पढ़ण आळै नै आ ठा नी पड़ै'क वो अनुवाद पढ रैयो है या आपरी भासा री कोई रचना । अेक भासा री रचना नै दूजी भासा री रचना बणा देणो, आसान काम नी है, इण वास्ते अनुवादक की थोडा ही हुवै । अनुवादक रै वास्तै दोनूं भासावां रो ध्यान समान रूप मे घणो जरूरी है । आज घणकरा अनुवादक अैडा हैं जकां नै फगत अेक भाषा रो ई ग्यान है अैडी स्थिति में वै सबदानुवाद नै अनुवाद मान लेवै ।

राजस्थानी भासा रै मांय सिरजण रै साथै अनुवाद री परम्परा भी छठै दसक मे पनपी, क्यूं'क छठै दसक रै माय 'मरूवाणी', 'ओळमो' अर 'वाणी' जैड़ी पत्रिकावा निकळी जिण रै माय दूजी भासावा री रचनावां रा फुटकर अनुवाद छप्या । अनुवाद मे कविता रै साथै गद्य री विधावा मे उपन्यास, कहाणी, नाटक, अेकाकी, लोककथा इत्याद रा अनुवाद छप्या । अनुवाद री द्रस्टि सूं 'ओळमो' रो

काम सगळा सूं बेसी सरावण जोग कहीजैलो। देस-विदेस री ठावी अर टाळवी रचनावां रा अनुवाद किशोरकल्पनाकांत 'ओळमो' रै मांय लगातार करता रैया। 'मरुवाणी' भी अनुवाद रा केई विसेसांक काढ्या। अनुवादां रै मांय पैला संस्कृत, उरदू, बंगला, अंग्रेजी इत्याद भासावां री महताऊ पोथ्यां रा उल्था छप्या। 'मेघदूत' रो नारायणसिंह भाटी, चन्द्रसिंह, डॉ मनोहर शर्मा, मनोहर प्रभाकर, अमर देपावत, मांगीलाल चतुर्वेदी, गिरधारीलाल शास्त्री अर कन्हैयालाल सेठिया (किणी रै सार्थ) अनुवाद करयो। 'मेघदूत' रै अलावा महाकवी कालिदास रै दूजै काव्यां 'कुमार-संभव' अर 'ऋतु-संहार' रा अनुवाद किशोरकल्पनाकांत, कृष्णगोपाल कल्ला (ऋतु-संहार) अर मदन गोपाल शर्मा (कुमार-संभव) करया। 'रघुवंश' रो अनुवाद चन्द्रसिंह और गाथा सप्तशती रो अनुवाद चन्द्रसिंह अर रावत सारस्वत करयो। उमर खैयाम' रा डॉ मनोहर शर्मा, मनोहर प्रभाकर, कृष्णगोपाल कल्ला अर अमर देपावत अनुवाद करया। 'गालिब राजस्थानी' मे गालिब रै काव्य रो अनुवाद युसुफ झुंझुनवी करयो। 'गीता' रो अनुवाद मोहन लाल शर्मा मयंक, मांगीलाल चतुर्वेदी, विश्वनाथ शर्मा विमलेश, 'वाल्मीकी रामायण' रो अनुवाद अम्बू शर्मा 'रामचरित मानस' रो अनुवाद श्यामसिंह अर 'गीताजळी' रो अनुवाद रामनाथ व्यास परिकर अर कृष्णगोपाल कल्ला रो करयोड़ो है। दूजै बी प्रमुख काव्यां रा अनुवाद 'गीत गोविन्द' (कृष्ण गोपाल शर्मा) भरथरी सतक (मनोहर प्रभाकर) कुरान री आयतां (जोगीदान कविया) ऋगवेद री रिचावा (रावत सारस्वत) थीमू हजारा (अम्बू शर्मा) रा भी राजस्थानी भासा मे मिलै।

दूजी भासावां री कवितावा रा फुटकर अनुवाद करण आळै लोगा मे तेजसिंह जोधा, पारस अरोड़ा, नंद भारद्वाज, इन्द्रकुमार शर्मा, सत्यप्रकाश जोशी, मणि मधुकर, गोरधन सिंह शेखावत इत्याद हैं। फुटकर कवितावां मे सगळा सूं बेसी अनुवाद तेजसिंह जोधा रा विदेसी भासावा रा अर बंगला, पजाबी, मैथिली, कश्मीरी, डोगरी, तेलगु, मराठी, उड़िया इत्याद भासावां रा मिलै। भावानुवाद री कला मे तेजसिंह जोधा रा ओपता अनुवाद कहीजै। उणां रा अनुवाद पढ़ती वगत लागै'क राजस्थानी री ई कोई मूल रचना पढ़ रैया हां। अबार वै रसियन भासा रै जगचावै कवी रसूल हमजातोव री कवितावां रा भी राजस्थानी मे चोखा अनुवाद करया है।

कविता रै अलावा गद्य री दूजी सगळी विधावां मे भी राजस्थानी मे अनुवाद हुया है। अै अनुवाद दोय ढग रा है-अेक तो पूरी पुस्तक रा अर अेक लिखारां री की नामी रचनावां रा। उपन्यास रै मांय नष्टनीड़ (बंगला) रो अनुवाद किशोरकल्पनाकांत, मो की गळा हाथ मे (बंगला) रो अनुवाद मावर

दइया, बैतियाण (अंग्रेजी) रो अनुवाद नंद भारद्वाज, मोती (अंग्रेजी) रो अनुवाद भगवतीलाल शर्मा करयो है। कहाण्यां रै माय सत्यप्रकाश जोशी (बाबी, काळै मिनख री डायरी), किशोरकल्पनाकांत (सेक्सपीयर री बातां, विश्वनाथ सत्यनारायण री बातां, 'भोळियो'), डॉ. नृसिंह राजपुरोहित (कथा-भारती), लक्ष्मी कुमारी चूंडावत (संसार री नामी कहाण्यां), गिरधारीलाल शास्त्री (हितोपदेश) इत्याद रा प्रमुख नाम मान्या जा सकै है। नाटकां रै मांय राजा राणी (रवीन्द्र ठाकुर) रो अनुवाद डॉ. ब्रजमोहन जावलिया, मालविकाग्नि मित्र रो अनुवाद गिरधारीलाल शास्त्री, देसी टोरडी पूरबी चाल (गुजराती) रो अनुवाद दीनदयाल कुंदन, मैकबैथ (अंग्रेजी) रो अनुवाद बृजलाल शर्मा अर स्वप्नवासवदत्ता रो अनुवाद देवदत्त नाग 'सपनो' नांव सूं करयो है। हिन्दी रै उपन्यास अर अेकाकियां रो अनुवाद भी चन्द्रसेखर भट्ट (अेकांकी संग्रह) अर किशोरकल्पनाकांत (पदमणी रो श्राप) करयो है। श्याम महर्षि (ब्रेख्त री कवितावां) चेतन स्वामी रसूल हमजातोव रो उपन्यास (मेरा दागिस्तान) दूजा अनुवादकां मे गोविन्दलाल माथुर, अम्बू शर्मा, लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, श्रीलाल नथमल जोशी इत्याद हैं। राजस्थानी रै गद्य साहित रै अनुवादकां मे किशोरकल्पनाकात रो नांव सिरै गिणीजै। बै 'ओळमो' में बंगला, तेलगु, रसियन, अंग्रेजी इत्याद भासावां री कहाण्या अर लोककथावां रा सातरा अनुवाद करया हैं। दुनिया रा नामी कथाकार मोपासां चेखव, गोर्की, टालस्टाय इत्याद री कहाण्यां रो अनुवाद सगळा सूं पैली किशोरकल्पनाकात करयो। राजस्थानी भाषा मे 'ओळमों' जता अनुवाद छप्या, बता किणी दूजी पत्रिकावां मे नी छप्या इणीज भांत मराठी, बंगला, गुजराती, पजाबी, कन्नड इत्याद भासावा री कहाण्या रा अनुवाद भी किशोरकल्पनाकांत करया। फुटकर अनुवाद करण-आळै लोगा मे तेजसिंह जोधा, नंद भारद्वाज, पारस अरोडा, ओकार पारीक, डॉ नृसिंह राजपुरोहित, चेतन स्वामी, मालचंद तिवाड़ी इत्याद रा नाव गिणाया जा सकै। इण तरै राजस्थानी भासा रै माय मौलिक रचनावां रै साथै अनुवाद भी हुवै पण हाल आ स्थिति घणी माडी है। फुटकर रचनावा रै अनुवाद सारु राजस्थानी रै मांय पत्रिकावां रो अभाव भी है साथै-ई-साथै अनुवाद रै प्रकासण नै किणी तरै रो प्रोत्साहन भी नी।

आज राजस्थानी भाषा रै विगसाव सारु साहित रै इण पख नै संभालणो भी घणो जरूरी है। राजस्थानी पाठकां नै दूजी भासावां रो सहित आपरी भासा मे मिलै अर लिखारां नै समकालीन चेतना अर प्रव्रत्यां रो ग्यान हुवै, इण सारु अनुवाद घणों जरूरी है। ओ काम अेक योजनाबद्ध तरीकै सूं हुवै तो राजस्थानी भाषा री खिमता अर सबद-भंडार नै भी घणो लाभ मिलसी अर दूजी भासावा रै जोड मे राजस्थानी भासा आपरा पग संभाळ'र खडी हुय सकै। अनुवाद री परख या कसौटी वास्तै मूल रचना रै साथै अनुवाद नै देखणो चाहजे, साथै ई साथै इण

बात रो ध्यान राखणो भी जरूरी है'क अनुवादक नैं बा दोनूं भासावां रो चोखो ध्यान हुवैं। केई बार अंग्रेजी अर बंगला भासा री रचनावां रो अनुवाद हिन्दी रैं माध्यम सूं हुवैं, पण ओ अनुवाद कत्तो खरो अर मूल जैड़ो है, इण बाबत अधिकार साथै कैवणों थोड़ो मुश्किल है। आज राजस्थानी में दूजी भासावां रा ज्यादातर अनुवाद भी हिन्दी रैं माध्यम सूं हुय रैया हैं। अनुवाद विधा नैं प्रोत्साहन देवण सारु दूजी भासावां रा नामी अनुवादकां रा विचार, अनुवाद रैं मांय आवण आली दिक्कतां अर अनुवाद कला रा सैद्धान्तिक नियमां नैं जाणबो भी जरूरी है।

बिरखा रुत रा वार त्यूंहार

☐ कु० धर्मवीर शेखावत

राजस्थान भात भतीली धरती धोरा नै ऊंची भरा भाखरा नै झरणा निरझरणा रो देस । ग्यानी-विग्यानी अर सत-महन्ता रो देस, सति-सूरमावां, गढ़कोट अर किला मिन्दरां रो देस, छतरिया, देवळियां अर जुद्ध मे बिन माथा रै जूंझणियां जूंझारां रो जबरो देस, मानीता कविया ओर साहित्यकारां रो देस, चितराम चितारां अर इतिहास लिखारां रो देस, तोला मैंना मोरां तीज त्युहार गणगोरां रो देस, भांत-भंतीली न्यारी निवराळी नखराळी वेसभूसा अर मरूधर री मनभावणी, हियो हरखावणी, हेत उमडावणी मिस्री घोळी मिठी बोली भासा रो इदको प्रदेस है ।

इया तो आखं बरस अठै भात भतीला, रग-रगीला, छैल-छबीला, सोवणा न मनमोवणा तीज त्यूंहारा रो मेळो मंडियो रेवै पण बिरखा रुत रा त्यूंहार न्यारी छिब नै ठावी-ठोड़ राखं । जेठ रा तावड़ा सूं तपती बाळू रा दाझता काळजा मे ठड पूगावण री किरपा सुरराज ठेठ आसाढ मे जायनै करै, नदी नाळा, खेत-खाळा, नाडा खाडा निरमल नीर सू भरै । मेघ गाजै, मोर नाचै, देवराज इन्दर रा बाजा बाजै, ताप रो थोबड़ो टूटै, काळरो खोफरो फूटै, नुई बनस्पति फूटै, सम्पा कड़कै, तिणसूं धरती धड़कै, बीजळी चिमकै जाणै सेसनाग री मणी ईज पळकै ।

बिरखा बरसै तद मिनख अर जिनावरा रौ जीव सरसै नै करसा रौ हियौ हरसै अर बो खेत खड़ण खातर हळ अर बीजी संजत सम्हाळै। सांवड़नै सुमिरै अर असार भखार भरण री चित धारै अर मोद में तेजो घोळियौ गीत ऊचारै।

'तीज त्यूंहारा बावड़ी ले डूबी गणगोर' बिरखा रुत रा त्यूंहारा री सरूआत तीज सूं व्है। 'कंथा मति चुकावज्यो तीजा तणा त्यूंहार' री कैवत तीज री महताऊपणो दरसावै। इण त्यूंहार रै मौकै मोट्यार दूर देस सू चलायनै घरै आवै अर भांत भांत रा मोकळा उपहार त्यावै। बाप, वेटी खातर, भाई बैन सारु नै मोट्यार लुगाई ताई लेहरियौ घणा लाडा-कोडां ल्यावै। इण बाबत एक कैवत है– 'तीजा पाछै धाबळो मार कसम के मूंड'।

सावण री तीज मारवाड़ मे छोटी नै सेखाटी अर ढूंढाड़ में बड़ी तीज रै नांव सू जाणीजै। मारवाड़ मे असाढ़ री लागती तीज नै बड़ी तीज मानै। तीज रै दिन कंवारी बाया अर परण्योड़ी लुगायां बाग बगीचा अर मिन्दरा में हींडो-हींडै नै घणो उछाव अर हरख मनावै। साथण-सहेल्या एक दूजे ने आप आपरै। मोट्यार रौ नांव पूछै, नी बतावण तांई लारौ नी छोडै। कठैई-कठैई कामड़ी रा साटकिया रा सरड़ाता चामडी पर लागनै कामड़ी मंड जावै। अर मीठी मौज मे पीड़ नै बिसरायनै हड़-हड़ हंसी मे खिल खिलावै। राजस्थान में मोट्यार नै लुगाई रौ अर लुगाई नै मोट्यार रौ नाव लेवण री छूट भूला मायँ इज हुवै। नीतर मोट्यार अर लुगाई ऐक दूजै रौ नांव नी लिया करै। इणरै लारै मानता आ है कै नांव लेवण सू ऊमर घटै।

तीज पै सगाई करघोड़ो डावड्या रै टाबरवाळा री तरफ सू नै परणायोड़ी रै पीहर वाळा री तरफ सू मिठाई कपड़ा अर फळाद आवै। नुई ब्याहोडी बीनणी पैलो सावण पीहर मे इज मनावै। लुगायां नै बायां नवा कपड़ा पैहरै, सिणगार करै, नीबडी पूजै, भांत भांत रा गीत गावै नै घणा कोड मनावै। तळावां मा पै जावै नै सावन री सौरभ में गीत री सौरभ मिलावै।

तीज रै दोय दिन पाछै नाग पांचै आवै। कठै कठै बिरियां पांचे ई कैवै। नाग पांचै आखै देस में मनाइजै। नाग रा दरसणा नै इण दिन घणा सुभ नै मगळीक मानै। नाग सू मतलब काळीदर सूं इज व्है। सुगन सास्त्र मे ई इणरो सुगन आछो बतावै। घर आंगे नाग न पूजियै बांबी पूजण जाय। ओ पूजण जीयां जूण री पालणा रौ प्रवाण जतावै। नागा रै बाबत भांत-भांत रा किस्सा सुणीजै। नाग जठै रैवे उठै सोनो-चांदी, हीरा-मोती, माणक-पन्ना अर अणपार धन अवस व्है, ऐड़ी मानता है।

मिणधर नाग बाबत घणी ई कथावा नानी-दादी अर बूढ़ा-बडेरा सू सगळाई आपरै बाळपणै मे सुणी व्हैला । नांग पांचै रै दिन सगळा ई जात रा लोग-लुगाई गोगाजी रै थान माथै नारेल नै परसाद आद चढ़ावै । दूध अर बिरिया सू नाग री पूजा करै । काळबेलिया आज रै दिन नागा रा लोगा नै दरसण करायनै परसाद नै पइसा पावै । मंडोर (जोधपुर) री नागादड़ी माथै घणी जबरी मेळो भरीजै ।

सावण री पूनम रो त्यूंहार राखड़ी पूनम रै नाम सूं जाणीजै । भाई-बेन रै हेत रा त्यूंहार राखड़ी पूनम रै दिन बेन-भाई नै धणकोड़ा-घणलोड़ा राखड़ी बाधै । भाई पाछी रुपया पईसा अर उपहार आद बेन नै देवै । इणदिन पंडित सगळा नै अर राजपूत तलवार नै राखडी बाधै । राजपूताना रै इतिहास मे राखड़ी पूनम री घणी उछाव हुवै कई वळा कई राजा दूजा राजावां नै राखड़ी भेजी अर जुद्ध रा मैदान में राखीबंध भाई लड़ता काम आया ऐड़ा घणा ई उदाहरण इतिहास मे मिलै ।

भादवै री पैली आठम क्रसण आठै रै रूप मे मनाइजै । इण दिन सांपा रा देवता केसरिया कुंवरजी री पूजा व्है । केसरिया कुंवरजी रै मन्दिर में खीर चूरमा रो भोग लगाइजै । रातभर जागरण व्है । पुजारी नै भाव ई आवै । पण इण आठम नै मोटो उछब कानजी रै जनम री मनायो जावै । इणी सूं इणनै कान आठै, जलम आठैं ई कैवै । रात नै भजन हरजस व्है अर कानजी नै आंधी रात रा चांद उगतां ई जलमावै । इण दिन पजीरी खास तौर सूं बणाइजै । क्रसण जी री कथा बतावां चाव सूं कहीजै, सुणीजी, मुणीजै, पुणीजै ।

गोगा नोमी रै दिन केसरिया कंवर जी री जोड़ी रा धरम बीर गूगाजी री पूजा व्है । कुम्हार घोड़े पर सवार गूगाजी री मालाधारी माटी री मूरती लेय'र घर-घर जावै नै भोज री सामग्री अर चढावो पावै । राखड़ी पूनम नै पैरयोड़ी राखडिया ई दिन गूगाजी माथै चढ़ाइजै ।

गोगा नोमी रै च्यार दिन उपरांत तेजा तेरस आवै । इण दिन गोभगत वीर तेजाजी री पूजा करै । ओ करसां री त्यूंहार बाजै । इण दिन प्रदेस में जगा जगा मेळा भरीजै । लोक देवता तेजाजी रा गीत गायीजै अर उछब मनाइजै । सेखावाटी मे तो नामवर तीरथ लुहागरजी री परक्रमा ई गूगा नोमी रै पछै सरू व्है अर 24 कोस री मालकेत डूंगर री परक्रमा पूरी करनै सरधाळू भगतजन अमावस रै दिन लुहागरजी मे सूरजकुंड में संपाड़ो करै अर लोग मानै के बारो सगळा पाप दाप छड़ै ।

भादवै री ऊजाळै पख री चौथ 'गणेस चौथ' अर गावां में चतड़ा चौथ रै रूप में मनाइजै। इण दिन गणेस री खास तौर सूं पूजा व्है। इण ओसर पर गुरुजन सगळा पढणियां टाबरां रै घरै जावै अर वांनै घणी काम री महताऊ बातां बतावै। टाबर-टोळी गुड़-धाणी पावै। टाबरां री मांवां गुरुजना रै तिलक लगावै नैं रुपियो नारेळ ई भेंट चढावै। इण रीत गुरु चेला रौ जूनौ रिस्तौ प्रगटावै।

पछै भादवै री दसमी रै दिन ऐतिहासिक महापुरुस नै लाखां मिनखां रा मानेता वीरवर रामदेवजी तंवर री याद में ठौड़-ठौड़ टणका मेळा भरीजै। सगळा सूं लूंठौ मेळौ जोधपुर रै रामदेवरा में लागै। रामदेवजी हरिजनां रा खास देवता। रामदेवजी छुआछूत रा भूत नै भगावै। उवै इण रोग रो जड़ा काटण खातर आखी ऊमर काम करयो। इण दिन जातां दीरिजै, टाबरां रा जडूला चढीजै, बोलया किवीजै, परसाद बंटीजै नै रामदेव जी री पूजा करीजै। ओ दिन सगळी जातां रा लोग घणा उछाह उमंग, रंगतरंग सू मनावै। अर भारत री जात-पांत छूत-छोत नै छोड़ एकता रौ अनोखौ भाव दरसावै।

सराध पख रै पछै भगवती दुर्गा री आराधना नवरात रै थरपना रै सागै ई घर-घर में सरू व्है जावै। जीण, ज्वाला, जमवाय, भद्रकाळी, आवरी, करणी, जोगमाया, चामुण्डा, दुर्गा, सिल्ला सैणला, हरसिधी, नारसिधी, कामेही आसपुरा नै काळी माता रा जबरा मेळा भरीजै। देवी रा भगत नोरता रा बरत राखै, कोई-कोई तो नव-नोरता अखंड ई करै। मिंदरां मे नोई दिन सुबह सूं लेयनै सांझ ताई भगतां री भीड़ रेवै। देवी रै भांत भांत रा भोग लागै। बकरां रा झटका व्है, जडूला चढै, गठजोड़ा री जाता दिरीजै, फेरियां लागै, दारू अर मांस री गोठा करीजै। बिरखा रुत रा त्यूंहारां में सगळा सूं बत्ती धारमिक सरधा रै सागै लोग इण त्यूंहार नै मनावै। देवी रा भजन अर गीत गायीजै, रातीजोगा दीरीजै। बंगाल में तो दुर्गा पूजा रौ घणौ लूंठौ महोत्सव मनाइजै अर नोमी रा दुर्गामाता री मूरती बहाइजै।

विजै दसमी रौ जगचावौ त्यूंहार भगवान राम रै रावण नै मारण री खुशी पर मनायो जावै अर अन्याय पर न्याय री जीत रो त्यूंहार कहावै। दसरावा रै दिन पैला राजा महाराजावां री सवारियां निकळती, कठैई कठैई अबार ताई सवारिया निकळै। गाजा बाजा बाजै। रावण, मेघनाथ अर कुम्भकरण रा लूंठा पूतळा बणाइजै नै जळाइजै। जागां जागां इण ओसर पर मेळा भरीजै। मैसूर अर कोटा रौ दसरावौ रौ मेळौ अर रावण रा पूतळा जगत मे घणा जगचावां बाजै।

इण भात राजस्थान भरां भाखरां नै झरणा निरझणा रौ देस। प्रकृति री प्यारा-दुप्यारा फल भुगते हमेसा। फेर भी हरखतौ रहै स दैव नै देवै कुदरत नैं

आपरी अवखाई पीड़ री भेव। जुद्धां मे गनीमां सूं लड़ै। खेता में करसणी बण कुदरत रा कोपा सूं भिड़ै। अकाल-दुकाल में वार-वार पड़ै, लड़थड़ै, आखड़ै पण फेर भी मरदानगी रै साथै विपदा रा बळाइकां सूं अड़ै। पड़पड़ नै भी हळ खड़ै अर कुदरत सूं लड़ै फेर लड़ै पण गडोळिया न पड़ै। आ इण धरती री तासीर अर टोटा घाटा मे भी आपरी खुशी री ठरको गालै अर वार त्यूंहारा पर आणंद री अपगा-सी बहावै अर दानी मानी री भांत मोद मनावै। दुरभाग रा दंत री दाढा उपाड़ नै सुख री लहरा मे झूमै। इण रीत राजस्थान पैड पैंड पर प्राक्रत प्रिसणां री प्रतना रो पैमाळ करतो लखावै अर वरखा रुत रा गीत उगरावै।

राजस्थान मे चौमासा रा त्यूहार हरियाळी रुत बहार लेय नै आवै अर सगळी जीवाजूंण नै हरखावै, पड़पावै, अळमावै' पंगरावै अर आणद रा अरणव नै सनेह सरितावां रा नीर सूं भरावै।

महफिल अर मुजरो

□ डॉ० जयचन्द शर्मा

आजादी सूं पैली इण देस रो राज-काज अंग्रेजा रै हाथा माय हो। अंग्रेजा रे हुकम सारू अठै रा राजा-महाराजा, जागीरदार, ठिकाणेदार अर नवाब आपरी रियासत रो काम-काज चलावता। ठाला बैठया ठिकाणेदार अर रईस नाच गाणै री महफिलां करावता अर आनन्द उठावता। राजा-महारावा री देखा-देखी अर उणारी बराबरी करणै रो चाव अठै रै सेठ-साहूकारां नै भी हो। इणारै घरां माय भी मोकै-ठोकै महफिला रा मजमां जमता। इण आनन्द माय हिन्दु अर मुसलमान रो भेदभाव नी हुवतो। गांवरा सगळी जात रा लोग इण रो आनन्द लै सकता। रईसां री महफिल रो जलसो ब्याव-सावै रै मोकै ईज हूवतो जद कै राज-दरबारां माय दूजै मौकै भी महफिल-मुजरा हुवता रहता। जिया-तूवै राजा नै राजगादि सूपणै रै मोकै, कंवरां रै जलम माथै, राजा अर कवरा री बरस गांठ रै टेम, दूजै राजा-रईस री मेहमानदारी सारू अठै तांणी कै छोटो-मोटो शिकार मार र लावणै री खुशी माथै भी महफिल जमती।

आज जमानो बदलगो है। महफिलां रै बदले नाच गाणै रा प्रोग्राम मच माथै हुवण लागगा है। नाच गावणै रो धन्धो करणै आळा नै ऊंची निजरा सूं देखण लागगा है जद कै उण जमानै मांय इनानै ओछी निजरां सूं देख्या करता। महफिल री सगळी कलावां मंच माथै सजधज'र आवण लागगी है। कोठै री कला

मांय भोत सुधार हुग्यो है। नाच-मुजरां रो नांव बदलर संगीत-संध्या, गोष्टी, सभा, सम्मेलन अर प्रोग्राम रै नाम सूं जाणन लागगा है । क्यूं कै आज मंच रो जमानो है।

मंच री बुराई

एक जमानो हो जद मंच माथै नाच-गाणै आळा नै भोतई बुरो मानता । महफिला री तवायफा भी इण नै ओछी निजरा सूं देखती । महफिल रो नाच-गावणों ऊंचे रईसां अर राजावां रो मानीजतो अर मच री गणिकावां नै पालतू अर ओछै घरा री तवायफ मानता । इणी कारण उण जमानै मांय नाटक मण्डल्यां माय औरता रो पार्ट पुरुष ईज करता । पुरुष पात्र औरता री भूमिका भोतईज आछी तरियां निभावता । देखण आळा नै ओ भरम वण्यो रैतो कै कठैई आ औरत तो नी है । इण भांत महफिल आळी गणिकावां आपरो स्तर ऊंचो मानर मंच माथै नी गावती । धीरे-धीरे जमानै रै बदळाव रै साथै कई नाटक मण्डल्या मांय औरता भाग लेवण लागगी तो उणनै दूजी गावण आळा री गाल्या सुणनी पड़ती । उणरी बेईज्जत करती अर आपरी महफिल माय सामल नी करती । मच री कळाकारां री उण टेम आ इज्जत ही । महफिल रो मान-समान हो । आज आ बात नी है । आज महफिल अर मुजरां नै ओछी निजरां सूं देख्यो जावै । आ बात आज रा मिनख कांई जाणै ।

मुजरा रा कलाकार

उण जमानै माय मुजरा रा आयोजन तो हर शहर मांय आये दिन हुवता रहता । गावण आळी रै घरा पर रईसा रै प्राईवेटमहल-मालिया अर चौबारा माथै अै चलताईज रवंता । इण मैं गावण आळी गणिकावां ईज जादा हुवती । पुरुष गायक नै भोत कम बुलाता अर उणरै गाणै रो इनाम भी भोत कम हो तो। फेर भी गाव-गांव अर शहर-शहर माय गवैया आपरा साज-बाज लेयर घूमता दिखता इण भांत मुजरो चालु प्रोग्राम रो रूप हो अर महफिल स्थायी । मुजरै रा कळाकार इण प्रोग्रामा नै भी आपरी शान-बणाई राखण नै इणनै महफिल ई ज कंवता । उस्ताद लोग कंवता मुजरो बजायर आया हू । गावण आळी कंवती मुजरो करण नै जाणो है अर रईस कंवता कै आज फलाणी तवायफ रो मुजरो कराणो है । इण भात मुजरो करणो, कराणों अर बजाणै रै नांव सूं जाणो जावतो ।

मुजरै रो अर्थ

राजपूता माय मुजरै रो अरथ नमस्कार सूं होर आज भी है । वै एक दूजै नै मुजरो करूं सा री भासा सू सम्मान देवै । जियां-म्हारो मुजरो रावजी नै अरज करीज्यो, म्है आपनै मुजरो करूं सा, आदि । संगीतकळा माय भी मुजरै रो सांचो अरथ सिलाम करणै सूं है । नाचण गावण आळी आपरी कळा रो प्रदर्शन

करणै सूं पैली सुणन आळण नै हाथ रूं नमस्कार (सलाम) करर फेर गावती । नाच मांय तो सलामी रै नांव सूं आज भी रचनावा नाची जावै है । बडी सलामी अर छोटी सलामी रो तोड़ा नाचर आगै आपरी कला रो करतब दिखावै । इण भात मुजरो करणै आळी री भावना भी संगीतकळा मांय भी नमस्कार सूं ई ज है।

महफिल नांव रा परचार

महफिल रो नांव आपणै देस मांय मुसलमानां रै साथै आयो । फारसी भासा मांय महफिल रो अरथ इण भात है – बै लोग 'मय' शराब री बन्द बोतल नै कैवै । बन्द बोतल जद खोलदी जावै तो उणनै शराब कवै । सरू-सरू मांय मुसलमान रईस महफिल जमावता अर मयखानै मैं जमता । मयखानै मैं पांच-सात भायला भेळा हुयर शराब पीवता तो उणनै महफिल कैवता । इण री महफिला मांय नाच-गावणों नी हुवतो । शराब पीवणो अर उण रो आनन्द लेवणो ई ज महफिल हो । उण महफिल मांय कई रईस आपरै शेर-शायरी सू मनडै री उभास मिटावता । शेर-शायरी री बढ़ोतरी देखर कई गवैया उणारी कमजोरी समझर उठै आपरै साज-बाज लेयर पूगणा चालु हुगा । अर बै महफिलां शराब रै साथै नाच-रंग री महफिलां बणन लागगी । कळाकार और आगै बढ़या अर उण रईसा री कमजोरी रो पूरो लाभ उठायो । उणा माय गणिकावा भी जावण लागगी अर शराब री मनवार उणरै हाथां सूं हुवण लागगी । ऐय्याशी रो दौर बढ्यो अर महफिल रा रईस इण गणिकावां रा गुलाम हुवण लागगा । बादशाह अर नबाबां री रईसी री पीछाण इण ...

हिन्दू राजावा भी आपरा

अर ठिकाणैदारां रो ओ ...

गरीबां रो शोषण हुवण ...

जमती गई अर प्रजा आ...

मांगिलक महफिल

राजा री जद मति बदळ जावै तो उणरी रिक्छा देसरा समझदार अर ऊचे समाज रा लोग करै । महफिल रो जिको सरूप मुसलमाना अर हिन्दु राजा-महाराजावां दियो उणने शुद्ध सात्विक अर मांगलिक सूरप इण देसरा सेठकारां दियो । इण नै जीवन रो एक जरूरी अग मानर आपरे मगळ काम रै साथै जोड़ दियो । ब्याबा शादी रै टेम महफिल करावणी अर लोगा मांय कळा रै साचे सरूप नै जावतो राखयो । देस री ऊचे सूं ऊची गायकां ने बुलायर उणरो गाणो सुणणै अर लोगां ने सुणाणे । इण मां गावण आळा दो भांत री हुवती । एक कच्चो गाणो करण आळी जिणसूं सगळा राजी हुवता अर दूजी पक्की राग रागन्या गावण आळी । इणरी गायकी सुणर उठै रा गवैया, बजैवा अर ऊंचा संगीतकळा रा

शौकीन राजी हुवता । सेठा री वाह–वाह रैं माथै उनारी बड़ाई हुवती अर संगीत कळा रो आनन्द भी लोग उठावता । अै महफिलां दो भांत री हुवती । एक चालु अर दूजी स्थायी ।

चालु महाफिल

ब्याव रैं मोकै हाथ काम रे दिन सूं आ महफिल चालु हुयर बरात जावणै रै दिन यानि निकासी रै दिन इण मांय गावणै रो काम पूरो कर देवता । आ महफिल भोतई समझदारी सूं बणाई जावती । ऊंचा-ऊंचा कारीगर आयर इणरी सजावट करता अर भांत-भांत री सजाई हुवती, जिया कोई इन्दर सभा हो। ब्याव रो काम निपटायर इण रो सारो साज-समान उठायर समेट लेवता ।

स्थायी महफिल

सेठ-साहूकारां री कळा सूं पक्कै लगाव री जाणकारी इण महफिल सूं मिलै । आज भी आपणै देस माय अै भवन महफिल रैं नाव सूं जाणा जावैं। इण भवन नैं केवल नाच-गाणै रैं काम मांय ईज लेवता । दूजैं काम रैं वास्तै इण नैं छूवता ईज नी । अै सजा-सजाया पक्का महल जिण माय आच्छा सूं आच्छा कारीगरा री कारीगरी रा चितराम करयोड़ा, झाड-गिलास अर कीमती कांच अर तसबीरां सूं जडयोडा नैं देखर देवराज इन्दर री सभा रो सो रूप देखण मांय आवै।

मागलिक महफिला मांय देवतावा रो वासो मान्यो जावैं। भगवान गणपतिजी री स्थापना अर पूजा रैं पाछि दूजा काम हुवता । राज दरबार री बणगट री जूंयपूरं नाप-तोल सूं इण नैं वणयर सारा हूक राख्या जावता । गावण आला रैं बैठण री जिग्या, बीचु बीच हुवती, उणरैं सामी बीनराजा अर उण रैं परिवार रै लोगा रो स्थान हुवतो । जीवणै पासै गांवरा सेठ-साहूकार अर ऊचैं दरबै रा लोग बैठता, बांयी तरफ गाव रा पण्डित, विद्वान अर इणी भांत रा लोग बैठता, लारलो पासी दूजैं समाज रा सगळा बैठता । औरता रैं बैठण रैं खातर ऊचैं बरामदो जाली-झरोखां सूं बणायो जावतो जिणमूं पड़दैं मांय रेवण आळी औरता बैठर नाच-गावणो देखती अर सुणती ।

महफिल चालु हुवणै रैं साथ पान, सुपारी, इलायची, मिसरी, बीडी, सिगरेट, लूग, अत्तर, आदि भांत-भांत री चिजां सूं मनवार करी जावती । इण महफिलां मांय शराब नी चालती अर नैं कोई ओछी वाता हुवती । गावण आळी नैं पैली सूं हुकम कर दियो जावतो के शुभ-अशुभ रो ध्यान राखर गीत गाणा है । अमगल सबद रा गीत रोक दिया जावता । महफिल रो ओ सरूप आज नी है पण उण रईसा रा बणायेड़ा बड़ा-बड़ा भवन महफिल रैं नांव सूं आज भी उण जमानैं री याद दिलाय रया है, जठै सगीत रो उजळो सरूप इण भवनांमाय सुणनैं अर देखण

नै मिलतो। आज रा मंच भी भरत, मुनि री परम्परां सूं दूर हुयर विदेशी मचां री नकल करणै लागगा है। इण मंचा री कळा आपणै काळजै माय नी उतर र ऊपर ई ऊपर चक्कर काटती रैवै। मंच रा प्रोग्राम करावण आळा दलाल आपरी मजुरी करण नै किणी स्वर्गलोक गयोड़ै कळाकार री सूची बणायर उणा रै नांव सूं कमाई करै। आज मंगल गीतां री जिग्या मृत्यु सगीत गायो जावै। जिण नै सुणर देस री हवा बदळगी अर कळाकार री जिग्या कलाबाज जन्म लेवण लागगा। अमर गाणो सुणनै रो जमानो बीतगो अर चालु गीतां रा आयोजन हुवण लागगा जिण सूं कळा रो साधना पक्ष हटर आवणै आळी पीढ़ी नै मृत्यु संगीत रो पाठ पढाणै रा साधन जुटाया जा रया हैं। इण सूं कला अर कलाकार दोना नै खतरो है।

कूट काव्य में भक्त कवि पं. मगनीराम साकरिया

□ डॉ० भूपतिराम साकरिया

सस्कृत सू लगार राजस्थानी ताई कूट काव्या री रचना-परंपरा घणी समृद्ध रैयी है। भगवान व्यासजी, महाभारत मे सैकडां कूट पदां री रचना कीवी है। राजस्थानी साहित्य मे अैडा पदां री कमी कोनी। कूट रा घणा अरथा (1. कूड; 2. भाखर; 3 कपट; 4. ढिगलो; 5. चिढ) माय सूं अेक अरथ ओ भी हुवे के-बो काव्य जिणरो अरथ वेगो समझ मे नी आवे। अैड़ा काव्य आकरा घणा हुवे ने इणांरा अरथ काढण मे आंपणी बुद्धि री कसौटी हुवे। आकरा अरथा रे कारण रसानुभूति मोड़ी हुवे ने ओईज अेक कारण है अैड़ा काव्या ने श्रेष्ठ काव्यां री गणतरी मे राखण सारु विद्वान थोड़ा आगा-पाछा हुवे। दूजीकांनी अैडा काव्यां सूं कवि री भाषा ने साहित्य री खमता रा दरसण हुवे। इणरे सागे सागे कवि ने पौराणिक कथावा रो ज्ञान भी घणो जरूरी है। दूजा शब्दां में इयुं कह सकां के अैडा काव्यां री रचना वास्ते कवि रो बहुज्ञ होवणो अेक आवश्यक शरत है। कूट काव्य कोई काव्य विधा कोनी, छतां इणरो महत्व ओछो कोनी। अे काव्य सैंग जीवण मांय प्रसरियोडा रहवे ने जीवण रो सगळो इतिहास इणा मे छिपियोडो हुवे। बुद्धि रो जैड़ो विकास कूट काव्यां सूं हुवे, वैड़ो किणीई विषय सू नी हुवे। मनोरंजण री तो अे काव्य खाणईज समझो।

कूट काव्य कई भांत रा हुवे ने कविगण आपरी रूचि ने इच्छानुसार वणांरो प्रयोग करै :-

1. सगपण बतावणवाळाः- जिके अेक पछे अेक शत्रु, मित्र, पुत्र, पत्नी, वगैरा शब्दां रे मारफत सगपण बतावता इष्ट अरथ पर जावेः-

जीव[1]-सुता[2]-सुत[3] तासु सुत[4], ता सुत[5] री सुत[6] सोइ।
ता सुमिरे ते बुद्धि वर, विमल कविन री होई॥

(1. जल, 2. कीच, 3. कमल, 4. ब्रह्मा, 5. महादेव, 6. गणेश)

2. संख्यावाची वाळाः- इण कूट काव्यां रो प्रयोग घणकरो संख्या बतावण सारु हुवे. अे भी दोय भांत रा हुवे :- (i) काव्य री निर्माण तिथ बतलावण वाळा

वरसि अचळ[1] गुण[2] अंग[3] ससि[4] सवति,
तवियउ जसकरि स्री-भरतार। —वेलि

1. अचळ-पर्वत (आठ) 2. (गुण-तीन) 3. अंग-वेदांग (छः) 4. ससि (एक)—संवत् 1638।

दूजो- (ii) जिणमे संख्यावां रे साथे आडी हुवेः-

चरण अठारे,[1] जीव छ[2], बोली बोले तीन[3]।
पंडत वोहि सराहिये, आखर लावे चीण॥

1. (मीन की, मोर-छः पग; घोड़ो, चील-छः पग; सारस, हाथी-छः पग)
2. (छ. जीव-बिल्ली, मोर, घोड़ो, चील, सारस ने हाथी)
3. (मीनकी ने मोर-अेक तरै री बोली,
घोड़ो ने चील-दूजी तरै री बोली,
सारस ने हाथी-तीजी तरै री बोली)

3. आख्यान वाळा :- इंणा मे कोई कथा रहवे के पछे कोई प्रसंगः-

सिव-सुत-माता नाम जो आखर चारि सुदेश।
युगल मध्य ने छोड़िके, लिखिबो करो हमेश॥

(शिव सुत=गणेश, माता=पारवती। पाती=पत्र। अेक प्रोषितपतिका नायिका आपरे पति री गैरहाजरी में पति ने कागद लिखण री अरज करे)

सिंह गमन, पुरुष वचन, कदलि फळै इकवार।
तिरिया तेल, हमीर हठ, चढ़ै न दूजी वार॥

(रणथंभोर रा राजा हमीर री प्रतिज्ञा इण काव्य रो मूल प्रसंग है)

4. आडी वाळाः- इंणा मांय आडियां रहवे ने आंपांने उणांरा जवाब देणा पड़े :-

है कुंवारि, पति संग में, पिता भवन कूं जाय ।
तीन लोक कर पर धरे, मंद मंद मुसकाय ॥

(जानकीजी जिका अबार तांई कंवारा है, पूजा करयां पछै त्रिभुवन नाथ (श्रीराम) री मूरत सिंघासन माथे बैठाड़'र, आपरे हाथां मे लेय'र महलां जाये है)

5. सवाल-जवाब वाळा :–

सवाल:– वंसी वाजी श्याम री, मोहे तीनों लोक ।
जो तीनों मोहे नही, रहे कौण से लोक ॥

जवाब:– इक वंसी मोही नही, दूजे नंदकिशोर ।
तीजो सुर मोह्यो नही, रहे नंद री ओर ॥

6. शुद्ध साहित्यिक :– अंठा कूट काव्यां मे शाब्दिक चमत्कार मिळै ।
पूत सपूत, सपति भारी, अंग अरोग सुढार ।
रहे दुखिया क्यूं कामिनी, पीवे करे बहु प्यार ॥

(अठै 'बहु प्यार' श्लेष रो चमत्कार है । पति अेक साथे घणी लुगायां ने प्यार करे)

सारंग नैनी सारग वैनी, सारंग लिये कर सारंग को ।
हर-हार-अहार सो भेट भई है, छिपावत सारंग-सारंग को ॥

(इण छंद में 'सारंग' शब्द रो चमत्कार है । 'सारंग' रा क्रमशः हिरणी, कोयल, स्त्री ने दीपक अरथ है । हर=महादेव, उनका हार=सर्प । सर्प का भोजन=हवा)

इण परिप्रेक्ष्य मे अबै प. मगनीरामजी साकरिया रे कूट काव्यां री तरफ नजर गेरां, पंडितजो आपरे काव्य 'वर्ण वत्तीसी' में कूट काव्य रा दरसण कराया है । इण में कवर्ग, चवर्ग ने टवर्ग रा पे'ला चार-चार वर्ण (12), तवर्ग ने पवर्ग रा पांचू वर्ण (10), चार अन्तस्थ ने चार उष्म, अेक संयुक्त वर्ण ने अेक बार फेर 'ल' रो प्रयोग कीनो है । 'ल' रे दूजी वार प्रयोग ने लेय'र प्रश्न हुय सके । खरी वात तो आ है के ओ वर्ण 'ल्ल' लिखीजतो ने वो आधुनिक 'ळ' रूप गिणीजतो । आंपणी कोश परम्परा भी आईज ही ने गुजराती रे कोशां मांय आज ई इण परपरा रो निर्वाह हुवे है ने वर्ण क्रमानुसार इणरी जगा 'ह' रे पछै है । पं. श्री मगनीरामजी आंपणी इणीज परम्परा ने चालू राखी, उणां कुल वत्तीस वरणां रा वत्तीस दूहा, अेक मंगलाचरण रो ने तीन प्रशस्ति रा दूहा—इण तरै सूं कुल वत्तीस दूहा लिखिया । अे सगळा दूहा भक्ति रस सूं तर है ।

प्रशस्ति रे तीन दूहा मांय सूं अेक संख्यावाची है, जिण सूं पतो लागे के ओ ग्रंथ कवि किसा संवत् मे बणायो हो :—

संवत व्योम रू नाथ वसु, शशि नभ द्वितियक जान ।
कृष्ण अेकादशी तिथि रच्यो, वारगार प्रमाण ।।

व्योम—एक; नाथ—नव (7); वसु=आठ; शशि—अेक ।

आंक मिळ जाणे रे बादगिणती जीमणे हाथ सूं प्रारम्भीजे इण तरै सूं इण काव्य री रचना संवत् 1871 (सन् 1834) मे हुई । समय-सूचक इण आखरी दूहा रे पेलड़े दूहा में कवि आपरी न्यात, गांम रो नांम, पोता रो नांम, जिण संप्रदाय में दीक्षित हा, उणरो नाम आद रो उल्लेख कीनो है—

मारू ब्रह्म, घर व्याळपुर, मंजु निरजनी छाप ।
मंगनीराम सुग्रथ कृत, हरण शोक संताप ।।

[न्यात सूं मारू ब्राह्मण, रहवासी व्यालपुर (आधुनिक वालोतरो, जिल्लो बाड़मेर) रा, निरंजणी संप्रदाय मे दीक्षित ने खुद रो नांम मगनीराम]

बीजा सगळा दूहा, सरापण बतावण आळा दूहा है । घणी जगा अैड़ा शब्दां रो प्रयोग हुयो है, जिका संख्यावाचक है ने कठैई-कठैई आख्यान आळा शब्दां रो प्रयोग भी हुयो है । अे सैंग दूहा अेक सूं अेक क्लिष्ट है । बुद्धि री घणी कसरत पछे जद इणारो अरथ समझीजे तो अैडो लागे, जाणे गढ जीत्या; अनेरो आणंद हुवे :—

कक्का कमला-पति भजो, पशुपति रिपु तज संग ।
महिसुत मे सशय नहीं, अरु कृतान्त को भंग ।।

[कमला रे पति विष्णु ने भजोला तो पशुपति अर्थात शिव अर शिव रा शत्रु अर्थात कामदेव (काम) रो जद संगत छोड़ोला तो महिसुत अर्थात् मंगल (कल्याण) री प्राप्ति हुवेला ने साथे-साथे कृतान्त (काळ) रो नाश हूसी]

चच्चा चंद रिपु वर्ण धुर, हरिसुत अत पिछाण ।
अयन अंक वसु याम रट, कट अघ हो कल्याण ।।

चद्रमा रो रिपु राहु. राहु रो धुर (प्रथम) वर्ण 'रा' तथा हरिसुत (प्रद्युम्न=काम) इणरो आखरी वर्ण 'म'. (अयन=दो) इण दोनों वर्णों ने मिलावण सूं 'राम' बणे. इणने वसु (आठ) पो'र रटण सूं पापां रो नाश हुवे ने कल्याण हुवे.]

ठठ्ठा ठाकुर नग सुता, ता ठाकुर उर धार।
रति-ठाकुर तज लाछ को, ठाकुर मिलत न बार।

[जो रती-ठाकुर (कामदेव-काम) ने त्याग'र नग (पर्वत) सुता, पार्वती रे ठाकुर (शिव) रे ठाकुर 'राम' ने हिरदय मे धारण करणे सूं लाछ (लक्ष्मी) रे ठाकुर (विष्णु) सू मिलण मे जेज नीं लागे] इण छंद में 'ठाकुर' रो पुनरावर्तन सरावण जोग है इणमें यमक ने पुनरावृत्ति दोनूं अलंकार है।

बब्बा बहिन जु सीप की, ता बंधु रथ भूप।
ता सवार सुत यान सम, जेन भजे ब्रज रूप ॥

[जिके लोग भगवान कृष्ण (ब्रजरूप) ने नीं भजे, वे सीप री बैन (लक्ष्मी रे भाई (चंद्रमा) रे रथ (हरिण) रा भूप (सिंह) री सवारी (देवी) रे पुत्र भैरव रे वाहन (कूत्तरा) रे समान है।

लल्ला लकापति-तिया, तासु जनक रखवार।
ता पितु-रथ रिपु गुरु अशन, पति पितु धन उरधार ॥

[लंकापति (रावण) री तिया (मदोधरी) रा पिता (मयदानव) रा रखवार (रक्षक) अर्जुन रे पिता (इंद्र) रे रथ (ऐरावत हाथी) रा शत्रु (सिंह) रा गुरु (मीनकी) रो अशन (भक्ष्य-ऊंदरो) रे पति (गणेश) रे पिता (शिव) रा धन (श्रीराम) ने हिरदय मे राख]

अेक दूहो कवि संयुक्ताक्षर 'क्ष' सूं ई बणायो ओ अपेक्षाकृत घणो आसान है :-

क्षक्षा क्षिति पति सुत सखा, करतहिं उर अभ्यास।
बल न चलहि कीनाश को, वदत वेद हरिदास ॥

कवि ब्रजभाषा रा आछा जाणकार हा ने वांरा लिखियोड़ा ब्रजभाषा रा पद, कवित्त ने चित्र काव्य तो घणा उमदा है। अैड़े भगत, कवि, विद्वान रे शांत होणे पर वांरा शिष्य ने मित्र श्री कस्तूरचंद जी सेवग छाईस मरसिया लिखिया, जिके डींगल रे मरसिया साहित्य री अेक अणमोल निधि है :-

संसकिरत रो सार, भेद खट ही भाखा रो।
खटमत वाळी ख्यात, सरब वेदां साखा रो।
अलकार री जुगत, जुगत जबरी जोखां री।
ऊंडा अरथ विचार, निपट ख्याता नोखा री।
आगमां निगम ग्रथा उदधि, सारो भेद सुधारियो।
क्रोड़ान क्रोड़ कविता-कळा, हेक मगन पर वारियो ॥

राजस्थान रो ग्राम्य जीवन अर भाईचारो

☐ सा० महो० नानूराम संस्कर्ता

राजस्थान गांवां रो लूंठो प्रान्त है। इणं मे चाळीस हजार नेड़ै गांव बोलीजै। वणां में करीब ढाई करोड़ जित्ती जनता गांव जीवण री जुगत जोत, रसै-बसै है। वणां लोकी बहोत्तर प्रतिसत खेती रो किसाणीपो करणै वाळी है। लोग अन्न उपजावै अर वखत रा वधका कारज सारै है। खेती खड़िया आदमी उद्योग-धंधा, पसु-पाळण अर आपरा पैसा किसब ही डाढ़ा आछा उजाळै है।

गांव रैवास सुभावी संजीवण; मिनखापै पुखता अणमै राखै अर बेकार नीं रैवै। ऊजळा सतरा घर, लामा-चौड़ा चौगान, जंगळ'र खेत, खुली पवन रा परमळ फटकारा, भसावटै उठ जाणै अर ताजै जळ न्हाणै-धोणै जैड़ी स्रम सारणी री सारी आब-ओपाव गावां वसणियां माणतां रै ही हाथ लागती वळ पड़ै। केळै रा थाम सा कौल भरीला डोल, ऊजळा मुख अर काया कूंतजी दैवत दात गांवांळा लोगां रै ही लैः बस में फबै है।

हवा ध्यानणी, अंधेरो-तावड़ो, धणी-बरसाळो, सांझ-सवेरो, धरा-गिगण, सूरज-चाद आद सैग देव बठै सत्ती उदारता वखेरै है। गांवां नै प्रकरती कोरी सद्धो

अर सेळी छिब सूं ही नीं छकावै, उवां मिनखापै रै फोड़ै तोड़ै अर आणंदोमाव मे निजू निवत सूं रळ-मळ रैवै है। मूक उथळा, धीरजू-बांध, अलख आस्वासनां ही गांवां भोमी री या वत्ताई है के ऊंडे थाग नीर अर चोखा-तीखा खेतां रा तीर गांवां रै मानखै बेई परालब्ध मानीजै। इयै ग्राम जीवण माथै रीझर ही तो बेमाता आपरी पतळी आंगळयां में तीखी पैंसलड़ी झाल'र मिट्टी नोकड़ी सूं कांच-कांकडा रो झीणो फूटराप कोरै-कसै; सरूप निखारै। बिदामी टीलां-सिझ्यालै सूरज रो सिन्दूरियो अनुराग, खेजड़ां री जाड सूं कढ़ता हिरणां रो हरखीलो बाग; दिन री चंचळ लू, रातरी भोळी चांदणी अर परभाती माधुरी परमळ री झोळी तथा रेणका रेत अर तीरथ रूप खेत-धाम है। जका में जाझरकै गोहीरा गिलारी अर टीटण गुरवाणियां मधरै धोरा मझ हर रोज पेट पलाणियां लिटफिट लीकपटोळिया मांडणा चितराम कोरै सजावै है। पाथरै खरळा मोटी-मोटी केलां, पीपल-बोरटचा, नीम-फरासां-जाळां री जोड़ मे लीप्या-पोत्या, ढूंढ़ा-पडवा, धोळी-लाल रा मांडणा, कोठी-कोठा तथा मोड़ा-दरूजां, बागर-बाड़ां, भीतां-धरकोटां छियां धार कुदरती सोभा सरूप वधकी विरादरी, संतोख धाप रै धन मनोविग्यानी मनां-ग्यानां, घर-गुवाड़ां नै कुदरती लूंठी देण है। सिझ्या रा झालर, संख, जीझ अर नगारा रळ'र अनेकूं सुर, संगीत उपजावै है। सांच-माच ग्राम्य जीवण विस्व प्रेम री सखरी पैड़ी अेवं जोरां वगतो प्रतख पुण्य परनाळो है। इणीं धरमी भावना अर सरळ संस्करती सूं छुलक-मुलक पळै पोखीजै है।

जठै लोगा री बुद्धि आंछी हवै-बठै ही सारी सुख सम्पति तथा धन-वैभव वगैरा रो विकास वधापो होवै अर जठै विगड़ायल बुद्ध हवै, बठै घणी विपदा-असुविधा आद कस्ट ऊपजै। गांवा सैंग सुखां रो मूळ कारण मिनखां रो मिलवा रूपणो तथा हेत-मिमतावळी सद बुद्धि ही है। गांवां रो लोग भाईचारै रो वरताव पाळै। वगतै बटाउवां रै हीड़ै चाकरी मे हेतुला वण'र एक हेलै भाज'र हाजर हो जावै। मिलणै-भिटणै रै साथै रूड़ो जीमावणो-जुठावणो ही घणो करा जाणै। चौनजरां हुता ही हुल हुल डग–पग–पग नाचणै लाग जावै अर उवां री रग-रग राजी हो उठै। धन भाग! धरा आया, मा जाया ज्यूं लागै। आया-गयां खातर घी-दूध री धार खूब चाले। मेहमान नै भगवान मानै। कोई भाईचारै सूं मांगै तो तन-मन-धन जैडी सैंग विदवी वस्त सूंप देवै। गांव वाळा मोटा फोड़ा भुगत'र सरणागत री रुखाली राख लेणी जाणै। निवळा री मदत, रोगी रो हीड़ो, लूला-लंगड़ा अर भूखां नै भोजन तथा दुखियारी मिनखां रो दुख दूर करणै मे फोड़ो भी पड़ै तो उवै नी धारै। वैः भलाई अर भाईचारै मे आघड़ा लीजै। गाया नै घास, कबूतरां नै चुग्गो अर उन्हाळै हिरणां वेगी गांव सूं दूर पाणी रा तगरा भरा देवै। गावा में मा-बैनावां कीड़ी नगरा सींचै अर कुत्तां नै गांवो गांव बोरा भरा-भरा रोटयां पोंचावै। जद ही गांवां री कमाई में बरकत अर सुख वरतीजै है–

सरवर सारू जळ रहइ, पुन सारू परविति ।
कर सारू कीरत रहइ, दिल सारू बरकति ।। (सं.)

गावां मे आपसी प्रेम घणो है । बठै पुत्र जलम सुख रो कारण मानीजै । आखै घरां री बाड़ां रा कांटा खडा हुय्यावै । भाईचारै रो गुड़ बंटै अर धेनड़िया गाईजै । विवाह रै मौकै दाळ गूघरी, नूतो-पांतो अर बान-जान री रीत प्रथा चालै । बेटी रै विवाह मे अेक दूजै री मितराचारी रा भात लागै अर जोई टोडिया तथा वेस दाना देईजै । भाई वीरां रै घरां सूं दूध रा गोहणियां भर-भर मैंढाळै घरा पुगावै; जकां सूं आमोड़ी बरात नै खीर-फलकां री जीमणवार रो सातरो सहारो लाग जावै । बेटै रै विवाह मे ही गांव रा मौजीज आदमी जान चढ़ै, पण सैंस सुगन भाई वध आपरा खास रुपया साथै लेय'र जावै । वैः अड़ी मौकै बीन रै बाप नै साजै; जकां सूं गांव रै भाईचारै री हरगिज हंसी नी हो सकै । मौत गमी रै अवसर ही मृत्तादमी नै भायप रै अरां सूं आया जाव जगत गत; काठ, नारेळ, चदण अर खोपरां अर्थी चसै । लारै परवार नै धीरज बळ सेती एक-दो टेम रोटी ले जाय'र जीमाई जावै है । गांव रा सारा लोग उवै घर आथण दिनगै मिलण नै जावै, खरड़ै वैठै अर धरम री बात विगत करता थका दुखनै मुळावै घालै । भजन-कीरतण में भेळा-भाग लेवै अर उवै घर रा पाणी-पीसणै जिसा सारा काज पीसै सूं नी, भाई-चारै सूं सुघरै-फळापै । मृतात्मा री अस्थियां चुग'र दूर देवै अर गांव रो कोई एक आदमी गंगाजी जावै जद उवो मिनख दूजां रा फूल ही ठंडै पाणी घाल आवै । इस तरा ईस्वर विश्वास सूं ग्राम जीवण रै भाई चारै मे महापुण्य रा काज हवै ।

गाव कहूं या अमरपुर, देवां नरां निवास ।
भाग भलो मरु भोम रो, वसिया वस्ती वास ।।

गांवां रा खेती करणियां घरां मे सैंग सांज पूरता आदमी नी हवै । खेत वीजणै खातर आखा आदमी ऊंट-बळद अर ट्रेक्टर नही बपरा सकै । अैड़ा हळ वायरा मिनख वरसा वरसै जद भाईचारै रै गुण, आंगड़िया रैय कर खेत बीजै अर दूसरां मालकां रै हळ लारै हाळी वण'र तीन दिन हळवावै । जद चौथे रोज आंगड़िये रो खेत वीज्यो जावै है । घणी-बिरिया वीज ही मालक साजै । पण हळ बांवतो हाळी हरेक खेत में आपरो स्वस्ति गाण तेजो तो अगीरै ही है । पछै निनाण रो काम ही जरूत वेलीपै मिल जुलर पूरो करै । फसल रै वखत तो कोरा काम ही नही, गांवां में उधार-पुधार ही चालै । धान-चून, घास-फूस रुपया-पइसा अर धी-दूध तांईरी चीजां अड़ी मोकै रळ वरतीजै है । "वड़सी गोडा घड़सी" घड़सी मे अदळा-बदळी रै समै सूं अेक दूसरै रा सामूही कारज पूरया जावै । पण खेता रै मोटा कामां वास्तै लूंठी प्रथा ल्हास री देखवा जोग है । ल्हास में मिनखां

रा टोळ, राम भणंत अर ऊंची ढवाज सूं वाहवाही देवता थका मोकळै उछाव सूं काम करै। राम भणंत में नळ पीगळ, गोपीचंद-भरथरी. ढोला-मरवण, राजा चन्दर सिंध, बाघरा, राणी जैमती, रामघनियो, लालुड़ो लुहार अर मूणे खतरी जैड़ा मोकळा कथण भणीजै है।

काळी रे कळायण गोगा ऊमटी,
ऊमट आयो रूड़ो मेहड़ो !
आडी नाडी रे गोगा सैः भरी,
भरियो गोगाणो तळाव जी !

इयै आयोजण मे खनलै गांवां रा कामूं खईस मोटियार भेळा आवै अर घणी ताकीद सूं वाह वाही देवता हुया आखो दिन तेजी सूं काम करा जावै। आयण उण लोगां नै खेत रो धणी सीरै-लाफसी जैड़ो तरोताजा माल जीमाय'र विदा करै। धान निकालती विरियां गाहटै वेगी ऊंट-झोटा ही भाईचारै सूं काम लिया-दिया जावै है। छोटा गावां मे कूवां सूं पाणी काढ़ पीवण रो भाईचारो "स्यारी" नावै हो तथा ढाण्यां में ओजूं चालै। घरा री गिणती मुजब पखवाड़ै या महीणै मास सूं हरेक वासीन्दगान नै आगळयां माथै चेतै राख'र आपरी स्यारी काढ़णी पड़ै। स्यारी काढ़णियो कुटुम्ब आपरै लाव-कोस अर ऊंटां-बळदां सूं कूवो जोतै अर अेक-दो रोज तमाम गांव नै स्यारी सार पाणी पूरवै। नानकिया गांवां में-

कूवो दरसण ग्यान - योग भगती है वारी,
सांख्य नाळ गभीर - निरीस्वर, सेस्वर भारी,
मीमांसा भर कोस - सुमंताजो जळ बांटै,
न्याय जथारथ नांव - भेद भावां नीं खाटै,
वेदान्त नीत गुरजात है - मुख्य आचार्य वारियां।
पोसाळ पणघट सरब छात्र - सिख्या चोखी स्यारियां।

ढाणी रूप गांवां मे स्यारी री तरां पसु चरावण री बारी ही किफायत अर भाईचारै रो कारण वाजै। अैड़ा सैग कार डील खोरसै हुवै। हरेक बारी वाळै घर सूं एक आदमी नै एक रोज गांव रै पसुआं रो गुवाळियो वणनो पड़ै। दो गायां री अेक बारी तथा भैस री ही बारी निकाळणो पड़ै। पण बाग मे घणा पसु हुवै जद ही बारी मोड़ी आवै। रोही रा रीछ गुवाळिया खोड़ा मे अकेला खड़ा-चिम्मूड़ी, लालकेशो, वखतोजी मंवर अर जवारजी जैड़ा लोक प्रेम रा गीत डोरी नांव सूं गांवता रै वै। केई स्याणा गुवाळिया व भूतैजी रो सिलोको, भोमियैजी री छांवली अर माताजी रा छंद गांवता थका आपरो अेकलियो मनोरंजण पूरो कर लेवै है।

पारसिमैं पानाळो ओ माताजी मा,
पींपळियो सो लगायो ।
झिलमिल पेड़ सवायो अे जीवण माता ।
इण पीपळ नैं सेवग मेरा दही दूधां सिंचायो
झिलमिल पेड़ सवायो अे जीवण माता ।

केई बैठा अलगूंजा अर बंशरी वजाय'र मस्ती मारता बारी काढ देवैं । जंगल में घणा गुवाळिया अेकामेक-रोळगिदोळ हुज्यावैं जणा "राई-राई, लूंणिया-घाटी, उत्तो-घुत्तो, चिबदड़ी, चोर कूंडियो, लाला-लिगत्तर, हडबळी, हडदड़ो, चरक चूंडी, खल्ला-खूंटी अर कांय-कांय जिसड़ा प्रेम भायप रा खेल खेलैं अर साथैं– "राई-राई-राई, रतन तळाई, कीनैं धमकाई ? "हडबळी रो हरियो चोर–चाबैं चिणा उडावैं मोर !" "मारदड़ी री मीठी मार- लाग्यां पीछैं होज्या न्हाला" इत्याद बाल लोक खेलां रा बोल बोलता जावैं जका सुण्या हरेक आदमी रो जी सोरो हुज्यावैं है । इणां रैं अलावा गांवां रा मंदिर, जगेरी, आसण अर तकिया भव्य भगती भावना सूं दैविक भाईचारो प्रगटावैं है । इणी धरमी स्थानां मे सगत-साधणा करणैं वाळा ऊजळा पुरख बडा ग्यानी, ध्यानी अर सचवादा हवैं । उणा रैं–

सील शरीरह आभरणु सोनइ भारिम अंगु ।
मुख मण्डणु सच्चउ वयणु, विणु तंबीळह रगु ।। (संकलन)

राजस्थानी साहित्य मांय भगतीरस

□ डॉ० जगमोहनसिंह परिहार

हिन्दी साहित्य रा तवारीख-लेखक समै-समै हिन्दी रै इतिहास लेखण मांय राजस्थानी साहित री महताऊ भूमिका रो हवालो दीयो है। सबसूं पैली, हिन्दी साहित्य रा इतिहासकार मिश्रबन्धु आपरी पोथी मिश्रबन्धु विनोद मांय ज्यां हजारां साहित्यकारां रो लेखो-जोखो पाठकां सामैं राख्यो है, वी मांय भी राजस्थानी साहित्यकारां री गिणती थोडीक इ, है। वां पाछै आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य रै इतिहास नैं आधुनिक ढाचे मांय ढालण री कोशिस करी पण हिन्दी साहित्य रै इं तवारीख ग्रंथ मांय भी राजस्थान रै साहित्यकारां नैं, न्यावपूरण जागा नी मिळ सकी। इ री खास वजै आ इ है कै रामचन्द्र शुक्ल, इतिहास सिरजण री बगत खास तोर ग्रियर्सन, तेसीतोर, जेम्स टॉड आद विदेशी तवारीख लेखक साहित्यकारां अर नागरी प्रचारिणी सभा, कासी सूं छप्योड़ी खोज विवरणीका नै, ई अहमियत दी। इं कारण, आ पोथ्यां रै वरणन-विवरणां नैं छोड़'र, राजस्थानी रचनाकारां रै बाबत कोई नवी नामावली, अर साहित्यिक रचना परगास मे नीं आ सकी।

आचार्य शुक्ल रै इण हिन्दी इतिहास ग्रंथ रै पाछै भी, साहित्य रै इतिहास री खोजबीण वाळी पोथ्यां लिखीजी पण राजस्थान रै भगती साहित्य रै खेत्र मे उल्लेखजोग काम नी हुये सक्यो। इंण कमी रै कारण दोहराया जावण वाला

नांव, साहित्यिक रचनावां अर तद तांई चावी वीर रस री पोथ्यां रै सिवाय नवो चांदणो नी होय सक्यो राजस्थान री भगती रो मतलब, लोग मीरा सूं लगा'र तसल्ली कर लेवता । इत्तो इ नी, दोहराए जावण वाळै वीर रस रै साहित्य रै परिपेख मांय इ, राजस्थानी भासा अर साहित्य रै मोल तोल री आ परखी बरकरार रइ । राजस्थान रै साहित्य नै, एक मातर वीर रस रौ मानणै री होड रो ओ सबसूं मोटो कारण मान्यो जा सकै ।

आ वात सांची है, कै किण इ भी प्रान्त या जगा रो साहित्य जुग री घट नावा री छब हुया करै । जुग–विशेष री घटनावां रो लेखो जोखो या तो तवारीखी ग्रंथां में मिळै या उण जागां रै साहित मांय, समाज रै अतीत नै, जोयो जा सकै । पण वीर रस रै ग्रंथां रै अलावा भगती रस रा अनूठा ग्रंथा री भरमार सूं आलोचकां रौ ओ मत फीको पड़ जावै कै राजस्थान मांय, साहित्य रै नाव माथै वीररस रै ग्रंथां रो इ, सरजण होयौ । अठै आ वात ध्यान देवणरी है कै राजस्थान री गौरव गुमेज वाली वसुन्धरा संत, सती अर सूरमा उपजावण मे अगुवा रइ है । सगुण भगती हुवे कै निरगुण सत साहित्य न्यारी ओलखाण राखै ।

राजस्थान में जठै तांई निरगुण भगती धारा रै साहित्य रै सर्जन रो सवाल है बठै संत साहित्य प्रभूत परिमाण मे लिखीज्यो । राजस्थानी साहित्य नै वीररस रो पर्याय मानण वाळा आलोचकां नै शायद इंण हकीकत री जाणकारी नी हुवैला कै सत कबीर नै छोडर सन्तमत रा सगळाई सम्प्रदाय राजस्थान माय इ जलमिया, पनपिया । सन्तां री वाणियां अर वां सूं थापित पंथ सम्प्रदायां रै व्यापक फैलाव रै कारण इ, आं रौ असर सगळै देस में हुया जाम्भोजी विश्नोई सम्प्रदाय, जसनाथी सम्प्रदाय, चरणदासी सम्प्रदाय, दादू पंथ, रज्जब पथ, लालदासी सम्प्रदाय, निरंजनी सम्प्रदाय, रामस्नेही सम्प्रदाय, अलखिया सम्प्रदाय, अर नवल सम्प्रदाय रो उद्गम राजस्थान मे इं हुयो । इंण लेख मांय राजस्थान रै सगुण निरगुण साहित्य रै परिपेख मे भगती रस री न्यारी-न्यारी विधावां नै उजास मे लावण री कोशिस करी गई है ताकी विद्‌वान अठै री ऊंची अर लूंठी भगती साहित्य रचना नै देख-परख, नै अन्दाज लगा सकै कै राजस्थान री धरती वीर सपूता रै साथै भगतां अर सन्तां नैं पैदा करण मांय भी अगाऊ रइ है ।

ईसा सूं पैली तकरीबन छैः सौ ईस्वी माय रिषी सिरोमणी वाल्मीकि रै 'रामायण' ग्रंथ प्रणयन रै सागैइ, भारत में राम भगती री शुभ सरुआत हुयगी । ग्यारहवी-बारहवी सदी मांय राजस्थान मे बण्या राम रा भव्य मिन्दर अठै रै जीवण माथै राम भगती रै बधतै परभाव नै दरसावै । 12 वी सदी मे बणेड़ै किराड़ू सोमेस्वर मिन्दर रै सिरै दरवाजै रै बारलै भाग रै कनै, रामायणकाल रै प्रसगा री कोरनी घणी लुभावणी है । आ चितरामा मांय सुग्रीव-बाली जुध,

अशोक-वाटिका में बन्दी सीता, हनुमान सूं अशोक वाटिका रो नाश, लंका-दहन अर भालू-वानर सेना सूं समदर माथै पुल बांधण री घटनावां रा चितराम मोहक अर चित्त नै हरण वाळा है। इं मिन्दर रै कनै इ, एक दूजै मिन्दर में लसमण री मूर्छा वाली घटणा दरसाइ गई है। भगवान राम रै गोडै माथै, माथो टिकाया लिछमण सोया है अर मूर्छित लिछमण खातिर हनुमानजी नै संजीवणी बूंटी रो पहाड लावतां दिखायो गयो है। आं रामायण कालीन चितरामां रो शिल्प अनूठो अर बेजोड़ है।

भगती भावना री प्रधानता वाळै मध्यकाल में ग्यान अर करम री जागो, हिरदै री निश्छल, निस्वारथ भगती नै मोलवान बतायो गयो। रामानन्द, भगवान राम नै साच सरूप, आणद सरूप, नै चित्त सरूप रो बखाण करतै, पळ पळ राम रै सुमिरण रो सन्देशो दीयो। अ राम अयोध्या रा राजा दशरथजी रा पुत्र हा। पिता री आग्या नै मानर राम आपरी पत्नी सीता अर भाई लिछमण सागै चउदा बरस रो बनवास भोग्यो। बनवास रै टैम अमानवी सगती रै परतीक रावण सूं राम नै जुध करणो पड्यो। आखिर माय सांच, धरम अर न्याव री जीत हुई। मरजादा रा धणी अर भगता रा हेताळु राम सकुसल अयोध्या पधारया अर रामराज री थरपना करी।

राम भगती रै इ जन जागरण रो राजस्थान रै साहित्यकारां माथै भी असर पड्यो। अठै रा साहित्यकार राम री भगती नै सुसाध्य बता'र ग्यान, भगती अर करम नै एकइ लक्ष्य तक ले जावण वाळा मारग बतायो। रघुकुल सिरोमणी रै जीवन चरितर सूं रीझर, लोक जीवण नै सांच, धरम, हेत अर मरजादा रै सतमारग माथै चालण री सीख देवण वाळा रचनाकारां मांय माधोदास दधवाड़िया, ईसरदास बारहठ, अलूनाथ कविया, पृथ्वीराज राठौड़, प्रभूदान मिश्रण, एकलिंग-नाथ आद रो नांव घणै आदर साथै लीयो जावै।

भगत कवि माधोदास दधवाड़िया सोळा सौ छंदां में 'रामरासो' ग्रंथ रो सरजण करयो। इण ग्रंथ में भगवान राम री सरस कथा रो गुणगान फबतो अर फूटरी भासा-शैली मांय करयो गयो है। राजस्थानी राम-भगती काव्य रै दैता महाकाव्य 'रामरासो' री अणगिणत खूबियां नै मद्दे-निजर राखतां, इण ग्रंथ नै डिंगल भगती रो बेजोड़ नगीनो केयो जा सकै। उदाहरण रै तौर परा सांच अर झूठ, धरम अर अधरम, न्याव अर अन्याव अर नीति अर अनीति रै बोध देवण वाळै राम-रावण जुध-वरणन री, अ ओळ्यां देखण जोग है, ज्यां में माधोदास री काव्य-चातुरी साफ झलकै—

मिलै सैन सूरिवां, रीछ वानर राकसां ।
मिलै वाण गुण मूंठि, मिलै पंखणि ग्रीध मंसां ।।
मिलै मोद अमरां, मिलै निसचरां अमंगल ।
मिलै काळ दहुकंद, मिलै साइक नभ मंडल ।।
सय रथ मिलै देवां सुरा, वीर मिलै वीरां वरण ।
सामिले ताभ त्रिहुं लोक सुख, मिलै राम रामण मरण ।।

राठौड कवि पृथ्वीराज री मानता है कै श्रीराम भगतां रा पालणहार अर दुस्टा रा संहार करण वाळा है। राम री किरपा सूं पाथर, पाणी माथै तिरण लाग जावै। भगत-वत्सल राम री महिमा अथक, अनन्त है–

सत्रहरां संघार, त्रिभुवन तू वड भीकमा ।
इवडो को आधार, दासां दशरथ दैवउत ।।
आइयो महिमा आण, ताहरि रघुकुल रा तिलक ।
पोत थयो पारवाण, दीखै दशरथ रावउत ।।

मध्यकाल रा शाकद्वीपीय ब्राह्मण कवि मंछाराम 'रघुनाथ रूपक गीता रो' नांव रै ग्रंथ में डिंगल काव्य रा छंद-अलंकार अर दूजी काव्य विधावा रै परिपेख मांय राम भगती री गंगा बुहाई है। डॉ० ग्रियर्सन इं ग्रंथ नै डिंगल-साहित्य रो उत्तम अर सिरै ग्रंथ बतायो है। उदाहरण रै रूप मे राम री सेना सू समदर नै बांधण री घटणा रै वरणन री ओळ्यां निजर है–

कमठ पर भार पड छिलै रथ कचरकां, मचरका सेस रा हलै माथा ।
लार लंगर लियो पदम दस आठ कप, सोय डर कूल वप जोस ताजा ।।
नाम रघुवीर मग काज तूणीर सूं, सोखवा नीर धनु तीर साजा ।
विकल जळ जीव लख जलध कर जोर कर, रूप द्विज हुय कह्यो राम राजा ।।
धार तुव नाम तिरवाय गिरधू पड़ै, प्रभु मो ऊपरै बांध पाजा ।

इण इ तरा, 'रघुवर जस प्रकास' ग्रंथ कवि किसना आढा री उम्दा राम भगती रचना है जिण मांय भांत-भांत रै छन्द-अलंकारा में राम-कथा नै चित्रित कर, कवि रूपाळी चित्र काव्य कला रो, डिंगल-साहित्त मांय दरसाव करायो है। चित्र काव्य परम्परा रा उदाहरण संस्कृत अर ब्रज भासा मे तो मिलै पण डिंगल-काव्य माय इं चितराम-कला नै जलम देवण रो श्रेय किसना नै इ, है।

राम रै साच, शील अर मरजादा सू आपूरित गुणां सूं राजस्थान रा जैन कवि भी प्रभावित हुया। जैसलमेर रै कुशललाभ री 'पिंगल सिरोमणी', ब्रह्मजिनदास री 'रामचरित्र', विनय समुद्र री 'पदम चरित्र', समय सुन्दर री 'सीताराम चौपइ', जन सारंग री 'राम चरित' पोथ्यां री राजस्थानी राम भगती काव्य-परम्परा मे घणी मानता है।

सत्रहवीं सदी री सरुआत सूं फैलण वाळी राम भगती री इण लहर सूं अठै री कवयत्रियां भी प्रभावित हुई । रतन कुंवरी, प्रताप कुंवरी, तुलछराय, विष्णुप्रसाद कुंवरी, रूपदेवी, चन्द्रकला आद री राम भगती रचनावां सूं पतो लागै कै कविता री रसिक अे कवयत्रियां डिंगल छन्द, अलंकार अर रसां री लूंठी जाणकारी राखती। भांत-भांत रै दूहा, चौपइ, सुन्दरी, रमण आद छन्दां अर अडाणा, बिहाग, केदारा, देस, मल्लार, काफी, परज, सोरठा, मांड आद राग-रागणियां रा पळपळता नगां री चमक दमक अर राम भगती री अनूठी आभा रै ऊजास में कवयत्रियां री चतुराइ, नै भगती भावना री ओळखाण होवै ।

इण भांत केयो जा सकै कै राजस्थान रा कवि रामकथा रै विविध पखां नै उजागर करनै, रामराज रै सपनै नै चरितारथ करण रो बीड़ो उठायो।

भारतवर्ष मे ईसा सूं पैली चौथी सदी सूं सरू होयोड़ी क्रिसन भगती भावना री फैलाव मध्यकाल मांय घणी तेज रफ्तार सागै होयो। पूर्वमध्यकाल में राजस्थान मांय बण्योडा क्रिसन रा मिन्दरां मांय ओसियां, किराड़ू, नगेश्वर, केकींद, नाणा, मेवाड़ में आहाड़, जैपुर में आवानेरी, आमेर, सिरोही मे गिरवर अर देलवाडा, आबू वांसवाड़ा मे अथूणा, भरतपुर मे कामा आद रा मिन्दर पुरातात्विक द्रिस्टी सूं घणा महतव पूरण मान्या जाहवै। यां मिन्दरां मांय माता जसोदा री गोद मे बाळगोपाल, क्रिसन री माखणचोरी, कालिय नाग रै गरब नैं तोड़'र बीनै नांथण री घटणा, राक्सां रै वध अर इन्द्र रै गरब नै तोड़न खातिर गोरधन परवत नै उठावण री घटनावां रा सांतरा चितराम देखणजोग है।

राजस्थान मांय क्रिसन भगती रो साहित्य भी तादाद में लिख्यो गयो। अठै रा क्रिसन भगत रचनाकारां मे मीरावाई, अलूनाथ कविया, ईसरदास, कृष्णदास पयहारी, सांया झूला, राठौड पृथ्वीराज, गवरी वाई, नागरीदास, सुन्दर कुंवरी, वृन्द, थिरपाल, सोढी नाथी, जग्गा खिड़िया, कृष्णदास छीपा, गिरिराज कुंवरी आद रो सनमान पूरण स्थान है।

राजस्थान इ नी, सगळै भारत में क्रिसन भगती रै बुहाव नै नवी गति देवण वाळा रचनाकारा माय मरुघर री मंदाकिनी मीरावाई री जगचावी भूमिका रैइ है। संसारिक बन्धणा री हद नैं लाध'र मीरां शास्वत साच सरूप श्रीक्रिसनजी सूं नेहनातो जोड्यो। मीरां रै भगती-काव्य मांय हिरदै री व्याकुलता रो प्रकासन बिना किणी तरा री देखावट अर बणावट रै हुयो है। क्रिसन रै नेह माय खुद क्रिसनरूप बण जावण वाळी भगत-सिरोमणी मीरां रै पदां मे, भावां री अपूरब गेहराई है।

रोहड़िया शाखा रा चारण कवि ईसरदास बारहठ री मानता, राजस्थान अर गुजरात में घणी रइ है। भगत-कवि 'हरिरस' ग्रंथ में एवं आपरी क्रिसन भगती भावना रा मोहक चितराम रच्या है। इ ग्रंथ नैं ऐड़ड़े अनूठें रसायण री भांत बतायो गयो है जिके, जिण जागा जावैं, वठैं-बठैं, कचण जेहडी ऊजलता बिखेर देवैं–

सरब रसायन मे सरस, हरिरस समी न कोय।
हेक घड़ी घर में रहे, सह घर कचन होय ।।

सगलां रसां रा सिरमौर 'हरिरस' ग्रंथ रैं आगैं दूजा ग्रंथ फीका अर नीरस निजर आवैं। इण ई भांत, हरिनांव सुमरण रैं बिना, मिनख जलम री पूंजी अकारण लूटती जा रइ है–

हरिरस हरिरस हेक है, अनरस अनरस आंण।
विण हरिरस हरि भगति विण, जनम वृथा कर जांण ।।

सिद अलूनाथ कविया रा भगती कवित्त अर पदपदियां डिंगल-काव्य री टणकी काव्य-विधावा मानी जावैं। असीम ग्यान, भगती अर अनुभूति रैं रस मांय पग्योड़ा अल्लूनाथ रा क्रिसन भगती कवित्त घणा असरदार है। कवि री भासा ओज, प्रसाद आद गुणां सूं परिपूरण अर शान्त रस सूं ओतप्रोत है। हरेक पद्पदी अर्थ री गम्भीरतां सूं भरयोडी है। उदाहरण देखो–

गोप नार चित हरण प्रेम लच्छणा समप्पण।
कुज बिहारी क्रसन रास ब्रन्दावन रच्चण ।।
गोवरधन ऊधरण ग्राह मारण गज तारण।
जरासिंघ सिसपाळ भिड़ैं-भू-भार उतारण ।।
जमलोक दरस्सण परहरण भो-भग्गो जीवन मरण।
ओ मंत्र भलो निस दिन अलू सिमर नाथ असरण सरण ।।

राजस्थान रा क्रिसन-भगत कवि आपरी रचनावां मांय रूक्मणी हरण प्रसंग रा घणा असरदार अर लुभावणा चितराम खैंच्या है। भगत कवि सांया झूला प्रणीत 'रूक्मणी हरण' अर 'नागदमण' रचनावां में क्रिसन भगती रो दरसाव, वीररस रैं परिपेख मांय हुयो है। वीर अर भगती रसां रैं सागोपांग चितरामां री दीठ सू 'रूक्मणी हरण' रो महतावू स्थान है। उदाहरण रैं रूप में रूक्मणी हरण री बगत, क्रिसन अर रूक्मैया री सेनावां रैं बीच बीयैं विकराल जुध री हवालो देतां कवि लिख्यो है–

चवकवे-चक्कवी पूर रयणी चित्रा, गेहणी छोड़ भरथार दूरे गिया।
मैंण पुड़-ऊपड़ी बेह पेहां-मली आपरां वछांनैं नां उलपे अनली॥

'नागदमण' भगवान क्रिसन री बाल लीला रो चरित काव्य है। इण मे क्रिसन द्वारा कालिय नाग रै गरब नैं तोड़न री घटणा रो, घणो मोहक वरणन करघो गयो है।

बीकानेर राजघरानैं रा राठौड़ पृथ्वीराज, मध्यकाल रा सिरै क्रिसन भगत कवि मानीजै। यां री रीति, नीति, साहितसेवा अर वीरता माथै रीझ नै, अकबर यांनैं आपरै दरबार मांय न्यूतर, नऊरतना मांय भेल्या। पृथ्वीराज री लिखी 'वेलि क्रिसन रूक्मणी री' क्रिसन भगती साहित्य री, अमोल रचना है। 'वेलि' मांय सिणगार अर भगती री उक्तियां रा, फूटरी, फबती अर असरदार भासा शैली मांय चितराम खैंचर पृथ्वीराज, विद्वानां रै इ भरम रो निवारण करघो है कै व्रजभासा जेहड़ी मिठास अर नरमाई दूजी भासावां रै साहित्य में नीं है। पृथ्वीराज री 'वेलि' इं सांचरी गवाह है कै डिंगल भासा मे वीर रस रै सागै सिणगार अर भगती रस रा भी उम्दा ग्रंथ रच्या जा सकै। 'वेलि' मांय कलापख अर भाव पख रो अनूठो मिळाप, भगतकवि रै विशद् ग्यान रो परतीक है। पृथ्वीराज री 'वेलि' री जगचावना रो सबसूं मोटो सबूत ओ इ है, कै इं ग्रंथ री अणगिणत टीकावां लिखीजी। डिंगल, संस्कृत अर व्रजभासा रै टीका ग्रंथां नैं लिखण वाळा रचनाकारां मांय भी, जैन टीकाकारां री तादाद ज्यादा है। तीन सौ छन्दा री 'वेलि' राजस्थानी भगती अर सिणगार रस री अनूठी नैं संग्रहजोग रचना है। उदाहरण देखो–

दळ फूलि विमळ वण, नयण कमळ दळ, कोकिल कंठ सुहाइ सर।
पापणि-पंख संवारि नवी परि, भ्रूंहारे भ्रमिया भ्रमर॥
आगळि-पित-मात रमती आंगणि, काम विराम छिपाडण काज।
लाजवती-अगि अेह लाज विधि, लाज करंति आवइ लाइ॥

राजस्थान रा कवि अर दूजा साहितकार महाभारत रै जुधखेत्र मांय दीयै गीता रै उपदेशां री भी घणी टीकावा लिखी है। आधुनिक जुग रा भगत कवि चतुरसिंह री टीका रो उदाहरण, इण भांत है—

धर्म री घटती होवे, जी-जी समय अर्जुण।
अधर्म बधवा लागे, जदी म्हूं अवतार लूं॥

यां कवियां रै अलावा भी, इण धरती माथै एक सूं एक बढ र, क्रिसन भगत कवि पैदा होया ज्यांरी आध्यात्मिक अनुभूतिया रा सन्देश क्रिसन भगती री महत्ता

नै दरसावण रै सागै, लोकजीवण नै सनमारग परै ले जावण री मानवी-भूमिका निभावै।

राजस्थानी क्रिसन भगती री विधा—'माहेरो' काव्य र भी राजस्थान अर गुजरात रै लोकजीवण में उल्लेखजोग स्थान रयो है। ब्याव री टैम नरसी मेहता रै माहेरा रा हरजस, लोक जीवण सागै इं विधा रै अटूट रिस्तै नै दरसावै। मीरा द्वारा रच्योड़ै इं 'माहेरा' काव्य मांय, क्रिसन भगत नरसी मेहता री दोइती रै ब्याव माथै भगवान क्रिसन अर रुक्मणी द्वारा मायरो भरण री घटणा रो विवरण है। यूं तो माहेरा काव्य घणा कवि रच्या है पण लोकजीवण में मीरांबाई अर रतना खाती रा माहेरा घणा चावा है।

राधा अर क्रिसन भगती में जीवण समरपित करण री सीख देवण वाळै निम्बार्क सम्प्रदाय रो सम्बन्ध राजस्थान मांय परशुराम सूं जोड़्यो गयो है। सोलहवी सदी में परशुराम अजमेर कनै सालेमाबाद मांय इं सम्प्रदाय री पीठ थापन करी ही। निम्बार्क सम्प्रदाय मे राधा अर क्रिसन री भगती नै महतव देतां थकां, जगत रा सगळा जीवां मांय यां री मौजूदगी बताई गई है। उदैपुर रै निम्बार्क मठ मे 'आचार्य नामावली' ओलखाण सूं एक ग्रंथ मिळै जिण माय इ सम्प्रदाय रै आचार्य अर भगती रचनावां रो सिलसिलेवार हवाळो दीयो गयो है। राजस्थान रा निम्बार्क भगत हरिदास 'गुरुनामावली' पोथी में इं सम्प्रदाय री आचार्य परम्परा रो विवरण दीयो है।

राजस्थानी भगती साहित्य रै इतिहास माय अठारहवी सदी रो खास स्थान है। इण समै-अवधि मांय ऊंचै दरजै रा सन्त-मातमां आपरै ग्यान परगास सूं लोकमानस रै अग्यान-अन्धारै नै मेटण रो प्रयास करयो। ऐहड़ा सराहण जोग सन्तां मांय बागड़ रा क्रिसन भगत मावजी रा अहम स्थान है। आपरै दीव्य ग्यान सूं मावजी नवै सम्प्रदाय री थरपना करी भगती रै इतिहास में जिणै निष्कळंक सम्प्रदाय रै नांव सूं जाण्यो जावै। समाज रै निम्न अर दलित वरगां रै नर-नारियां नै भगती रो इमरत पावण वाळा क्रिसन भगतां माय मावजी अगुवा मानीजै। मावजी रो खास मिन्दर सावला मे है। अठै मावजी री मूरती बण्योड़ी है। दो मंजिल रो ओ मिन्दर काष्ट कला रो बेजोड़ देवालय मानीजै। आपरी वाणियां मे मावजी सील, सन्तोष, सदाचार आद माथै जोर दीयो है। बेणेश्वर धाम नै आदिवासियां रो तीरथ केहवै। अठै भेळा व्हेर, कोली, कुरमी, रावल, मीणा, भील, खांट, जुलाहा आद आपरा भगती पुसप चढांवै।

राजस्थान रै लोक मानस माथै शाक्त सम्प्रदाय रो प्रभाव अनादिकाल सूं रह्यो है। शाक्त सम्प्रदाय रा अनुयायी मां दुरगा री उपासना, सगती रै रूप मे करै। राजस्थान में जुधा री धमचक रै कारण वीरता नै हमेशां अहमियत दीरीजी। अठै जागा-जागा बणियोड़ा देवी मिन्दर लोक जीवण माथै सगती रै परभाव नै

दरसावै । मिसाल रै तौर परै गोठ मांगलोद में दधिमाता, बवाल में काळी, तिंवरी मे खांखरी, ओसियां मे सचियाय, फळोदी मे लटियाल, पीपाड़ में पीपलाद, परबत-सर कनै किणसरिया भाखरी माथै कंवास, जोधपुर दुर्ग में चामुण्डा अर अन्य राज्यां मे निरमित देवी रा अणगिणत मिन्दर, राजस्थानी लोक जीवण री सगती उपासना रा परतीक है। अठै विकरम समत् 1366 सूं पैली नागणेचीजी री आराधना रा परमाण मिलै । इण इ भांत, बिलाड़ा री आई माता री भी घणी मानता है । राजपूत जाति सूं उतपन इं देवी-अवतार री महत्ता इं तथ्य सूं आंकी जा सकै, कै इं रै नांव माथै, आई पंथ री थापना वी । आई माता सीखी जात री आराध्य देवी है । बिलाड़ा में आई माता रै भव्य मिन्दर मांय अखण्ड जोत बळै ।

राजस्थान अर गुजरात रा कवि देवी रा भांत-भांत अवतारां रो गुणगान करयो है ज्या माय ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, कापाली, बाराही, नर-सिंघि, शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघटा, स्कन्दमाता, कुष्माण्डा, कात्यायनी, काल-रात्रि, महागौरी, अम्बे, दुर्गा, जगदम्बा, चण्डी, भगवती, भवानी, शिवा, शांकरी, पारवती, नारायणी, मंगला, हिंगुलाज, आवड़, करणी, जीण, नागणैची, आई आद मातारूप खास हैं ।

जुग री मांग रै मुताबिक अठै सगती भगती री साहित भरपूर तादाद मे लिख्यो गयो । मध्यकाल मे रचित देवी भगती रचनावां मांय सीधर री 'सप्तशती रा छन्द', कुशल लाभ री 'देवी सातसी' अर 'भवानी छंद,' ईसरदास री 'देवियाण' पीरदान री 'गुण हिंगलाज रासो' जगवत री 'त्रिपुर सुंदरी री वेलि' लधराज री 'कालकाजी रा दूहा' अर 'देवी बिलास', अजीत सिंह री 'दुर्गापाठ भासा', जयचद यती री 'माताजी री वचनिका' आद रचनावा री उल्लेखजोग स्थान मानीजै । उदाहरण रै तौर माथै सीधर रचित 'सप्तशती रा छंद' कृति मांय महिषासुर मर्दिनी रै अपूरव बल वैभव रो घणो असरदार चितराम खैंच्यो गयो है—

सीधर स्वामिनी सुगणि मात मधु कैटभ मारणि ।
महिषासुर मद हरणि असुर सेना संहारिणी ॥
धोम नयन घट धरणि चंड मुंडादिक चूरणि ।
रक्तबीज वतिहरणि निसुंभ नायक घड धूरणि ॥
दूयाड कोडि दाणव दलणि, सुभट शुंभ कादव करणि ।
संसार भार भंजणि भूपणि, सत्व रज तामस तरणि ॥

राजस्थान रा कवि महामाया भगवती री स्तुति में असख्य डिंगल गीत, दूहा, सोरठा, वादनी, कवित्त, नीसांणी, चिरजा अर स्तुतिया लिखर, आपरी सगती

भगती रो ऊजास फैलायो है । इं धरती रो कण-कण रण चंडी रै रास सूं पवितर होयोड़ो है । अठै रै चप्पै-चप्पै माथै रगत रा अद्‌भुत इतिहास लिख्योडा है । रगत फाग रा रास रचावण वाळी इं वसुन्धरा रै आन-मान अर मरजादा खातिर, बलिदानां री होड लागती । मौत नै हंस-हस नैं. ललकारण वाला जोधारां रै वास्तै कयोड़ी आ उक्ति, कित्ती सटीक लागै—

मंडती हाटा मौत री, मुरधर रे मैदान ।
मूंड कटै लड़ता मरद, अनमि वीर कुल जाण ।।

सगती आराधना रै मूळ में भय अर कष्टां सूं मुगती री कामना पाइ जाइवै । दुर्गा री शरण मांय जावण सूं अभय रो वरदान मिळै । भगवती सिंघ-वाहिनी, दस भुजावाली मात अम्बे जगदम्बे, पापां रो नास करनै धरम अर न्याव री रूखाळी करै । देवी रो रौद्र अर भयानक रूप देख'र शेषनाग थरथरावण लागै, वराह री दाढ कड़कै अर कच्छपराज री पीठ कड़कडावण लागै । देवी रै ऐहड़ै वीभत्स रूप रै आगै असौच, अधरम, अत्याचार अर आसुरी सगतियां तिरोहित हुय जावै—

वड़कै दाढ़ वराह, कड़कै पीठ कमठ्ठ री ।
धड़कै नाग धराह, वाघ चढ़ै जद बीसहथ ।।

यां उदाहरणां रै अलावा भी अणगिणत पोथ्या मिळै ज्या मांय देवी भगती, देवी महिमा अर भांत-भांत रा देवी-अवतार वरणित है । माला सांदू री 'रायसिंघ री वेल'; बखता खिड़िया री 'अभयसिंघजी रा कवित'; केसवदास गाडण री 'गज गुण रूपक बंध, खेतसी सांदू री 'भासा भारथ', करणीदान री 'सूरजप्रकाश', दयालदास सिंढ़ायच री 'जस रत्नाकार'; जग्गा खिड़िया री 'वचनिका'; वीरभाण री 'राजरूपक' आद एक सूं एक बढ़'र काव्य रचनावा है ज्यां रै जुध वरणनां मे सगती री भगती रा दरसाव होवै । जुध-वरणन रा सगळा प्रसगा माय बावन भैरू, चौसठ जोगणियां, सगती रूपा रा रौद्र चितराम, हाथा मांय खड़ग-खप्पर लेर, सूरीरां रै क्षत-विक्षत सरीरां सूं नीरसता रगत-फव्वारा रै रगतपान अर मुण्ड माल पेहरण री होड, वीर रस रै प्रति भगत कवियां रै रूझाण नै दरसावै ।

देवी रै रौद्र रूप रै अलावा, भगवती रै सौम्य रूप रा चितराम खैंचण में भी अठै रा कवि लारै नीं रिया है । राजस्थान मे रचियोड़ो पार्वती रो काव्य, सौम्य सगती काव्य रो नमूनो है । पार्वती सूं जुड़ियोड़ी सगळी कथावां माथै, अठै रा रचनाकार काव्य लिख्यो है । अठै गौरी-पूजा रै परब गणगौर री तो घणी मानता है । शिव-पार्वती स्तुती रै अलावा अठै रा कवेसर पतित पावनी गगा माता री

आराधना मांय भी काव्य रच्यो है जिण रो निरमल नीर जलम जलम रा पाप घोर, मुगती देरावै । कवि बांकीदास केहवै कै गंगा मां री महिमा अकथ-अनत है। मिनख जलम भर, जित्ता पाप नी कर सकै, मात गंगा पलभर मांय उत्ता पाप मेटण री सामरथ राखै-

पाप जिता तूं पलक में, सुरसरि हरण समत्थ ।
इत्ता पाप ऊमर-मही, सो कुण करण समत्थ ।।
जल अवगाहण जीवणों, दूर हुवा अति दीन ।
तूं गंगाजल तो जल तणो, मो कद करसी मीन ।।
छटा अलौकिक छाय, ऊंची लहरां ऊपड़े ।
मुगत निसेणी माय, सुख देणी असुरां-सुरां ।।

सगुण भगती री भांत राजस्थान मे निरगुण संत साहित्य भी बेशुमार परिमाण मांय लिखीज्यो । अठै रै लोक जीवण माथै नाथ भगती रो असर अनादिकाल सूं रियो है । इं सम्प्रदाय रा भगत, आदि देव भगवान शिव नै इशावै । राजस्थानी लोक जीवण अर अठा रा तकरीबन सगळा भगती सम्प्रदायां माथै नाथ-पथ अर नाथ-भगती साहित्य रो अटूट प्रभाव पड़यो । गुरू गोरखनाथ रो नांव तो सिद्ध-साधकां रै रूप मे रूढ सो, बण ग्यो । पांचवीं अर छठी सदी सूं राजस्थान रै लोक मानस माथै असर डालण वालो नाथ धरम-दरशण, उन्नीसवीं सदी तक आता-आतां गजब फैलाव करयो । तत्कालीन समै अवधि मांय बण्योड़ा शिव अर सगती रा आलिशान मिन्दर लोक जीवण री नाथ भगती भावना नै दरसावै । मेवाड़ रा महाराणा बप्पा, इं धरम-दरशन सूं घणा प्रभावित हा । मेवाड़ रै एकलिंग नाथ शिव मिन्दर माथै केई सौ सालां तक नाथ-जोगियां री मौजूदगी, मेवाड में नांथ-धरम रै प्रभाव री परतीक है । महाराजा मानसिंह रै राज में मारवाड़ मांय नाथा रो जबरदस्त फैलाव हुयौ हो । जोधपुर में इ विचार दरशण रै प्रचार खातिर मानसिंह, महामिन्दर अर उदैमिन्दर री थापना कराई । 'मारवाड़ री ख्यात' आद तवारीखी पोथ्यां सूं पतो लागे कै मानसिंह री बगत मारवाड़ में नाथां रो घणो बोलबालो हो । इंण बाबत आ बात घणी चावी है कै राव जोधा जोधपुर राज नैं बसायो, महाराजा विजयसिंह अठै वैष्णो भगती नै बढावणा दी जद कै महाराजा मानसिंह नाथ पथ रै विचार-दरशण नै मारवाड़ मांय फैला र, जोधपुर नैं लखनऊ, काशी, दिल्ली अर नेपाल बणाय दीयो-

जोध बसायो जोधपुर, ब्रज कीनो ब्रजपाल ।
लखनऊ, काशी, दिल्ली, मान कियो नेपाल ।।

नाथ सम्प्रदाय माय व्रत-तीरथ आद नैं महतव नी देर, मन री शुद्धता परै

जोर दीयो गयो है । नाथ, परमशित नै सिष्टी रो सरजक मान'र वां री ध्यावना मार्थ जोर देहवै । ई सम्प्रदाय मांय जोग साधना अर कुण्डलणी नै जगावण माथै जोर दियो जाहवै । केशवदास गाडण अर मानसिंह रै अलावा घणां रचनाकार वीया ज्यांरी रचनावां मे नाथ भगती रो दरसाव होवै । महाराजा मानसिंह, आपरी काव्य-पोथ्यां मांय नाथ-भगती री महिमा रो, असरदार भासा शैली माय बखाण करयो है। उदाहरण रै रूप में 'जलंधर चन्द्रोदय' री ऐह् ओल्या देखी जा सकै–

तुम जलधि रूप अन गगन रूप । सुन्य मे तुमहिं जति नाथ रूप ।
तव नाथ पटक तुम ही संहत । धन हीर जथा अनुपम अनंत ।।

नाथ पंथ री घणकरी साखावां रो मारवाड़ मांय फैलाव हुयो । आं मांय आई पंथ, अघोर पंथ अर कांचळिया सम्प्रदाया रा अनुयायी भी जगा-जगा निजर आवै ।

भारत मांय ऐहड़ा केइ संत अर भगत पैदा होया जिका खुद री इच्छा सूं राजपाट अर विसै-वासनावां रो त्याग कर, लोक सेवा रै काम मे जीवण निछावर कर दीयो । ऐहड़ा संत दीव्य ग्यान, वैराग अर भगती भाव सूं, सामाजिक रुढियां अर आडम्बरां रो खारमो करनै, भेदभाव सूं रहित समाज रै निरमाण री चेष्टा करी । अग्यान री अतल गेहराईयां मांय नर-नारियां नै पडर, नाश कांनी बढ़ता देख वां नै सतमारग देखावण वाळा सता मे पीपा सम्प्रदाय रा प्रवर्तक पीपाजी री घणी मानता है। पीपाजी मालवा रै गागरोन गढ़ राज रा राजा हा। राजस्थान रै शोध-ठिकाणां मे मिलण वाली पोथ्या 'पीपा री कथा', 'पीपा री परची' 'पीपा री वांणी' अर 'साखिया', नै तवारीखी ग्रथां रै आधार परै आं रो शासनकाल विकरम समत् 1380 सूं 1440 तक मान्यो जावै । राजपाट नै तिलांजली देर, पीपाजी रामानन्दजी रा शिष्य बण गिया । माया मोह रै बन्धणा नें तोड र वै मिनख नै सदकरम करण री सीख दीवी । पीपाजी री कथणी अर करणी मे फरक नी हो । वे खुद राज पाट छोड'र, सिलाई रो काम करण लागा । पीपाजी री देखादेखी हजारा री तादाद मांय जुध सूं विमुख क्षत्रिय, इण धन्धै नै अपणाय, रोजगार सरु करयो । पीपाजी री गिणती रामानन्दजी रै बारह शिष्या मे होवै । राजस्थान मांय यां री धणी मानता निजर आवै । जोधपुर, जागरोन, पाली, बालेसर, बिलाड़ा, सियार, पुष्कर अर समदडी मे पीपाजी रा मिन्दर, लोक जीवण मे यां री लोक चावना सिद करै । पीपाजी री आ वाणी सदाचार री सीख देहवै–

पाप न छांनो रै सकै, छानों रहे न पाप ।
पीपा मति बिसासियो, ये अंगीरा साप ।।
पीपा पान न कीजिए, अळगो रहिये आप ।
करणी जासी आपरी कुण बेटा कुण बाप ।।

नागौर परगनै रै पीपासर गांव मांय जलमिया पवार क्षत्रिय जाम्भोजी, वि. सं. 1542 मांय बीकानेर वनै संभराथल जगा माथै जाम्भोजी विश्नोई सम्प्रदाय री सरुआत करी। इंण धरम-दरसण नैं राजस्थान रा सैकड़ां नर-नारी स्वीकार करयो। जांभोजी रै धारमिक सिद्धान्तां मांय जीवां री हत्या नी करनी, हरा बिरखां नैं नीं काटणो अर आछा करम करण री बातां भेळी ही। वन-सम्पदा अर जीव जन्तुवां री रक्षा री द्रिस्टी सूं जाम्भोजी रा उपदेश घणो अहमियत राखैं। जोधपुर, बीकानेर अर उदैपुर राज री तरफ सूं, इं धरम नैं सरंक्षण भी दीयो गयो। जाम्भोजी रै शिष्या मांय हिन्दू अर मुसलमान हर धरम अर हर तबकां रा नर-नारी सामिल हा। राजस्थान रै अलावा जाम्भोजी विश्नोई सम्प्रदाय रा मिन्दर पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश अर मध्य प्रदेश मांय भी है।

जसनाथी सम्प्रदाय रा प्रवर्त्तक जसनाथ रो जलम वि. सं 1539 मांय एक जाट परवार मे होयो हो। आपरी शिक्षा में जसनाथ जी जीव हिंसा, घूम्रपान, मद्यपान, दहेज आद कुटेवां रो विरोध करनैं, सांच, शील, सन्तोष, नैं सदाचार रै मारग चालण री सीख दी बीकानेर मांय जलमिया जसनाथजी रै उपदेशां रो घणो असर बीकानेर, जोधपुर, जैसलमेर अर उदैपुर रै नर-नारियां माथै पड़यो। जसनाथ रचित 'जसनाथ पुराण' मांय यां री बाणियां एकठ हैं। उदाहरण रै तौर परै, जीवण री खिण भगुता दरसावण वाली ओल्यां देखणा जेभड़ी है।

काची काया गलबल जासी, कूं कूं बरणी देहा।
माटी मे माटी मिल जासी, भसम उड़े ज्यूं खेहा॥

मेवात प्रदेश रै धोळीदूब गांव मांय वि. सं. 1597 में जलमण वाला मुसलमान संत लालदास कठोर तपस्या रै बाद ग्यान पा' र, लालदासी पंथ री थापना करी। इ पंथ माय निरगुण-निराकार ब्रह्म री महिमा 'राम' नांव रै रूप मे मानी गई है। हिन्दू अर मुसलमाना रे भेद भरम नैं मेटण वाळै इं विचार-दरसण मांय दोन्यू धरमां रै गुणां नै भेल्यो गयो है। अलवर अर भरतपुर मांय इं धरम रा मानण वाळा घणा है। लालदास रा अनुयायी, लालदासी केहावै। स्वावलम्बन री सीख देवण वाले इं पथ माय धारमिक आडम्बरा नैं छोड र, नांव सुमरण करण री बात केइ गई है। 'लालदास री वांणी' रो उदाहरण देखो—

घट घट मेरा साइया, सूना घट ना कोय।
बलिहारी वा घट की, जा घट परगट होय॥
लालजी साहिब समरथ है धनी, सबको देखे हाल।
आठ पहर चौसठ घडी, बारम्बार सम्हाल॥

चंचल मन नै बस मे राख्यां बिना परमात्मा सूं मेलाप नी हुय सकै। संत लालदास केयो है–

तन का राजा मन है, मन का पाया पांच।
उन पाचन को वस करै, हिरदै आवै साच॥
मन चंचल चहुं दिस फिरै, सुरत नहीं एक ठोर।
जो चाहे हर भगती कू, मन कू राख मरोर॥

राजस्थान रा अन्य मुसलमान सन्तां मे दादू अर रज्जब री मानींद ठौड़ है। संत दादू रो आश्रम आमेर मांय है जठै तपस्या करनै संत दादू आपरै उपदेशां रो प्रसार करयो। कबीर री भांत दादू भी किताबी ग्यान री जगा, सत्संग, नाम सुमरण अर सदाचार माथै बल दीयो। दादू रा शिष्या मे रज्जब, बखना, सन्तदास, सुन्दरदास, टीला, वाजिन्द, जनगरीब, जनगोपाल आद रो महतवपूरण स्थान मान्यो जावै। दादू री मानता है कै माया, मोह अर छल प्रपचां नै छोडर, राम रै नांव सूं सांचो नेह करण सूं इ, मुगती रा रस्ता खुल सकै। दादू दयाल केहवै कै जीभ सूं राम-राम करो अर काना सूं बस राम-राम इ सुणो। संसार में जै कोई बात सांच अर तथ्य पूरण है तो बस राम रो नाव इं। दादू वांणी रा उदाहरण देखो–

ज्यों ज्यो पीवे राम रस, त्यो–त्यो बढ़ै पियास।
ऐसा कोई एक है, बिरलै दादू दास॥
रोम रोम रस पीजिए, ऐसी रसनां होइ।
दादू प्याला प्रेम का, यो विन तृप्ति न होइ॥
दादू जैसे श्रवणा दोह है, ऐसे हुई अपार।
राम कथा रस पीजिए, दादू बारम्बार॥

या रा शिष्य संत गरीबदास भी, भगती नै अणमोल खजानौ बतायो है–

पान करै अमरत सरस, चूणि ले हीरा हाथ।
सो प्यारी पिव आपणै, दूजी सबै अकाथ॥

सुन्दर दास री मानता है कै परमात्मा री भगती घणी मुसकिल है। इं वास्तै पेली मन नै बस मे करणो जरुरी है–

सुन्दर प्रभु की चाकरी, हांसी खेल न जानि।
पहले मन को हाथ करि, पीछै पतिव्रत ठानि॥

संत दादू रा अनन्य शिष्या मांय, रज्जब रो सिरै नांव गिणीजै। अपार गुरु

भगती, अनूठो ग्यान, मानवी-हेत. गूढ भगती आद घणां गुण है ज्यां रै कारण, संत-समाज माय रज्जब रो नवो मुकाम बण्यो। आं रो जलम सांगानेर में हुयो हा रज्जब रै मानवी-हेत रा उपदेशां री वजै सूं यां रै अनुयायियां री गिणती दिनो दिन बढ़ती रइ। इण तरा रज्जब पंथ नांव सूं नवो विचार धारा रा जलम होयो। सांगानेर रज्जब पंथ रो खास स्थान है। रज्जब पंथ रो दस मुकाम सांगानेर, पाटण, डिग्गी, पोसला, टोंक, डोडवाड़ी, निवाई, टीटोली, वांस खोह अर भादवा मांय है। रज्जब वाणी अर सर्वंगी मे गहन-गम्भीर री ग्यान अनुभूतिया रो प्रकासन सीधी, सरल अर आम बोल चाल री भासा मांय करयो गयो है। परमात्मा नैं पावण री सांची लगन रै बिना वीने नी पायो जा सकै। इं वात नै रज्जब, यूं समझाई है—

> दरद नही दीदार का, तालिब नाही जीव।
> रज्जब विरह वियोग बिन, कहा मिलै सो पीव ॥
> नैंनो नेह न नाह का, यहि दिसि द्रिस्टी न जाहि।
> रज्जब रामहि क्यो मिलै, तालिब नाही मांहि ॥

रज्जब सगला धरमा मांय सामजस करता कया कै ब्रह्म एक इ है जद कै वीं नै पावण रा मारग जुदा-जुदा बताया जाहवै। आपरी इच्छा-सगती रै मुताबिक चावो जिण भगती-मारग माथै चालो, आखर वो जावेला ब्रह्म कनै इ—

> नारायण अस नगर कूं, रज्जब पंथ अनेक।
> कोई आवो किहीं दिशि, आगे अस्थल एक ॥
> हेत न कर हिंदू धरम, तज तुरकी रस रीति।
> रज्जब जिन पैदा किया, ताही सौं कर प्रीति ॥

निरंजनी सम्प्रदाय रा प्रवर्त्तक सन्त हरिदास डीडवाणा परगनै रै कापड़ोद गाव रा निवासी हा। डॉ. पीताम्बर दत्त बडथ्वाल निरंजनी सम्प्रदाय नै नाथ पंथ री शाखा मानी है पण आ धारणा सही नी है। ओ निरगुण भगती धारा रो अलहदा सम्प्रदाय है। इ धरम-दरसण रो सबसूं ज्यादा असर डीडवाणा, राणी-वाडा, बड़गांव, कुचामण, पीपाड़ आद हलका में देख्यो जावै। हरिदास रचित ग्रंथा मांय 'भगत विरदावली', 'भरथरी सवाद', 'साखी', 'पद', 'नाम जाप', नाम निरुपण', 'ब्याहलो', 'जोग ग्रंथ', 'टोडरमल जोग ग्रंथ' आद रो सनमान पूरण स्थान है। यां री वाणी रो प्रकासन 'श्री हरिपुरुपजी री वांणी' नांव सू हो चुक्यो है। घट-घट मांय व्यापण वाळै परमात्मा रै प्रति हरिदासजी कयो है—

> अचल अघर सब सुख को सागर, घट-घट सबरा मांही रे।
> जन हरिदास अविनासी ऐसा, कहे तिसा हरि नाही रे ॥

अठारहवीं सदी रा राजस्थानी सन्तां मांय मेवात प्रदेश रैं डेहरा गांव में जलमिया चरणदास जी री घणी मानता है। जदपि यां री रचनावां मांय सगुण अर निरगुण-दोन्यूं भांत री भगती रा बखाण है पण यां रैं नांव परैं प्रवत्तित चरणदासी सम्प्रदाय, निरगुण भगती सम्प्रदाय इ है। चरणदास री लिखीं 'भगती पदारथ' अर 'सबद' ग्रंथा मांय ग्यान, भगती, नैं बैराग रो अणखूट खजानो भर्योड़ो है। दया, नम्रता, दीनता, क्षमा, शील, सन्तोप आद गुणां सूं इं मिनख मुगती गामी बण सकैं, इं साच नै दरसाता चरणदास कैवे—

दया नम्रता दीनता क्षमा शील सन्तोप।
इनकूं ले सुमिरन करे, निस्चै पावै मोप॥

चरणदासी सम्प्रदाय नै राजस्थान मांय फैलावण वाली कवयत्रियां में सहजोबाई अर दया बाई रो घणो चावो स्थान है। सहजोबाई रो लिख्योडो 'सहज प्रकाश' ग्रंथ मिळै। अन्य निरगुण सन्ता री भांत सहजोबाई भी गुरु महिमा रो घणो बखाण कर्यो है। सदगुरु री किरपा रैं बिना परमात्मा अर मोक्ष नी मिळ सकैं, इण वास्तै गुरु रैं नांव नैं, हर घडी याद राखणो चाइजैं—

राम तजूं पै गुरु को न बिसारूं।
गुरु के सम हरि को न निहारूं॥

दयाबाई भी ऊंचै दरजै री सन्त अर अध्यात्मिक ग्यान मे पारंगत कवयत्री ही। 'दयाबोध' अर 'विनय मालिका' पोथ्यां भगत कवयत्री रै विशद ग्यान री भंडार केई जा सकै। सरल राजस्थानी भासा री यां पोथ्या में ससार री असारता, गुरु भगती अर हरि नांव सुमिरण रैं महतव नैं भांत-भांत द्रष्टान्तां सूं समझायो गयो है। उदाहरण देखो—

सोवत जागत हरि भजी, हरि हिरदे न बिसार।
डोरी गहि हरि नांव री, दया न टूटे तार॥
निरपच्छी के पच्छ तुम, निराधार के धार।
मेरे तुम ही नाथ इक, जीवन प्राण अधार॥

राजस्थान रा चावा सन्त-सम्प्रदायां मांय रामस्नेही सम्प्रदाय रो मानीद स्थान रयो है। इं सम्प्रदाय रा थापन करता, सन्त रामचरण रो जलम जैपुर रैं सोडा गांव में होयो हो। रामस्नेही सम्प्रदाय में निरगुण-निराकार राम रैं नांव रो जाप कर्यो जावैं। इंण सम्प्रदाय रा प्रमुख केन्द्र शाहपुरा, सिंहथल-खैड़ापा अर रैण मांय है। रामद्वारा रा साधु आपरैं कनैं तूम्बी, लंगोट, चद्दर, माला अर पोथी राखैं। राजस्थान मांय रामस्नेही सम्प्रदाय रैं अनुयायियां मांय अग्रवाल, नैं

महेश्वरी जात रै लोगां री तादाद घणी है। रामचरण जी री 'वाणी' मांय साधा-जीवण ऊंचा विचारां रै परिपेख मे, राम नांव रै तारक मन्त्र रै पठण-पाठण मांय जोर दीयो गयो है। उदाहरण देखो—

राम हि राम अखण्डित ध्यावत, राम बिना सब लागत खारो।
रामहि राम लियां मुख बोलत, रामहि ग्यान रु राम बिचारो॥
रामहि राम करे उपदेशहिं, रामहि जोग रु जिग्य पसारो।
रामचरण इसे कोइ साधु है, सो ही सिरोमणि प्राण हमारो॥

इं सम्प्रदाय रा दूजा रचनाकारां मांय हरिरामदास, रामदास, दयालदास, दरियावदास, लादूराम, सगरामदास, तेजराम, जगन्नाथ अर अमृतराम री, घणी परसिधि रइ है।

नागौर रै हरसोलाव गांव मांयः वि. सं. 1840 मे एक हरिजन परवार मांय जलमिया, सत नवल, अध्यात्मिक ग्यान पार, नवैं सम्प्रदाय री थापना करी जिनै नवल सम्प्रदाय रै नांव सू जाण्यो जावे। परमात्मा रै प्रति सांची भगती अर सन्तां वाला गुणां रै कारण, नीची जात माय जलम लेवण वाला नवलजी, आ बात सिद कर दी कै जलम सूं कोई छोटो, कै मोटो नीं होवै, मिनख रो मोल, वी रै करमा रै मुताबिक करणो चाइजै। नवल सम्प्रदाय रो मिन्दर जोधपुर में बाईजी रै तलाब कनै बण्योड़ो है। इं सम्प्रदाय री धारमिक सहिष्णुता अर मानवी गुणां सू रीझनै, 'राम' नां वरै अण खूट भडार नै पावण खातिर ओसवाल, राजपूत, मुसलमान अर ब्राह्मण आद जाता रा नर-नारी नवल-सम्प्रदाय रै विचार दरसण नै अपनायो। विना किण इ तरा रै भेद भाव रै, राम नाव रै महात्मय सूं हेत री सीख देवण वाले नवल सम्प्रदाय रा मिन्दर दिल्ली, बम्बई, गुजरात, राजकोट, मेरठ, इन्दौर, जेपुर, बीकानेर अजमेर, आसाम, बरमा, कराची, अर पाकिस्तान मांय भी बण्योडा है। नवल संत री रच्योड़ी पोथी 'नवलेश्वर अनुभव वाणी प्रकाश' मिलै जिण माय सरल राजस्थानी भासा मे अगम-अगोचर परवर दीगार रै दरसण रो बखाण करयो गयो है। उदाहरण देखो—

साधो भाई ! हम निरगुण दीदारा।
मै हूं अनाम नाम में नाही, अखै सरूप हमारा।
मै अविगत अनादि नाद में, नाही, सदा अखड निरधारा।
नांव गाव मेरे कोई नाही, नही धारूं अवतारा।

बीकानेर राज रै आसपास भगवा कपडा धारण करया साधु मिलै। ऐह 'अलख मौला' अर 'अलख अलख' रो जाप करै। निराकार ब्रह्म नै मानन वाला ऐह साधु 'अलखिया सम्प्रदाय' रा अनुयायी है। इं सम्प्रदाय रा प्रवर्त्तक सत

लाल गिरि चमार जात रा हा। आं रो जलम चुरु जिलै रै सुलखाणियां गांम मांय वि. सं. 1866 मांय हो यो हो। लालगिरि रा शिष्यां में हिन्दू, मुसलमान अर नीच जात रा लोग सामिल है। नीचा तबकां रै नर-नारियां रै जीवण उत्थान खातिर संत लालगिरी घणी मेहनत करी। बीकानेर रै अलावा ई सम्प्रदाय रो प्रभाव पच्छीमी राजस्थान, शेखावाटी अर पंजाब रा हलकां मांय भी देखण में आवै। संत लालगिरि आपरी साखियां मांय गुरु भगती, अलख री महत्ता अर इन्द्रियां रै मायाजाल सूं बचणै रो संदेश दी यो है। ब्रह्म रै अलौकिक रूप री महिमा नैं बखाणतां, संत लालगिरि केयो है—

> साहिब दर सैं सुंन में अजर अमर निरवांण।
> हंम हंम व्यापक सकल बिरला करै पिछांण॥
> बिरला करै पिछांण सोई जिन सतगुरु देख्या।
> करम करया सब दूर सार गहि आपा मेट्या॥
> कहै गुंसाई लाल कीया जिन पांचू गायब।
> अजर अमर निरवांण सुंन में दरसै साहिब॥

यां सगुण-निरगुण सम्प्रदायां रै भगती साहित्य रै अलावा भी राजस्थान में भांत-भांत तरा रो भगती साहित्य मिलै। अठै मिलण वालै भगती रै लोक साहित्य री तादाद तो इती ज्यादा है कै उण मायं कित्ता इ, शोध ग्रंथ लिख्या जा सकै। इणइ तरा, लोक देवतावां रै भगती सहित्य री भी अठै घणी मानता है। सांच, न्याव, धरम अर मिनख-मिनख रै बीच रै फरक नै मैटण खातिर हंस-हंस नै प्राणां री बाजी लगावण वाला जोरावरां नै, समाज रा लोग लोक देवता रै रूप में धावै। निजी हित रै आगे समाज रै हित नैं महतव देवण वाला लोक नायकां मांय पाबूजी, हडबूजी, रामदेवजी, मेहाजी, गोगाजी, तेजाजी, मल्लीनाथजी आद री घणी मानता है। पाबू, हडबू रामदेव, गोगाजी अर मेहा री पूजा तो अठै पांच पीरां रै रूप में होवै—

> पाबू हडबू रामदे, मांगलिया मेहा।
> पांचू पीर पधारज्यो, गोगाजी जेहा॥

लोक देवता पाबूजी चंवरी मांयं फेरा खावतां-खावतां, गूजरी री पुकार मांयं गो-रक्षा री खातिर आपरो जीवण निछावर करयो। इण ईं भांत, रामदेवजी नीची गमझी जावण वाली जातां रै उत्थान खातिर, जन-जागरणी री वेळां उठायो बुद बीरों काढै भी, यां लोक देवतावां रै लोकगीतां री बानगी, हिरदै मांयं कूंवळ कमर री, निमता राखै। इण रै अलावा, नाम अनाम मान्ती री मांगिलणी पदां में हरजसां रो तो आर पार ई, नी है। ग्यान, भगती, अध्यात्म, ...

माया मोहर जगत अर जीवन री खिण भंगुरता रा एहड़ा सांतरा चितराम सैंच्योड़ा है कै वीं रो जोड़ा-जोड़ा सातित्य दूजी भासावां मांय जो नीं मिलै। राजस्थानी भगती साहित्य हकीकत मांय वीं औषद री जिण सूं रुग्ण मानवता रो उपचार हुवे।

•

राजस्थानी उपन्यासां री विकास-जात्रा

☐ डॉ० मदन केवलिया

उपन्यास जिनगाणी रो सांगोपांग चितराम है। उपन्यासकार मिनख-जूंण सूं चोखी तरियां परिचित हुवै, अर बींरी इधकाई रै सगळे भागां नै आपरी रचना मे उतारै। उपन्यासकार मिनख रै अंदर-माय पैठ'र उणरी पिछाण करै अर उणरै आलोच, खंत, तड़ अर काजा नै नूंवी दीठ सूं देख'र वांरो चित्रण करै।

राजस्थानी मे वात साहित घणों समृद्ध है। इयै री लिखित नै मौखिक परम्परा रैयी है। पण आज रै उपन्यासां री बात घणी जूनी कोनी। इयां तो 'कुंवरसी साखलो' नै उपन्यास मानण आळा घणा लोग है पण उपन्यास रै तत्वां री दीठ सूं 'कुंवर जी सांखलो' खरो कोनी ऊतरै। इयां आ पोथी राजस्थान रै सांमती जीवण री चोखी ओळखाण करावै।

कनक सुन्दर—श्री नरोत्तमदास स्वामी राजस्थानी उपन्यास रो उभद्व श्री शिवचद्र भरतिया रै 'कनक सुंदर' (1903 ई.) सूं मान्यो है। कनक सुंदर रो पैलो भाग प्रकाश में आयो है। भरतियाजी इयै नै 'नवल कथा' कैयी है। डॉ.किरण नाहटा 'शिवचंद्र भरतिया' ग्रंथ री सम्पादण करयो है, नै भरतियाजी माथै

नूंवी जाणकारी दीनी है । 'कनक सुंदर' प्रेम-कहाणी है, जिकी वीं बखत बिखरता-टूटता संयुक्त परिवारां री दसावां नै दरसावै । इणरो नायक मुरलीधर भाभी रै तानां सूं डर'र बारै व्यौपार करै, पण बाद में 'मुरलीधर आपरै भाई-भाभी अर भतीजै नै भी आपरै अठै ई बुला लेवै है ।'

श्री भरतिया राजस्थानी में उपन्यास लिख'र अेक नूंवे जुग नै जलम दियो । 'कनक सुंदर' री भाषा, बी टेम रै चळत री भाषा है ।

चम्पा—श्री नारायण अग्रवाल 'चम्पा' (1925 ई.) मे उपन्यास लिखर ई जात्रा नै आगै बधावण री कोसिस करी । औ उपन्यास, मारवाणी भाषा प्रचारक मंडल, धामण गांव सू छपयो । इयै में 'वृद्ध-विवाह' री समस्या उठाई गई है । 'कनक सुंदर' में जठै समाजिक समस्यावां नै पूरै संदर्भां सूं जोड़यो गयो है, बठै 'चम्पा' मे सिर्फ समाज रै दोषा नै उघाणयो गयो है ।

आभै पटकी—श्री श्रीलाल नथमलजी जोशी रो 'आभै पटकी' (1956 ई.) उपन्यास सही मायनै मे आधुनिक उपन्यास है। आजादी रै बाद लिख्योड़ै उपन्यासां मे ओ पैलो है । श्री अक्षयचंद्र शर्मा आपरी 'सम्मति' में लिख्यो है कै 'राजस्थान के जीवन से ओतप्रोत यह कहानी घरेलू मुहावरेदार भाषा मे ऐसी सुंदर बन पड़ी है कि पढ़ते ही बनता है ।'

जोशीजी किसना विधवा रै जरियै सूं नारी-जीवण रा दरदनाक चितराम दिया है । बी रै जीवण रै अन्तर्द्वंद्व ने घणी ठीमराई सू चित्रित करयो है इण रै माध्यम सू नारी-जीवण री समस्यावा पेस करी गई है । विधवा-विवाह जिसी लूंठी समस्या नै लेय'र उपन्यास लिख्यो गयो है–'आज हूं अबला हूं, गाय दई बिल-बिल करूं ।' घटनावा मे नाटकीयता नै क्रमबद्धता है पण 27 परिच्छेदा मांय वस्तु रो लघु कलेवर अखरै (एक बात और है राजस्थानी भाषा में व्यक्तिवाचक सज्ञावा (Proper Noun) नै बिगाड़'र लिखण री जो आदत है बा चितनीय है। दुनिया री हर भाषा मे नावां नै नी बिगाडया जावै पर अठै मोवन (मोहन) किशना (किसना) ईत्याद लिख्या जावै । राजस्थानी मे अबै 'ए' अनै 'श' अक्षर आईज गया है, फेर बिगाडण री कांई जरूरत है–आपा नै विचार करणो चाहीजै ।)

'आभै पटकी' रा नामकरण, शील निरूपण, संवाद प्रयोजन घणा चोखा है । श्री मूलचंद सेठियां लिखै–'आभै पटकी में भी विधवा री ई विडम्बणा रो घणो आकरो रूप सामणै आवै .. विधवा निछतरी हुवै । एक पावडो ऊक-चूक दरते ई समाज सडासड़ साटकां सूं सूंतण लाग जावै ।' आपां रै समाज मे विधवा री दोरो हालत है, जिकै नै 'आभै पटकी अर धरती झाली कोनी ।' कला री दीठ

सूं भी ओ सरावण जोग उपन्यास है।

श्री देथाजी रा लोक-उपन्यास—'बातां री फुलवाड़ी' भाग 1 3, 4, 6, 7 में श्री विजयदान देथा रा 'आंठ कुंवर' 'सांच री भरम' 'मां री वदलो' नैं 'तीडो राव' लोक-उपन्यास देखण नैं मिळै।

'आठ राजकुंवर' (1964 ई.) में आठ राजकुंवरां रा संघर्ष, विजय नैं विश्व बंधुत्व रा सदेस मिळै।' सगळी दुनिया नैं ई आपरो कुटम मानणो अेक ऐड़ा राज री थापणा करणी है, जठै सगळा कुटंम रो अेक सरीसो वधापो हुवै' देथाजी री भापा माथै चोखो अधिकार है। मुहावरां, कहावतां अनैं अलंकारां सूं उपन्यास सज्योड़ो है। राणी री रूप-वर्णन देखो—रतनाळा लोचन। नाक सूवा री चांच। दाड़िम कली सा दांत। बसंत कोकिला सरीखी मधरी वाणी।'

'सांच री भरम' (1964 ई.) में आठ राजकुंवर सत्य री सात-आठ कहाणियां कहवै, जिणां सूं राजा री भरम टूटै।

'मां री वदलो' (1965 ई.) दो भागां में है। इण में बीकानेर रै राजकुमार नैं जैसलमेर री राजकुमारी रै झगड़ै नैं पुत्र द्वारा मा री वदलो लेवण री घटणा है। घणी, घरनार रा पग झाल लेवै-'म्हनैं मौत रो डर लागै, इज घणो। बचां गूजरी री मां, म्हनैं बचा।' उपन्यास बी टेम री सामतशाही री पोलां चोखी तरियां उघाड़ै। माक्संवाद रो प्रभाव पूरी पोथी माथै लखावै।

'तीडो राव' (1966 ई.) प्रथम श्रेणी री हास्य-व्यंग्य रो उपन्यास है। प्रतीक शैली में लिख्योड़ो ओ उपन्यास तिकडम अनैं सयोग री सायता सूं ऊपर चढ़ण आळां री पोल खोलै। आज री सामाजिक-राजनीतिक नैं धार्मिक अव्यवस्था री चिट्ठो खोलण में ओ उपन्यास पूरो कामयाब है। देथाजी री भापा भावां रै सागै चालै—

1. लुगाई रै आयां गिरस्ती रा खूंटा सूं बंधग्यो तो उण रो मगज ठांणै आ जावैला।
2. भगवान चांच दी है, तो चुग्गो ई देवैला।

देथाजी इण उपन्यासां रै माध्यम सूं सामाजिक विसमतावां माथै तीखो प्रहार कर्‌यो है।

मैंकती काया मुळकती धरती—(1966 ई) श्री अन्नाराम सुदामा राजस्थानी रा चावा उपन्यासकार है। 1962 ई. रै चीनी-हमलै री पृष्ठभूमि माथै

लिख्योड़े इण उपन्यास में युद्ध री माहौल कोनी पण धरती रै प्रति प्रेम नै भावात्मक एकता री संदेश जरूर है । उपन्यास मांय सुथारी डोकरी रै जीवण री करुण गाथा है, जिकै नै आपरी नणद दोष लगा'र घर सूं काढ़ देवै अर फेर बा पूरी जिनगाणी रोती कळपती काढ़ै ।

इण उपन्यास में 'धरती धोरां री' आपरी खुबसूरती साथै प्रकट हुयी है । मरु भूमि रा वैभव, लोक विश्वास, आंचलिक जीवण रा इसा चितराम देखण नै मिलै के पाठक, उपन्यास हाथ में लियां पछै छोड़ ई कोनी । राजपूत लोगां री शरणागत रक्षा नै नारी-अस्तित्व रक्षा रा चोखा चित्र दिया है । बीकानेर रै आसै पासै री धरती ई उपन्यास में सजीव होयगी है । भासा री जीवनी-शक्ति भी सरावण जोग है । हास्य रा केई छींटा भी अठीनै-बठीनै पड़ै—

बालण जोगी घाट रै पगोथियां पर मींडकी सी बैठी मरै ।

उपन्यास नारी समस्यावां पर ठीमराई सूं विचार करै । थाणेदार ही जब थाणें मे बलात्कार करण री कोसिस करै, तद अबलावां कठै जावै ? 'मैंकती काया मुळकती धरती' राजस्थानी रो पैलो उपन्यास है ।

धोरां रो धोरी (1968ई)—श्री श्रीलाल नथमल जोशी रो ओ उपन्यास डा. एल. पी. टेसीटोरी री जिनगाणी माथै लिख्योड़ो साधारण उपन्यास है । लेखक टैसीटोरी रै जीवण री घटनावां माथै कल्पना रो रंग चढा'र पेस करी है । उपन्यास रै अंत मे 15 बरसां रा टाबर, टेसीटोरी रे कार्यो ने पूरा करण रा सकल्प लेवै—औ दरसाव पूरै उपन्यास नै कमजोर बणा देवै । पण टैसीटोरी री जीवणी समझ सारू औ उपन्यास काम रो है । धोरां री धरती रा केई चोखा चितराम ईंमे मिळे । टैसीटोरी रा आलोच देखो-'राजस्थान रै धोरां री धरती में बरयोड़ी अमोलक रतना ने बारै काढ'र परकास में लावणियो तूं है ...

मुहावरा ने कहावतां लुभावणी है ।

आमलदे (1968ई.) श्री रामदत्त सांकृत्य रो औ उपन्यास 'हेलो' मे छपयो । ओ ऐतिहासिक उपन्यास हे जिसमे आमलदे, वीरमदे विसाक पात्रां रै माध्यम सूं दसवी शती रै राजस्थान रै सांस्कृतिक जीवण री झांकी दरसाई गई है । इण मे ऐतिहासिक नामावलि नै सरस गीतां सूं सौरभ बधी है—

कुण तो गूथैंलो बाई रो सीस
कुण तो मांडैलो हाथां राचणी...

इतिहास नै कल्पनारो औ चोखो संगम है ।

हूं गोरी किन पीव री (1970ई.) — श्री यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र' हिन्दी रा चावा लिखारा है ओ उपन्यास सामाजिक जिनगाणी री मोकळी समस्यावां नै उजागर करै। भानो अर माधो सागी भाई है। भानो री घरनार सूरजडी भानो नै जुए-दारू री लत छुडावनी चावै पण वो सुधरै कोनी अर घर सू भाग जावै अर कलकत्ता जा'र खुदरो मौत रो तार भिजवा देवै। माधो घणी परेसाणी के पछै सूरजड़ी सूं सादी का लेवे अर वो रा जद तीन टावर होय जावे, तद भानो घणा सारा माल-मत्ता ले'र घर आवे। तीनू जणां परेशाणी में पड़ जावै-बाद में खुद नै हीज दोषी मान'र भानो हमेसा वास्ते घर छोड़ देवै।

बाल विवाह, विधवा विवाह, सामाजिक कुरीतियां इत्याद समस्यावां माथै लेखक पूरी निजर राखी है आज आदमी री नी पइले कीमत है—'रुपियां री। रुपिया री खातिर उण एक साथी रो खून कर नाख्यो।'

कथा मे कई कमियां है, जिणरी बाबत काफी लिख्यो गयो है।

डॉ. रामस्वरूप व्यास 'स्वातंत्र्योतर राजस्थानी गद्य साहित्य' मे लिखै— 'सूरजड़ी द्वारा पति और देवर के लिए तू सर्वनाम का प्रयोग भी अनुचित है। ऐसा प्रयोग तो अशिक्षित और बिल्कुल अनपढ़ ग्रामीण औरते भी नहीं किया करती हैं। अतः स्पष्ट होता है कि उपन्यासकार राजस्थान निवासी होते हुए भी राजस्थानी संस्कृति से अनभिज्ञ रहा है।' (पृ. 52)

इया कथा रा स्वाद पाठका नै भलीभात मिळै।

गुवारपाठो (2970 ई.) —'हरावल' रै 11 अंका माय श्री दीनदयाल 'कुंदन' रो उपन्यास प्रकासित हुयो। इण माय मगती पूरनी अर बी'रै बेटे जग्गी रो चरित्र-चित्रण है। जग्गी रै समाज माय खोटा धधा चालै, पण जग्गी ऊंचे परिवार रै मोहन सूं दोस्ती करै, अर समाज री कुरीतियां सू दूर रैवे। जग्गी री मा खुद नै सुधारै अर मरती बगत बतावै कै मोहन उण रो सागी भाई है। लेखक नै राजस्थानी आचलिक सस्कृति अर समाज नै यथार्थ रै धरातल माथै पेस करण मे मोकळी सफलता मिली है। ई उपन्यास माय ग्वारपाठो दाई जीवण रो खारोपण है, जठै जग्गी जिसा छोरा सरुपोत सूं ई जिनगाणी रा सारा घूंट पीवण लागै— 'पेट भरण ताई ओक पूरा समाज ने कित्ता भ्रष्ट छल करना पड़े।'

कुंदनजी दलित वर्ग रै जीवन रै केई पक्षां नै उजागर करया है।

जोग-संजोग (1973 ई.)—श्री चन्द्र रै इण उपन्यास मा समस्यावां रा चित्रण हुया है। कहानी रोचक है। गणेश ...

पण वी री मादी कुरूप रतन सूं होय जावै। तंग आ'र गणेश घर सूं भाग जावै अर कलकत्ता मांय रीना सूं सादी कर लेवै। सुरजीत जद 'कोढ़' सूं मरण लागै तद बो पहूचे। सुरजीत आतमघात अर लेवै।

'जोग-सजोग' पीढियां रै अन्तराल नै बड़ी सफाई सूं पेस करै।'

1. 'थारी बात न्यारी है। थे पैलड़ै पोरै रा हो, म्हे हणैरा कलजुगण्या'
2. 'गणेश रै मांय अेक नूवो गणेस जलमै।'

नूंवी पीढ़ी माय नूंवो दरद नै आक्रोस है– 'इण जुग में मोट्यार खाली धन रा ई नई, कई दूजां सुपना देखै है, जीवण रै बारै में नूवै सिरै सूं सोचण लाग्या है।'

लेखक केई सुन्दर बिम्ब नै उपमान दिया हैं– 1. चाय आधुनिक सैली र चितराम ज्यूं खिडगी 2. उणियारो दिनूगै रै पवित्र सूरज ज्यूं लागै 3. सैनाई रो सुर दुख री चानणी ज्यूं पसरगयो हो इत्यादि।

एक बीनणी दो बीन (1973 ई.) —श्री श्रीलाल नथमल जोशी रो ओ उपन्यास अंग्रेजी कवि टेनीसन री लाम्बी कविता 'ईनक आर्डन' रै कथानक नै ले'र लिख्यो गयो है। इयै मे ईनक ऐनी नै फिलिप रो त्रिकोणात्मक प्रेम, ईनक री विदेस जात्रा अर ऐनी-फिलिप रो ब्याव, फेर ईनक री मौत– ऐड़ी घटनावां माथै उपन्यास रच्यो गयो है। लेखक रूपांतर करता थका राजस्थानी सभ्यता नै संस्कृति नै नी भूल्यो है।

आंधी अर आस्था (1974 ई.) –श्री अन्नाराम सुदामा रो ओ उपन्यास शिक्षा विभाग सूं प्रकासित हुयो। इयै मे नायक जगन्नाथ री जिनगाणी रा उतार-चढाव, सामाजिक भ्रष्टाचार नै राजनीतिक आपाधापी रो सांगोपांग चित्रण है। जगन्नाथ मुसीबतां सूं जूझता थका भी सच्चाई नै भलाई नै नी छोडै अर बी नै जिनगाणी मांय आस्था अर विस्वास है, ई खातर बो ईजै लोगां रै उजड़ै जीवण माय बहार लावण री कोसिस करै।

राजस्थान रै ग्रामीण अचल री चोखी जाणकारी ई उपन्यास सूं मिलै। सुदामाजी, पजाबी भाषा मे सरदारजी सूं कहवावै– 'पुत्र झंडा, एक दफे खाडा मुख वेखूं ख्वाडी सोवां बरसा दियां उम्र'। संस्कृत, उर्दू, पंजाबी रै सागै राजस्थानी रो मिठास देखण जोग है। मुहावरा-कहावतां माथै तो सुदामाजी री मास्टरी है।

भगवान महावीर (1974 ई.) –श्री नृसिंह राजपुरोहित रो ओ उपन्यास

'आंधी अर आस्था' रै सागै ई शिक्षा विभाग सूं छप्यो। इयै में भगवान श्री महावीर स्वामी रै प्रेरणाप्रद जीवण री मनमोवणी झांकी दरसाई गई है। भगवान महावीर रै सानिध्य सूं घणा पापीं सुधर गया नै केई लोगां रा हृदय परिवर्तन हुयग्या। उपन्यासकला रा तत्व ईयै मे कम ई निजर आवै, ओ जीवनी रै अधिक निकट है।

कंवळपूजा (1974 ई.)—श्री सत्येन जोशी नै इण उपन्यास मांय भरपूर सफळता मिली है। जैसलमेर रै कनै तणोट, भाटी राजावां री रजधानी हो। बठै रो राजा राव विजयराज,महमूद गजनवी सूं जुद्ध कर अर 'कंवळ पूजा' करणी चावै पण वो कर नी सकै। 'कंवळ-पूजा' इतिहास नं कल्पना रो सुन्दर चित्राम है, जिकै में वी टेम रै इतिहास-संस्कृति नै सामाजिक अवस्थावां नैं लेखक पूरी निमता सू प्रस्तुत करी है।

जोशीजी इतिहास री पूरी जाणकारी लै'र ई उपन्यास री सर्जणा करी है। राजस्थानी उपन्यासां मांय ई रो महताऊ स्थान है।

लालड़ी अेक फेरूं गमगी (1974 ई.)—श्री सीताराम महर्षि इयै उपन्यास नै 'राष्ट्र-पूजा' रै अंक मांय पूरो प्रकासित करयो। महर्षिजी री उपन्यासकला घणपट्ट सरावणजोग है, इयै मे राजस्थानी जन-जीवण रो बावड़ पूरी तरियां सूं मिलै। सूरज आपरी करकसा घरधाळी सूं दुखी होय'र रेणु सूं प्रेम करै, पण रेणु समाज सूं परेसाण होयर दूजे मिनख सूं सादी करपरी रतनगढ़ सूं बारै चली जावै। शिमला में सूरज री भैंट नंदा सूं होवै। नंदा रतनगढ़ मे मास्टरनी बण जावै, पण वी नै भी बारै जावणो। सूरज घणो दुखी हुवै। नंदा मंसूरी री घाटी में बस सूं गिर'र मर जावै। इण भांत रेणु नै नंदा - दोय हेत री लालड़ियां नैं सूरज गमा देवै।

ओ उपन्यास सादी रै एक महताऊ समस्या नै सामै राखै। जे मर्द-लुगाई एक-दूजै'रै अन्तस नैं समझ री कोसिस नीं करै तद ब्याव रो कोई मतबल कोनी। मिनख अन्तस री भूख नैं मिटावणो चावै— 'धरम अर समाज री दुहाई सूं अंतस री भूख तो कोनी मिट सकै।' पण समाज रै बिगर मिनख री काम भी कोनी चालै। चेतन कैवै– 'समाज री जरूरत मिनख री जरूरत सूं घणमोली होवै' पण सूरज पडूत्तर देवै– 'मिनख रै मन जे असंतोष रैसी, वो समाज रा नेमां नै तोड़ नै बगांवतो जासी। जमानै रै सागै समाज नै आपरा बंधना नै ढीला करयां ई सरसी। जुग रै हेलै नै सुण्यां'ई सरसी।'

'लालड़ी अेक फेरूं गमगी' सामाजिक मूल्य-सक्रमण री जीती जागती तस्वीर है। समाज नै मिनख री प्रगति मे बाधक हुवण आला रीत-नेमां मांय

बगत मुजब फेर-बदल करणो ई चाहीजै अनै आदर्शां रा मान भी बदळीजणा चाहिजै ।

रैल्फ फावस 'उपन्यास अनै लोक-जीवण' में कैवै—चोखा उपन्यास जीवण री घणघट्ट भावमय रा प्रेरणापूर्ण टीका हुवै। आज आपां रै उपन्यासां मांय नायक नै खलधायक दोनूं ई खतम होयग्या है– उणां रा व्यक्तित्व, खुर्दबीन री स्लाइड माथै चिपक्योड़ी रंगबिरंगी कतरनां दांई रैगयो है । सूरज जाणै कै अतस री भूख तो अन्तस रै हेत सू ई मिट्या करै ।' सांची बात आ है कै 'जै जीवण साथी रा विचार, विहार, शिक्षा, सँसकार अर सुभाव रळतो नीं होवै तो फेर वां रो साथ, खरा अरथां मांय किण भांत निभै ?'

इण भात महर्षिजी व्यक्ति, विवाह, समाज, धरम इत्याद घणी समस्यावां माथै गरुठ चिंतन करचो है । राजस्थानी भाषा रो मिठास मन नै मोह लेवै 'सूरज आपरा दोनूं हाथां नै जोया । वै खुला पड़्या हा । उण मांय भी उण री बा प्रीत री लालड़ी कोनी ही । राजस्थानी उपन्यासां माय 'लालड़ी' रो स्थान घणी ऊचाई माथै है ।

तिरसंकू (1975 ई)—श्री छत्रपतिसिंह प्रगतिशील चेतना रा उपन्यासकार है। इण मे पवन नै लीना रै माध्यम सूं सामाजिक क्रांति, वर्ग संघर्ष,वर्गहीन समाज री थरपणा इत्याद विचारां नै व्यक्त किया गया है । 'आधुनिक शिक्षा रै बारे मे बापू कैवै–'घणो पढ लिख'र मिनख सांचली दुनिया सू कतरावण लाग जावै । सुपनां मे रैवण लाग जावै ।' च्यारू मेर भ्रष्टाचार फैलयोड़ो है–'चार सौ माथै दस्तखत कर ढाई सौ लेवणा' मजबूरी है । देस मे मुंगाई नै गरीबी री बोल-बालो है । अर्थ आजरो सब सूं मौलिक मूल्य है ।

सामती जीवण रै अवसेसां मांयै ओ उपन्यास रच्यो गयो है । पीढियां री अन्तराल इण अवळियां माय देखो– 'जिण जमीदार रै कुंवर रै सामी थारो बाप हाथ बाधा रैवे, उण कुंवर रै सामी ऊभो हुंवतां तनै लाज आ रैयी है ।' 'तिरसंकू री शैल वर्गहीन समाज री थरपणा माथै जोर देवै–' 'सारे वरग री जड़ां काटनी पड़ैली ।' बा 'विना ऊच-नीच रै समाज री थापना' करणी चावै । राजनीति री उठा-पटक माथै भी उपन्यासकार री निजर है । लीना कैवै—'म्हारे विचार मे वै देस वीरतारों सनमान कोनी करै, पण किणी राजनीतिक कारण सूं पदक बाटे है ।'

'तिरसकू' मे प्रकृति रा केई सुंदर चितराम देखण नै मिले ।

काल-भैरवी (1975 ई.) —श्री रामनिवास शर्मा रो ओ उपन्यास मध्ययुग रै राजस्थान रै गांवां मे फैल्योड़ै जंत्र-मंत्र रै माहौल नै पेस करै । काळ-भैरवी रै माध्यम सूं गांव आळां री धार्मिक आस्था, अंधविस्वास इत्याद नै उजागर करयो गयो है। प्राकृति रा केई सांगोपांग चित्र है, पण एक सरीसा वर्णन पाठकां नै उबा नाखै ।

कुण समझै संवरी रा कौळ (1976 ई.)—श्री सीताराम महर्षि ने लाडां रै माध्यम सूं नारीजीवण री विडम्बनावां अर वां सूं जूझण री खिमता रो परिचय दियो गयो है। लाडां रो धणी शक्की सुभाव रो है, वो लाडां नै छोड़ देवै पण लाडां हीमत नी हारै अर चपण री सहता सूं नर्स वण जावै अर नूं वो जीवण सरु करै । इण उपन्यास मांय नारी जीवण री विवशता, दहेज, अन्याय इत्याद माथै ठीमराई सूं विचार करयो गयो है ।

दहेज रै अभिसाप माथै लाडा सोचै— 'दस हजार मांय सौदो पक्को होयो ··· पीसां रा भूखा मिनख, आदमी रा गुण कद देख पावै ।'

इण उपन्यास मांय मिनख-लुगाई रै सम्बन्धा माथै केई मीठां सू आलोच कियो गयो है । आज इयै लखीजै कै 'अेक दूजे नै समझण री खिमता निवड़गी ।' दोनूं जणा न्यारा-न्यारा सूचनां अर पता मांडण लाग गया है । एक दूजै नै समझण री जरूरत है । लारली जिनगाणी नै जीवण री जरूरत कोनी— 'जिनगाणी खाली दूजा री ई क्यू देखीजै ? आपरी जिनगाणी के दाग बिहूणी होवे । भूल करणो तो मिनख रो सुभाव होवै ।' सुखी दाम्पत्य तांई ओ जरूरी है कै दोन्यू अेक दूजै री भावना नै समझै । दोना मांय सूं अेक भी जे लाठी री भासा बोलणो सरु करै तो जिनगाणी पागली वण जावै ।' मरद जब समझ लागै कै 'लुगाई पग री जूती होवै, अेक फाटी तो दूजी नू वी आयगी' तो दाम्पत्य जीवन कोना चालै । लाडा र रूप मे नूं वो जुग रो परनार कंवै— 'मैं तो म्हारी अक्कल सूं परख कर ई कोई बात मानस्यू ।'

लेखक समस्या रो ठीक निर्वाह करयो है ।

मैवै रा रूंख (1977 ई)—श्री अन्नाराम सुदामा केवै अेक जीवण-दीठ है जिकी गहराई सूं गावा रै लोगा री जिनगाणी नै देखै-परखै । सुदामाजी आंचलिक उपन्यासकार है । उणा री दीठ बीकानेर रै आसै पासै बसे गावां सू चोखी तरिया सूं परिचित है । गांवा मे भ्रष्टाचार पंजो पसार चुक्यो है, अर भूंडी राजनीति रै चक्करा मांय गांव आळा पिसीज रैया है, इण बात नै सुदामा जी फरीद ढग सूं व्यक्त करयो है । कठाग्यिाजी जिसी लुगाइया भी अबै राजनीति रै मैदान मे आयगी है । लोग मानै'क आ जीतगी तो आपणं गाव नै गुलजार कर देसी । राजनीति मे केई लुगाया मरदा रा हाथ मोकळा लाम्बा हुवै । लेखक चावै कै

भाईचारा बधै । सूरदास कैवै– 'वर्ग भेद री भींत सूं ऊपर, भूली भटकी अर दुखियारी मानवी चेतना खातर उपासरा रो बोपार चालू राखणो चाइजै ।' सार्गै ई आपां नै जांत-पात, ऊंच नीच सूं भी ऊपर उठणो चाइजै ।

खुलती गांठा (1977 ई)—श्री पारस अरोड़ा ई उपन्यास मे जोधपुर अर वीं रै पाकती गांव रूपा लूरै जनजीवण रो सफल चित्रण करयो है । ईयै माय सामाजिक मान-मूल्य अनै उणा री मक्रमणसीलता माथै गैराई सूं विचार करयो गयो है । आजादी रै बाद राजस्थान रै गावा मांय भी नूंवी कळक-हूंकळ निजर आवण लागी है । बाल विधवा तारा सूरज सू हेत राखै, पण जात-पांत अनै वरग-भेद रै कारण बी सूं सादी नी कर सकै । 'सूरज नै जोधपुर भेज्यो जावै, जठै बा निरमला रै सम्पर्क में आवै, बी नै समझा'र तारा सू कोर्ट-मैरिज कर लेवै । ई उपन्यास मांय भी विधवा समस्यां, बलात्कार काड, वरग-भेद जिसी समस्यावां पर विचार करयो गयो है । आज पीमो भगवान वण गयो है । ओया महाराज रो बेटो इ खातर बाप नै छोड़ जावै । महाराज सेठजी सूं कैवै के जद बेटो कठै निजर आ जावै तो केइजो 'थारो बाप कीयो थारैं सूं रुपिया-पैसा मागे; 'खुलती गांठां' आज रै सामाजिक बदलाव मैं चोखी तरियां सूं व्यक्त करै । आज च्याह मेर मौन विकृति निजर आवै । किसना काका कैवै– 'छोरा बेटा टोली री टोली बणायर सामली मिंदर री चांतरी माथै जम जाई, पछै अै बेटा लुगाया नै आंख्यां फाड़-फाड़'र देखण लाग जावै । जबर तूफान मचाय राख्यो है । कोई किणी नै कांकरी मार रैयो है तो कोई किसी रै लारै जा रैयो है, तो कोई किसी नै इसारा कर रैयां है ।' तारा जिसी लुगाईयां हीमत कर'र दुराचार सूं लड़ण री कोसिस करै पण कद ताई ?

'खुलती गांठा' ऊंघता-जागता गांवां री कथा है ।

मिनख रा खोज (1979 ई.)—राजस्थानी उपन्यास घणकर गांवा सूं जुड़योड़ा है अर वठै री समस्यावां नै उजागर करण मे लाग्योड़ा है । श्री बी एल. माली रो ओ उपन्यास भी गावा रै बदळाव नै अंकित करै । लिखमसर गांव री सामाजिक दसा रो चित्रण केई कोणा सूं करयो गयो है । जात-पात वरग-भेद इत्याद सूं ऊपर उठ'र मानव मूल्या री अभिव्यक्ति इयै में मिलै । ब्याव री नूंवी रीता रा केई चित्र इयै मे है । कालू बिगर 'तोरण मारै' अर फेरा लिया ई ब्याव करै । खुद मुरली कोरट मे ब्याव करै । मुरली जात-पात री भींता नै बरोबर तोड़तो रैवै । वो कैवै– 'थां आ नी देखी कै जांत-पात सू आदमी, आदमी सू फटयो है, फटयो है ।' मुरली अर मजू दोनू मुवा आक्रोश नै व्यक्त करै । मानू भी मानै कै 'सै आदमी है भाया' कोई रै भी चामड़ी री जगा सोनो कोनी ।'

रोतो घाटो (1981 ई.)—श्री भूरसिंह राठौड़ इण ऐतिहासिक उपन्यास मे बीकानेर री थापना रै बगत री सामाजिक-राजनीतिक दसावा रो सांगोपांग चित-

राम दियो है। राव बीका जी नैं कांधलजी जिणभांत बीकानेर नगर बसायो, वारों ऐतिहासिक विवरण, जड़ाऊ भाषा में दियो गयो है। बी टेम री धारणा ही कै 'बिलोच लुटेरां सूं लारो छुड़ा सकै, बो अठै रो राजा हुय सकै है। विरोध करणियां कोई नी है।' बंधु-बांधवां रा विश्वास ई राजनीति रो आधार हो। कांधलजी कंवै– 'जकै दिन इयै मरयादा मे कमी पड़सी बियै दिन ही इयै राज री नींव लागती दीससी।'

बीकानेर री थापणा रो ओ प्रमाणिक दस्तावेज है।

इंकीजता मानवी (1981 ई)—श्री अन्नाराम सुदामा इंकीजता मानवी मे जड़ाव जिसा सशक्त नारी पात्र दिया है, जिका आवटोपस दांई मिनख नैं कर्जे रै पर्जे मांय जकड खून चूसै। जड़ाव अनैं जसोदा जिसी अपाणयत दिखावण आळी लुगाइया ब्याज रो धंधो कर'र लोगां नैं लूटै। "इंकीजता मानवी' में जठैअ डम्बर, अधविश्वास अर आधी-होड रा सैंज अर जीवंत चितराम ऊभरै, वठै पाठक नैं एक इमी दीठ मिलै कै आखर ई आखै जाळ चक्र नै कुण तो चलावै अर क्यो ?"

आजकाल परिवारिक सम्बधां नैं घुण लाग रैयो है। सयुक्त परिवार टूट रैया है–'बडोड़ै नैं तो पांच बरसा हुआ है न्यारा हुया होळी-दिवाळी रामरमी ही भले किसी क हुवै है।' अपणायत तो रैयी ही नी है। बेरोजगारी री समस्या सू युवा पीढी जूझ रैयी है। ढगसर नौकरी नी मिलण सूं आतमहीनता री भावना युवका में आ रैयी है। साच कंवन आळा डर रैया है 'ओ जग वाली कूकरी, जे छडू तो खाय, साची कैया मां ही कूटै।' सामाजिक परिवेश रो सांतरो चितराम 'इकीजता मानवी' मे देखण नैं मिलै।

भोलावण (1982 ई.)—श्री मालचद तिवाड़ी रो ओ उपन्यास सामाजिक भ्रस्टाचार अनैं आर्थिक शोषण रा केई रूप प्रस्तुत करै। मदजी परिवार, समाज अनैं राजनीति रो सिकार है। आज समाज रा बडा तबका शोषण री चक्की माय पिसीज रैया है अर पूंजीपति पीसा री चहळावळ मे आपरो असली चहरो लुकार चडाळ-चौकडी मांड रैया है। गरीबां री भावनावा रा जळजोर, माय ई माय जोर मार रैया है। सम्बधा रा लेखा-जोखा पीसा सूं ई होय रैया है। धनवान बाप बेटे नैं कंवै 'इण राक्षस नैं जे हू जेवडा नही घला दूं तो म्हारो नाव नी।'

समाजिक बदळाव रै बारे मे डा. जे. बी. चिताम्बर लिख्यो है कै इण सारु घणकर कारण हुवै। जीवण रै किणी एक पक्ष मे होया बदळाव सू केई बदलाव री शृंखलाबद्ध प्रतिक्रिया सरू होय जावै। 'भोलावण' मे गांवा माय होवण आळा केई बदळाव देखण नैं मिले। 'अडाणगत' करण आळा छोगराज, लुगाया रा घाघरिया तकात अडाणै राख लेवै। गरीबी इत्ती कै लुगाई जद छोरै नैं आगै करै तो सेठजी कंव। 'ई कीड़े रो कांई बटै है। थारा पइसा बोल।'

'भोलावण' कर्ज मे डूब्योड़ै गांव री दरदनाक कथा है। वर्ग-संघर्ष, अर्थ-संघर्ष नै राजनीति रै दांव पेचां री कहाणी है।

बंजू (1983 ई.)—इण लघु उपन्यास माय जिनगानी सूं जूझनो बंजू रो चित्रण अद्भुतजी करचो है। बंजू बालपण सूं ई विद्रोही अनै स्वाभिमानी है- 'हैडमास्टर सा'व। आपरी गलती री मार मैं नी खावूं'ला' बो पत्नी नै प्रेमिका रै द्वंद्व सूं गुजर आपरै पंरां माथै खड़ो हुवै नै फेर टूट'र मर जावै। बंजू रो चरित्र भोत ई झिलमिल है उपन्यासकार आखिर कंवणो कांई चावै। 'मिनख रा खोज' रै उपन्यासकार सूं घणी निरासा हुयी है।

घर-संसार (1983 ई.)—श्री अम्बाराम 'सुदामा' रो' घर संसार' एक इसी 'जुवती री व्यथा-कथा है, जिकी आपरै कट्टरपंथी परवार रै एक कूड़ै वेम रो सिकार हुवै। गळतै स्वाभिमान अर हीनता रै तणतै उचकतै ठोलै नीचै बी रो दम घुटै। बा आपरी दृढ आस्था पर घर छोड़ण रो एक इसो निरणै करलै है कै सामनै बीरै अत्याचारां रो आलप्स हुवै चावै पापां रो 'पिरनीज', बा टूटो भलां ही, झूकै नही, आगै बढै।"

सुदामाजी री कलम सोसण, अन्याव अर विसमता रै प्रति सद सूं आक्रोस व्यक्त करती आयी है। 'घर-संसार' रा पंला भाग में सुधा रै माध्यम सूं नारी जीवण री दरद भरी कथा कंयी गयी है। बा समाज मे नूंवो जीवण लावण री कोसिस करै। जात-पांत, रंगभेद, सम्प्रदाय इत्यादि सूं थेट बा। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' री भावना रो प्रचय करै–'एक बाप री सताना मे भीत कठै ही खड़ी क्यो हुवै ?''' आखै मानखै री सेवा ही,मूल मे थारी सेवा है।'

'घर-संसार' बदळता सम्बधां रा चितराम है। सुधा कंवै 'ससार किसो'क वेगो सिरकै है, सिरकणो ही काम है ई रो, पण सिरकै सम्बंध है अर सम्बंध झूठा है।' जण-जीवण रा यथारथवादी दरसाव घणा चोखा है। लेखक नैतिक मूल्या री थापणा री पूरी कोसिस करी है, सागै ई पुरसारथ नै श्रम रै महत्त्व रो भी प्रतिपादन करयो है: 'आपणां सोनो तो राजी हुया धरती उगळसी, पसीनों आपणो वीनै धपाउ रो चढणां चाईजै।'

लेखक दायजै माथै भी व्यग्य करयो है। केई छोरया तो ब्याव रो ढोंग रच'र दायजो ले'र भाग जावै, अर धणकर इयै रै कारण जीवण सूं निरास होय जावै– 'आजकल बिचारी बहु तन को तो दहेज खाई बैठा।' नारी-जीवण री दुर्दसा केई तरै सूं होय रैयी है। हर सास री निजरा देखै– 'कोई फंसनेबल, आज री बम्बइया बीनणी' बजार घणो ही लम्बो है। सम्बंधा री कड़वोहट च्यारूंकानी देखण नै आवै।

'घर-संसार' बुगली-दुनिया रा चोला पोत उघाड़ै।

मंत्री री बेटी (1985 ई.)—ई राजनीतिक उपन्यास रै माध्यम सूं श्री करणीदान बारहठ आज री राजनीति री उठा-पटक रा पूरमपूर चित्रण करघो है। आज सगळा जणा एकइजै नै ओळमो देवै, पण इयै रो धणी कुण। नेता, नागरिक का फेर व्यवस्था है ? 'मंत्री री बेटी' में एक मंत्री कँवै– 'या तो म्हे इण देस नै एहड़ो बणा देस्यां के ओ ओजूं सोनै री चिड़िया बण ज्यासी या फेर ऐहड़ो बिगाड़ देस्यां के आगै री पीढ़ी ईं नै सुधार नीं सकै।' आज भी ओ सवाल आपां रै सामै है। 'मंत्री री बेटी' मे ठेठ गांव सूं ले'र सहर तांई छायोड़ी राजनीति री पोल खोलीजी है। मंत्रीजी कँवै- 'जनतंत्र व्यवस्था माड़ी कोनी, पण ई नै जमावणो जरूरी है, लोग पूरा भण जी सी, समझ पकड़ जीसी ''' ओ जको फरक लगावै है गरीब अमीर ओ भी मिट ज्यासी। पण टेम लागै है।'

लेखक आसावादी है– 'आपणै देस रा आवण आळा दिन भोत ऊजळा है।'

☐ ☐

सुततरता रै बाद रै साहित मांय केई तरियां रा बदलाव निजर आवै। खासकर उपन्यास साहित मांय उरकेल गांवा रा चित्रण देखण जोग है। ई रै सागै ई 'जीयोड़े साच' नै देखण री कोसिस करी गई है।

बदळता मूल्य–राजस्थानी उपन्यासां रै माध्यम सूं बदलीजता मूल्यां रा घण खरा चितराम सामै आवै। जठै परमपरागत मूल्यां नै उकेरा गया है, बठै नूंवै मूल्यां नै सगक्ष री भी कोसिस करी गई है। ब्याव, दाम्पत्य, हेत इत्याद सै बाता मे बदळाव निजर आय रैया है। 'सगळा नै आपरै सुख री चिंता है .. आखो परिवेस बदळग्यो है।' (जोग संजोग) पीढ़ियां रा अन्तराल काफी बधग्या है। नूंवी पीढी कँवै–'बडेरा जको बातां नीं कर सक्या, वे म्हे अबै कर दूं तो कांई हरज है। आपा बडेरां रा ग्यान माथै आंख्यां मींच नै भरोसो क्यूं करां।' (मां री बदलो, भाग-I) अर 'खुद तो सारी जिंदगी मटियामेट कर लीनी, अब छोरा नै तो रस्तो ढूंढबा द्यो।'

नारी-जीवण मे भी बदलाव आया है। नारी शक्ति अनै खिमता रो पूरो परिचय इण उपन्यासां में मिलै। सागै ई बांरी दुरदसा रा भी घणां चितराम देखण नै मिलै।

पीसा आज सब सूं महताऊ मूल्य है। प्रसादजी 'तितली' उपन्यास में लिख्या है– 'मनुष्य, मनुष्य के दुख-सुख से सौदा करने लगता है और उसका मान दण्ड बन जाता है रुपया।'

धरती धोरां री–इण उपन्यासां मांय राजस्थान की धरती, खासकर धोरां री धरती रा मनमोवणा चितराम देखण नै मिलै। जियां—

1. 'फागण रो म्हीनो, होळी रा दिन, दही सी चांदनी, धरती पर पसरेड़ी, मीठो-मीठो सीतळ बायरो डोलरयूं रम्मे तो सुहावै, मन भावै '' बांरै चूंतरी

पर छोरयां होळी रा गीत गावै– 'चांद चढ्यो गिगनार, किररयां ढळ रयी जी ढळ रयी'। (मत्री री बेटी, पृ० 9)

2. 'दियाळी रा दिया दीठा, काचर बोर मतीरा मीठा' 'अे सुर लोकवाणी पर बैठ'र सीधा गाव री पून मे उछळग्या। बीं दिन हवा खासी सामी ही, दिया उजास पकडता ही फड़-फड़ करता वडा हुग्या। दारू, छोरां अेस खूब छोड्यो ।' (घर-समार, पृ० 210)

3. 'अेक दिन दुपारै बैसाख रो तावड़ियो जोरा मूं तप रैयो थो। लूवा चाल री ही। ऊनाळै री तपत सूं गळी रा गडक सिसक रैया हा। सागीड़ी सूनवाड छायोडी ही।' (हूं गोरी किण पीव री, पृ० 24)

बळती बालू अर लूवा रै सागै ई चंदरमा रो ठंडो चकासो भी दीसै। सागै ई अकाल गे परकोप भी। जोधपुर रो चितराम देखो' डूंगर सूं घिरयोडी, लालभाटा सूं चिण्योडी नगरी मे केसरिया कसूमल राठौडी साफां मे मिनख आ भात-भात रै गैरै गामां में गैणा पैरयोडी लुगायां नै मधरी मारवाडी मे बातां'' (धोरा रो धोरी, पृ० 55)

ई उपन्यासा रा पग घणखर राजस्थान मे ई रैवै। कदै कदास कलकत्ता, शिमला, हरद्वार, दिल्ली इत्याद चल्या जावै। माटी री सोरभ नै नी छोड़ै। इण उपन्यासां माय लोकगीता रा मिठास भी मिलै। राजस्थानी संस्कृति री अनेक बाता री अभिव्यक्ति इण उपन्यासा मे हुई है।

आंचळिक–राजस्थानी रा घणखर उपन्यास गांवा री जिनगाणी सूं जुड्योडा है। गांवा रा रहण-सहण, पैरावा, बोलचाल, जीवणदर्शन इत्याद रो सांगोपाग चितराम अकित हुया है। चोखी सूरत माथै थुथको न्हाकता लोग, अंधविस्वासां मे डूब्योडा लोग, गरीबी अनै कर्ज री मार सूं डकीजता मानवी, सोसण माथै मोसस–महाजन गी ओर सू नै राजनीति प्रशासन री ओर सूं। फेर भी गावा मे चेतना बापरण लागी है। 'खुलती गाठा' रो सूरज सोचण लाग्यो है–'ओ जातपांत रो झगडो कित्तो विकट है।' या 'जात-पांत ऊच-नीच अर अमीर-गरीब रो फरक हाल नी मिटियो।'

गावां मे भौतिक रूप सू फरक आयां है– 'आजादी रै पछे गांवा रै विकास सारु जिकी योजनावा बणी उण मे सिमरथ करसा आप रै पइसै, मेंणत अर सिरकारु इमदाद रै स्यारै गावां री काया पलट करण रो निरणै लियो।' (खुलती गाठा, पृष्ठ 9)

उपन्यासा सू ठा पड़ै कै राजस्थान रा गांव जाग रैया है। इण मे नूंवी चेतना, नूवो सोच नै नूंवी जीवण-दृष्टि करवट लेय रैयी है। अठै रै लोगां मे महानगरा जिसा सन्त्रास अजनबीपन, अलगाव न कुण्ठा जिसी स्थितिया कोनी

मिलै। सीदी सादी जिनगाणी अनै बीं सूं संघर्ष करण आळी। स्थितियां ई निजर आवै।

भाषा—घणखरा उपन्यास मारवाड़ प्रदेस मांय लिख्या गया है, ईं सारू मारवाड़ री बोली अनै गीतां रै प्रभाव देखण नै मिलै। आलंकारिक सौंदर्य नै प्रकट करण आळा शब्द विन्यास ठौर-ठौर माथै म्है देख सकां— आंख्या गूंगे री हुवै ज्यूं खुली रैयगी, उण रो काळजो मैण दई गलण लाग गयो, कतरणी हालै ज्यूं जीभ हालती ही, ऊंदरा रै बिल मे हाथी कीकर समावै, सरायोड़ी खीचड़ी दांतां चढ़ै, *बिंधग्या मो मोती, पूत रा पग पालणै ई दीसं जावै* इत्याद।

अेक बात घणी अखरै जिकै रै बाबत पैलां लिख्यो गयो है कै जातिवाचक सन्नावां रो प्रयोग बिगाड़'र नी लिखणा चाहिजै।

ओ चोखी बात है कै राजस्थानी भाषा, हिन्दी अनै दूजी भारतीय भाषावां रा शब्द लेय'र आपरो शब्द-कोष बधा रैयी है। आ जरूरी है, वरना भाषा रो विकास कोनी हुवै। शिवचंद्र भरतिया 'कनक सुन्दर' में ई ईं आदर्श नै प्रस्तुत करयो— 'हर हर !! महादुख की बात है, इश श्रेष्ठ वर्ण का लोग धेला-धेला के के तांई भळती-सळती जगा धक्कां खावाने जावै।'

लोक उपन्यासां मे भाषा रो मिठास तो सरावण जोग है। 'तीडो राव' अनै 'मां रो बदळो' जिसे उपन्यासां मे व्यंग्य शैली कमाल री है। घणखरा उपन्यासा मे वर्णात्मक शैली ई देखण में आवै। 'मैकती काया मुळकती धरती' मे आत्म-कथात्मक शैली है। 'तीडो राव' में प्रतीक शैली रो सातरो प्रयोग हुयो है।

राजस्थानी उपन्यासा मे जठै इत्ती विशेषतावां निजर आवै, वठै ई री सीमावा भी देखण नै मिलै—

(1) राजस्थानी उपन्यासा मांय चरित्र चित्रण माथै ज्यादा ध्यान दियो गयो है। डॉ नाहटा लिखै—'कहीं-कहीं तो यह तत्व इतना अधिक उभर कर प्रकट हुआ है कि घटना और उसके बीच सन्तुलन ही बिगड़ गया है और कई घटनाएं अस्वाभाविक एवं अतिरंजनापूर्ण लगने लगती है।' जियां डूबते जहाज रै टैम भी टैसीटोरी पोथी में डुबोयोड़ो है। कथ्य सम्बन्धी अनेक दोष उपन्यासां में देख्या जा सकै। 'तिरसकू' री लीना, 'कंवळ पूजा' रा केसरी, 'हूं गोरी किण पी री' रा ठरकैल गौरीशंकर इत्याद रो ढंग सूं विकास कोनी होय सक्यो।

(2) उपन्यास युगजीवण रो सशक्त माध्यम है। राष्ट्रीय नै अन्तर्राष्ट्रीय फलका माथै रच्योड़ी-घट्योड़ी घटनावां रो जीवतो चितराम है, पण राजस्थानी उपन्यासां रो कथ्य सीमित है। आंचलिकता सूं वधर पात्रा नै राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समस्यावां सूं जूझता म्है नी देख सकां। हालतांई छोटे दायरे मे ही वै घूमै। थोड़ो भोत असर भी है, पण गिणती में नी आवै। मनोवैज्ञानिक दीठ

सूं पात्रां रो चरित्रांकन अबै हुवण लाग्यो है।

(3) फालतू रा विवरण अजूं तोड़ी उपन्यासां मे होय रैया है। 'ग्याई ग्याई सीचड़ी', 'बघार दियोड़ी कड़ी', 'राबड़िया' इत्यादि आंचलिक खाणपाण री दीठ सूं तो ठीक है, पण ईं'रा लाम्बा चौड़ा विवरण ऊब पैदा करै। ठौर-ठौर माथै जीमण-जूंठण रो सांगोपांग विवरण सू' केई उपन्यास अखरै। दुनिया कठै री कठै पूंचगी है, पण इण उपन्यासां मे दीठ रो विस्तार कोनी दीसै।

(4) अबै तो प्रकासण रो अभाव भी कोनी। केई उपन्यासकार ईं साद साधन सम्पन्न है, छप भी रैया है, पण बहोत चोखे स्तर रा उपन्यास बहुत कम है। डॉ. किरण नाहटा भी कैवै– *'उपन्यास के विविध रूपों– ऐतिहासिक, राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक, जासूसी, रोमांटिक एवं साहसिक आदि का– राजस्थानी मे अभी तक अभाव है। उसके शिल्प में वह मंजाव एवं कसाव नहीं आया है, जो आज के अच्छे हिन्दी उपन्यासों में सामान्यतः देखने को मिलता है।'* अबै विवधता तो आय रैयी है, पण उत्ती कोनी।

एक बात ओर– राजस्थानी साहित्य अकादमी सूं प्रकासण रो काम बंद हो होयग्यो है, नीतर अच्छे लिखारा नै प्रोत्साहन मिलतो। साधणहीन उपन्यासकारां रा उपन्यास छपता।

कैवण रो मुतबळ ओ है कै आंचलिक उपन्यासां रै जरिये सूं भी उपन्यास कला नै नूवो आयाम दिया जा सकै। अंग्रेजी उपन्यासकार हार्डी नै हिन्दी उपन्यासकार रेणु आ बात कर दिखाई है। अेक छोटे मे अंचल नै लेय'र उपन्यास नै ऊंचै परिप्रेक्ष्य मे प्रस्तुत करयो जा सकै। राजस्थान रै जनजीवण रै तेवरा अनै उण रै दुरभाग-दुमारे नै आज रै व्यापक सन्दर्भ मे पेस करण री कोसिस होय रैयी है, आ चोखी बात है। आठवें दसक में घणकरा टंकावळ उपन्यास सामैं आया है, पण मंजिल अबार ओर पूरी करणी है। राजस्थानी घणमोली रचनावां रा आपां सगळां नै इन्तजार है। प्रसादजी कैयो हो–

'इस पथ का उद्देश्य नहीं है श्रांत भवन में टिक रहना
किंतु पहुचना उस मंजिल तक जिसके आगे राह नहीं'

आपांरी मीट राजस्थानी उपन्यासकारां माथै लाग्योड़ी है।

सदर्भ ग्रथ–

1. डॉ किरण नाहटा– आधुनिक राजस्थानी साहित्य : प्रेरणास्रोत और प्रवृत्तिया
2. डॉ. रामस्वरूप व्यास– *स्वातन्त्र्योत्तर राजस्थानी गद्य साहित्य* का समीक्षात्मक एव विकासात्मक इतिहास

□ □

आधुनिक राजस्थानी कहाणी

किरण नाहटा

बातां री झीणी, मीठी, मधरी गत सूं तो राजस्थानी साहित सतरहवै सइकै सूं ही सैंठी सेंध-पिछाण घालली ही, पण आज जिण नैं आपां कहाणी नांव सूं ओळखां, उण साहितिक विधा सूं तो उण री दोस्तीचारो मोटामोटी बीसवैं सइकै में ही हुयो। अंग्रेजी री "शार्ट स्टोरी" बंगला अर मराठी रै गैलै सूं चालती राजस्थानी मांय कहाणी नांव सूं आपरी ओळखाण थापी। सरूपोत में श्री शिवचन्द्रजी भरतिया संवत् 1961 में "विश्रान्त प्रवासी" नांव री कहाणी लिखी। उणरै बाद श्री शिवनारायण तोशनीवाल, श्री गुलाबचंद नागोरी आद साहितकार भी राजस्थानी में नूंवै ढाळै री कहाणी लिखण लाग्या। अै दिसावरी राजस्थानी, बरसां लग राजस्थानी गद्य साहित री श्रीवृद्धि करता रैया पण अफसोस इणी बात रो रैयो कै राजस्थान रा उण बगत रा साहितकारां री निजरां, आ बात नीं चढ़ी अर राजस्थानी गद्य रो ओ सान्तरो प्रवाह आगै नीं बध सक्यो। औ प्रवाह रै थम्यां रै बरसां बाद श्री मुरलीधर व्यास अर श्री श्रीचन्दराय माथुर आद साहितकार नूंवै सिरै सूं इण काम नैं पोळायो। उण रै पछै तो कहाणी री आ धारा दिनोदिन वेग सूं वधती जा रैयी है। श्री व्यास रो पैलो कहाणी-

संग्रह "बरसगांठ" नांव सूं वि. स. 2013 मे सामै आयो। यूं इण संकलण रै छपणै सू आठ–दस बरस आगूंच ही कहाणी लिखण लागग्या हा। तद सूं लगाय'र आज ताईं रै चार दसका मे राजस्थानी रै मोकळा ही लिखारां रा पचासूं कहाणी-संग्रै सामै आय चुक्या है। आ चार दसकां मे राजस्थानी कहाणी कथ्य अर शिल्प दोनां ही दीठ सूं घणी आगै बधी है।

विषय-वस्तु अर कथा तत्वां री दीठ सूं कहाणी रा मोकळा ही भेदोपभेद करीज्या है। विषय-वस्तु री दीठ सूं कहाणी रा सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, मनोवैज्ञानिक, मनोविश्लेषणात्मक, घटना-प्रधान, भाव-प्रधान, वर्णन-प्रधान, कल्पना-प्रधान, हास्य अर व्यंग्य-प्रधान, रहस्य अर रोमांच-प्रधान अर कथा तत्वां री दीठ सूं वातावरण-प्रधान, चरित्र-चित्रण प्रधान आद भेद करीजै अर इणी भान्त शैली री दीठ सूं वर्णनात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, डायरी शैली आद न्यारा-न्यारा भेद करीजै। यूं तो आज री राजस्थानी कहाणी मे ढूंढ्यां-टंटोळ्यां आ सगळा रूपां री कहाण्यां लाध ज्यासी, पण बडेरचारो सामाजिक कहाणी रो ही रैयो है।

सामाजिक कहाण्या भी तीन भांत री हुवै–एक जिण मे व्यक्ति केन्द्र मे हुवै, बीजी जिण मे परिवार मार्थं निजरां रैवै अर तीजी जिण रै मांय समष्टि जीवण मार्थं ध्यान दिरीजै। राजस्थानी में तीनूं ही भांत री कहाण्यां मिळै।

राजस्थानी कहाणी रै पैलै दौर मे लिखीज्योड़ी दिसावरी लेखका री कहाण्यां मोटामोटी सामाजिक ही रैयी है। बी बगत देस मे सगळै ही सुधार रो बायरो वाजै हो, इण वास्तै आं कहाण्यां मे भी सुधार रा बोल ही खास करनै सुणीजै। आपरै बगत री घण चरचीजती सामाजिक समस्यावां नै जथारथ रै धरातल मार्थं उठा'र वारो आदर्शवादी समाधान देवण री प्रवृत्ति उण बगत री कहाण्या में साफ लखावै। इण दीठ सूं "बड़ी तीज", "स्त्री शिक्षण को ओनामा" आद कहाण्यां उल्लेखण जोग रैयी है।

आ दिसावरी लोगां री कहाण्या रै बाद कीं बरसा लग राजस्थानी कहाणी में सन्नाटो छायोडो रैयो। ईं सन्नाटै न भांगणिया श्री मुरलीधर व्यास री कहाण्यां खास करनै सामाजिक कहाण्यां ही रैयी है। वांरै "बरसगांठ" कहाणी संग्रै री घणकरी कहाण्यां समसामयिक सामाजिक

जीवण सूं जुड़योड़ी है। आं कहाण्यां में आम आदमी रै जीवण री अबखायां रो सांगोपांग अंकण हुयो है। आं कहाण्यां मे अेकै कानी कमजोर अर निमळा लोगां री बेबसी अर लूंठा लोगा री धींगामस्ती अर जोरामरदी उकेरीजी है तो बीजै कानी भूख अर काळ सूं बांथेड़ो करती मऊ अर गुलछर्रा उडाती अमीर बदमिजाजी री सान्तरी तस्वीर खाचीजी है। ईं दीठ सूं बारी "बरसगांठ", "मेह मामो", "धरम री बेटी" आद कहाण्यां उल्लेखण जोग बण पड़ी है।

श्री मुरलीधर व्यास जठै आपरी कहाण्यां में मोटामोटी सै'री जीवण री न्यारी-न्यारी गतां री छिब आंकी है, बठै श्री नानूराम संस्कर्ता, श्री नृसिंह राजपुरोहित अर श्री बैजनाथ पंवार आपरी कहाण्यां में राजस्थान रै गावडियै समाज रो सांचो हाल सखरै ढंग सूं मांड्यो है।

श्री नानूराम संस्कर्ता आपरै पैलडै कहाणी संग्र "ग्योंयी" सूं राजस्थानी गद्य साहित मे आपरी साख जमाई। इण कहाणी संग्रै मे राजस्थानी ग्रामीण समाज री परम्परावा, बिस्वास, मानतावा, दुःख-सुख, हसी-खुशी, बोल-बंतळ, चाल-ढ़ाल आद रो खरो नैं मन नैं छूवणियो अकण हुयो है। श्री संस्कर्ता रा "ग्योंयी" रै अलावा भी "दस दोख", "घर की रेल" अर "घर की गाय" नाव रा बीजा कहाणी सग्रै भी छप्या है। "दस दोख" में हिन्दू समाज री दस कुरीत्यां माथै वार करीज्यो है तो "घर की गाय" मे मिनख नै ऊजळै आचरण री सीख दिरीजी है अर "घर की रेल" में राजस्थान री चा'वी लोक कथावां रै सागै ही लेखक आपरी भी की बातां भेळ दी है।

श्री बैजनाथ पंवार रा "लाडेसर" अर "नैणा खूट्यो नीर" नांव रा दो कहाणी सग्रै छप चुक्या है। श्री पंवार सरू रै बरसां मे आदर्शोन्मुखी जथारथवादी कहाण्यां लिखता रैया, पण बाद रै बरसां मे जिनगानी रा काठा-करड़ा अनुभव आदर्शां सूं मोहभंग करवायो अर श्री पंवार आपरी बाद री कहाण्यां में मगसी पड़ती जिनगाणी रा कई एक सान्तरा चित्राम माण्ड्या। श्री संस्कर्ता री भान्त ही आखी उमर गांवां रै लोगां रै बिचाळै उठणै-बैठणै सूं आंरी कहाण्यां रो ग्रामीण समाज घणो बिस्वासू लखावै। आंरी कहाण्यां मे अेकै कानी वां लोगां री आस्थावां, मानतावां अर बिस्वास सैंज रूप मे उभर नैं साम्है आया है तो बीजै कानी बांरी जिनगानी रा

अभाव, कष्ट, दु.ख अर दरद भी पूरी ईमानदारी सूं चवड़ै करीज्या है। "लाडेसर" अर "भूरी" श्री पंवार री पैलड़ी आदर्शवादी मनगत नै उजागर करै तो "नैणां लूट्यो नीर" "मिंटोरो" "अर "हार्योड़ी जिनगानी" वां री बाद की बदळ्योडी मनगत नै प्रगासै।

आधुनिक राजस्थानी कथाजात्रा में आपरी अेक न्यारी ही ओळखाण बणावणिया श्री नृसिंह राजपुरोहित आपरी कहाण्यां मे ग्रामीण समाज रा खरा नै साचा चित्राम आंकण रै सागै ही उण सूं बारै री दुनिया रा भी कई रंग देख्या-परख्या है अर वांनै बितै मंजोरै ढंग सूं आपरी कहाण्यां में माण्ड्या-कोर्या भी है । "अमर चूंनड़ी", "मऊ चाली माळवै" अर "परभातियो तारो" नाव सू आपरा तीन कहाणी संग्रै छप चुक्या है। आंरी कहाण्यां मे बदळतै बगत री मोल मानतावां रै अंकण रै साथै-साथै ही नैतिक मूल्यां रै ह्रास अर पतन नै भी रेखांकित करीज्यो है। आजादी रै बाद देस मे वध्योड़ै भिष्टाचार, फैल्योड़ी आपाधापी अर बधती मूल्यहीनता रो खरो विवेचण आंरी कहाण्यां मे हुयो है । श्री राजपुरोहित बारली दुनिया नै दरसावण मे जित्ता चतर है बै वित्ता ही हुंस्यार मांयली दुनिया नै प्रगासण मे भी है। "उडीक", "भारत भाग विधाता", "लकी स्टोन" "कुअै भांग पडी" "मऊ चाली माळवै", "गिरजड़ा", "ठूंठ" आद आपरी घण चरचित कहाण्यां रैयी है ।

श्री राजपुरोहित री पीढ़ी रा बीजा लिखारा में श्री श्रीलाल नथमल जोशी रो झुकाव आदर्श कानी रैयो है। सैं'री जीवण रै भान्त-भन्तीला, खाटा-मीठा अनुभवा नै आपरी कहाण्या मे अंगेजणिया श्री श्रीलाल जी रै समूळो कथा-ससार में आदर्श रा सुर कठै धीमा तो कठै उतावळा पण सुणीजै जरूर है। आंरी वर्णनात्मक शैली में लिखीज्योडो घटना प्रधान कहाण्यां मे कौतक अर मिठास रै भेळै ही आदर्श भी छानै सी'क घुस पैठ कर ही लेवै है। "परण्योडी कंवारी" नांव सू आंरो कहाणी संग्रै छप चुक्यो है। "बाप रो औमर", "कानफीडेंसल रिपोर्ट", "बधण री बेळा", "तैरै दिना री छुट्टी" आद कहाण्यां इण गत री कहाण्यां है ।

श्री मूलचन्द प्राणेश रा "ऊकळता आन्तरा सीळा सांस" अर "चश्मदीठ गवाह" नाव रा दो कहाणी संग्रै छप चुक्या है। श्री प्राणेश में आदर्श री ठोड जथारथ रा सुर सावंठा है। आं री कहाण्यां मे अभाव

अर विवशता मे टूटता–बिखरता आदर्श, तंगी अर बीखै सूं ढंवता नैतिक मूल्य अर आर्थिक दबावां मे कसमसाता घर-परवार अर गांव खास करनै निगै आवै । "सौदो", "जडली" आद कहाण्यां इणी भान्त री कहाण्यां है।

श्री दामोदरप्रसाद शर्मा रो कथा-संसार घणो लाम्बो-चवड़ो । गांव अर मै'र, देस अर परदेस, अतीत अर वर्तमान च्यारूं कूटा संवती आंरी कहाण्यां रो मूळ सुर भावुकता रो रैयो है । प्रेम अर घिरणा में डूबतै उतरातै मिनख मन री कई एकस रूतरी झांवयां आं री कहाण्यां मे देखण नै मिलै। चित्रात्मक वर्णन अर काव्यात्मक शैली रै कारण आंरी कहाण्यां आपरी एक न्यारी ही ओळखाण बणावै । कहाण्यां मे ठौड-ठौड गद्य-काव्य रै जोड रो ललित गद्य आंरी मूळ कवि प्रकृति रो अहसास करावै । "प्रेतात्मा री प्रीत" नांव सूं आपरो एक कहाणी संग्रै छप चुक्यो है । "चितराम", "प्रेतात्मा री प्रीत" "हमजोळी" आद आपरी नांमी कहाण्यां रैयी है ।

श्री मुरलीधर व्यास रै बाद री जिण कथाकार पीढ़ी री हाल ताईं चरचा हुई है, उण पीढ़ी रा दो-तीन लिखारा इसा है जिणां रै उल्लेख बिना आ चरचा अधूरी रैय जासी । आं लोगां में डॉ. मनोहर शर्मा, श्री अन्नाराम 'सुदामा', श्री करणीदान बारहठ, श्री दीनदयाल ओझा, श्री उदयवीर शर्मा, श्री दामोदरप्रसाद चाकलान, श्री किशोर कल्पनाकान्त आद रा नांव उल्लेखणजोग है ।

डॉ. मनोहर शर्मा री निजरां जीवण रै कळूंठै पख रै साथै ही उण रै ऊजळै पख माथै भी रैयी है । बदमान पूंजीपति वर्ग री खाम्यां अर दोखां नै साहित में सगळां ही मूंड्या है । पण बांरी उदारता अर मिनखाचारै नै डॉ. शर्मा ही आपरी कहाण्यां में बखाण्या है । "कन्यादान" नांव सूं आपरो कहाणी संग्रै छप चुक्यो है । सेखावाटी अंचळ रो प्रमाणिक अंकण आपरी कहाण्यां में हुयो है।

श्री अन्नाराम 'सुदामा' मूळतः आस्थावादी कहाणीकार है । बांरा "आंधै नै आंख्यां" अर "गळत इलाज" नांव रा दो कहाणी संग्रै छप चुक्या है । जीवण अर जगत बाबत श्री सुदामा रो एक खास नजरियो है अर बांरी हरेक कहाणी बांरै उण नजरियै नैं पोखै-प्रकासै । सच्चाई, मैणत, ईमानदारी, स्वाभिमान, नीति-निष्ठा, भाईचारो आद अै की अैड़ां

मूल्य है, जिणां रै खातर आं रै मन में गैरी आस्था है। आंरी हरेक कहाणी में कोई-न-कोई पात्र अभावां सूं जूंझतो, समाज री विषमतावां नै झेलतो, अेकलो ही न्याव, नीत अर सत रै गेलै वधतो जावै है। उण नै पग-पग माथै छळ-फरेब, कूड़-कपट, बेईमानी आद सूं बांथेड़ो करणो पड़ै, पण बो माई रो लाल तो सौ-सौ बीसा भोग'र भी ,सत-सत अवळायां झेल'र भी आपरै गेलै सूं नीं डिगै। अेड़ा पात्र पाठकां रो सम्मान तो पावै पण थांरो समाधान नी कर सकै, क्यूं कै जीवण नै बिडरुप करण आळी स्थितियां अर बांरा सिरजक पात्रां री काळी करतूतां नै भोगता, झेलता श्री सुदामा रा अै पात्र आं सगळी गतां सूं क्षुब्ध नी है। वैं का तो आं नै आपरै करमां री गत मानै अर का आपरै बिस्वासां मे ही इतरा मगन है कै बांनै शोषण, इन्याय अर क्रूरतावा रा सगळा रूप आप रै आदर्शां अर बिस्वासां रै सामै जमा ही पोचा अर हीणा लखावै। बांरी "सुलतान नेकी रो सम्राट" अर "सागीपणा" जेड़ी कहाण्यां इण बात री साख भरै।

राजस्थानी रा घणकरा बीजा कहाणीकारां री भांत श्री करणीदान बारहठ री चेतना में भी गांव समायोड़ो है। गांव री हरेक ऊंच-नीच, आछी-माडी नै वैं नेड़ै सूं देखी-परखी ही नीं है, पण भोगी-अंगेजी भी है। इणी कारण बांरी कहाण्यां में ग्रामीण जीवण री धड़कन साफ लखावै। ई गांव रा कई रंग है– काळ सूं दब्योड़ो, उदास अर अणमणो, बो'रै रै करज सूं दब्योड़ो कुबडो नै पांगळो, राजनीति री बिसैली हवा सूं टूंपीजतो नै सुरंगी बिरखा मे कोड अर मोद में भर'र नाचतो-कूदतो। श्री बारहठ आपरी कहाण्या मे गांव री आं सगळी ही रंगतां नै घणी घिरजाई सूं मांडी है। बा रै कहाणी–संग्रै "आदमी रो सींग" मे जठै अेकै कानी ओ गांव पसवाड़ा फोरै, तो बीजै कानी आज रो इसकूली संसार आपरी समूळी कुचमादां अर कुराफातां सागै फड़फड़ावै तो तीजै कानी बीत्योड़ै जुग री शान–शोकत रै सुपनां मे डूब्या सामंत जूना काण-कायदां नै झूठी आबरू नै अवेरण री सोच मे हाफता-हळफळता निगै आवै। व्यंग्य री धार सूं अणियाळी नुकीली आं री कहाण्यां बीच-बीच मे समाज अर सभा रै गाभां नै फाड़ती बी रै नागै रूप नै उघाड़ती नी संकै। "धन घड़ी धन भाग" "चिमनी रो च्यानणो", "आपो" आद आं री उल्लेखणजोग कहाण्या है।

ऊपर जिण कथा-पीढ़ी री चरचा हुई है, बा पीढ़ी आजादी सूं पैलां

जायी-जलमी पीढ़ी रैयी है। उण पीढ़ी रै सोच अर आजादी रै बाद जायी-जलमी पीढ़ी रै सोच अर नजरियै में अंतर साफ लखावै। आजादी सूं पैलां आळी पीढ़ी मोटा-मोटी आदर्शवादी चेतना सूं अनुप्राणित रैयी है। बाद आळी पीढ़ी जथारथवादी समझ सूं परिचालित रैयी है। यूं आजादी सू पैलां जाया-जलम्या श्री विजयदान देथा जैड़ा कहाणीकार आपरी पैनी दीठ, खरी मींट, ऊंडी समझ अर सांची पकड रै कारण आजादी सूं पैलां जलम लेय'र भी आज रै किणी युवा कहाणीकार सूं कम जथारथ-वादी नै प्रगतिशील नी है। सही सामाजिक सोच, गैरी विश्लेषणखिमता अर बात कैवण री सोवणी लकब अर सखरै आंटै रै पाण श्री देथा राजस्थानी ही नीं, हिंदी कथा-जगत में भी एक न्यारी नै विशिष्ट ओळखाण बणायी है। बां री "अलेखूं हिटलर" जैड़ी कहाणी किणी भी भाषा-साहित खातर गरब-गुमेज री चीज हुय सकै है।

आजादी रै बाद भी देश रै साधारण मिनख रा दुख-दरद तो बियां-रा-बियां रैया। गांव रै गरीब-गुरबां रो जीवण तो उण भांत दुख सूं दाझै नै कमसाण सूं जूझै। जूनां बो'रां अर जूनां ठाकुर-ठरड़ा ठंडा पड्या तो बांनै लूंटण-खसोटण नै नूंवा बो'रा अर नूंवा ठाकर-ठरड़ा जामग्या। श्री रामेश्वरदयाल श्रीमाळी आपरी "जसोदा" अर "खाजरू" जैडी कहाण्यां मे आं ही सगळी बाता रो मरम-स्पर्शी नै निरमम चित्रांकन कर्‌यो है। श्री श्रीमाळी मूळत: हार्‌यै-थक्यै, दीन-दूबळै प्रताडित नै पीड़ित मानखै रा हिमायती रैया है। "सळवटां" नाव रै बां रै कहाणी सग्रं में अैड़ा ई मानख्यां रा दुख दरद नै बां री दीनता, बिवशता अर परबसता रो खुलासो कि-यो गयो है। श्री श्रीमाळी कनै आम आदमी रै दुख-दरद नै गैराई सूं मैसूसणियो हीयो नै उण री अवखाया नै दौरायां मांडण आळी सबळी लेखणी रैयी है। बां री काण्यां मे आम आदमी री पोची नै हीणी हालत नै उजासणियां विविध प्रसंगा रो जको लेखादो लिरीज्यो है, उण सूं आजादी रै बाद रै भारत री खरी नै साची तसवीर उभरनै साम्ही आवै।

आजादी रै बाद आम आदमी री तकलीफां घटीक न घटी, उण रा हालात बदळ्या क न बदळ्या, पण सामाजिक सोच, मानवता अर पर-म्परावां में ठाडो बदळाव आवा लाग्यो। ई बदळाव रो असर साहित माथै भी आयो। आजादी मिल्यां रै ड़ेढ-दो दशक बाद तांई, आजादी सूं पैलां जलमी पीढी ~ आदर्शवाद खातर जको जोश अर उछाह हो, बो बगत री

मार सूं टूटता सुपनां सागै मोळो नै मंगसो पड़तो गयो। उछाह अर सुपनां री ठौड़ नूंवी पीढी रै साहित मे जथारथ नै नागै जथारथ रो वेलाग अंकन ही वेसी हुयो है। श्री रामनिवास शर्मा, श्री हरमन चौहान, श्री यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र' आद री कहाण्यां बदळता सामाजिक संबंधां, रिश्तां मे बधती दरारां, टूटता आदर्शां अर पसरती मूल्यहीनता रै ओळै-दोळै घूमती निगै आवै। श्री चन्द्र अर श्री चौहान री कहाण्यां माथै हिंदी रै "नूंवी कहाणी" आंदोलन री छाप साफ निगै आवै, जिण रै कारण आं री विश्वसनीयता माथै भी सवालिया अैनाण सहजां ही लाग जावै। खास कर नै जठै-कठै ई अै कहाणीकार आपरी धरती सूं अलायदा हुटनै तथाकथित आधुनिकता री खोज पड़ताळ में भवता निजर आवै।

आपरी धरती सूं अलायदा वैवणिया कहाणीकारां री बनिस्पत वै कहाणीकार ज्यादा खरा नैं विस्वासी लागै, जका आपरी धरती माथै ऊभ'र आपरै लोगां बिचै निजरां पसरायनै निरखै-परखै। अैड़ा कथाकार आम आदमी रा सहजात्री हुवण रै कारण उण बदळाव रा सहभेदी हुवण रै कारण उण नै ज्यादा प्रामाणिक ढंग सूं माड्यो-विवेच्यो है। अैड़ा कहाणीकारां मे श्री सांवर दइया, मालचद तिवाड़ी, चेतन स्वामी, प्रेमजी प्रेम, मनोहरसिंह राठौड़, श्याम महर्षि आद रा नाम उल्लेखणजोग है।

श्री सावर दइया रा हाल ताई तीन कहाणी संग्रै "असवाड़ै-पसवाड़ै", "धरती कद ताई घूमैली" अर "अैक दुनिया म्हारी" सामैं आय चुक्या है। अै अेक चतर सर्जन री भांत तटस्थ अर निरमम भाव सूं आपरै समाज री चीर-फाड कर'र उणरै बिकारां नैं साम्हीं लाया है। "अैक दुनिया म्हारी" में आज रै इस्कूली समाज रो खरो नैं बेलाग रूप दरसाईज्यो है। आदर्शां री पोली नै पिलपिली चामड़ी नै छेड़ै कर'र सिडती-गिधती कीड़ां सूं किलबिलाती इस्कूली दुनियां रो असली रूप समाज रै साम्ही राखीज्यो है। अब ओ समाज माथै है कै बो ऊपरी पाटा-पोळी सूं ही हालातां नै जापड-तापड़ करण नै खपै कै इण रो असली इलाज करण वेई अस्त-रपाती काम मे लावै। "हालात" आं री प्रतिनिधि नै आधुनिक राजस्थानी कहाणी साहित री एक अणमोल कहाणी मानी जा सकै है। इस्कूली दुनियां सूं न्यारी-निरवाळी जकी दुनिया है, बी कानी भी श्री दइया आपरी निजरां पसारी है। सैरां में बसणियै निम्न मध्यम वर्ग री मानसिकता री उघाड़ करण मे अै पूरमपूर सफळता हासिल करी है।

आर्थिक दबाव, बगत री मार, पांवडै-दर-पांवडै पसरती पूंजीवादी पिच्छगी संस्कृति, अै सै मिल'र आज रै समाज जकी गत बणाई है बांरो ही लेखो-जोखो अै आपरी कहाण्यां मे कियो है। ई पड़ताल मे श्री दइया कई बार पत्रकार रै नैडै पूग ज्यावै है। आरी रचनावा भावोत्तेजना री ठौड़ विचारोत्तेजना ने जलम देवै। छोटा-छोटा वाक्य, संवादा री प्रधानता, अर बिचाळै-बिचाळै व्यग रा तीखा छांटा आ री कहाण्यां री उल्लेखण जोग विशेषतावा मानी जा सकै है।

मूळतः कवि हुवण रै कारण श्री प्रेमजी 'प्रेम' आपरी कहाण्यां मे बारली दुनिया री ठौड़ मांयली दुनिया मे बेसी रम्या है। आ री कहाण्यां मे स्थूल घटनावा री ठौड़ अन्तर री भाव-विह्वल दुनिया रा दरसण ही बेसी हुवै। श्री प्रेम री कहाण्या मे कठै नैतिक सस्कार अर मन री सहजवृत्ति आपस मे गूथीजता निजर आवै तो कठै अन्धविसवास सू कळीज्योड़ै बेमी मन रा गोट भतूळिया ज्यू मवै। कठै बेबसी री झुझल सळफळावै तो कठै नाजर मन रो पांगळो क्रोध लटपटावै। "रामचंद्रा की रामकथा" नाव सू आपरो एक कहाणी सग्रै छप चुक्यो है। न्यारी-न्यारी मनगतां नै उघाडण वेई प्रेमजी रो कवि कळाकार कठै कुदरत रा कळापां रो भीणो बखाण करै तो कठै काव्यात्मक ओपमावां रो सा'रो लेवै। "खजानो", "डीजल को घूंघाड़ो", "सुर" आद आपरी सान्तरी-सखरी कहाणिया है।

श्री भवरलाल सुथार 'भ्रमर' रा 'तगादो' अर 'अमूजो कदताई' नांव रा दो कहाणी सग्रै छप चुक्या है। जीवण रा अभाव, रूढ संस्कार अर उपभोक्ता संस्कृति रा दबाव आम मिनख रै जीवण नै चोगड़दै घेर राख्यो है। इण घेराव मे सिसकतै, कसमसातै मिनख री पीड़ रो प्रगासण श्री भ्रमर आपरी कहाण्यां में कर्‌यो। भात-भात री अबखायां भोगतो मिनख कित्तो बेबस अर लाचार है। इणरो अहसास श्री भ्रमण री कहाण्यां पढता पग-पग माथै हुवै। साफ-सुथरी कैण-गत, अन्तर री ऊण्डी पीड नै पिछाणण आळी दीठ अर समस्यावा री तै ताई पूग'र बानै विश्लेषित करण री लकब रै कारण आरी कहाण्यां पाठक रै मन माथै गैरो प्रभाव छोड़ै। "तगादो", "उड़दो", "दिन चर्या" अर "बाता" आद कहाण्यां बखाणणजोग बण पडी है।

श्री मालचन्द तिवाडी राजस्थानी रा ही नी हिन्दी रा भी उदीयमान कथाकार है। हिन्दी री घणकरी नामी-गिरामी पत्रिकावा मे आपरी

कहाण्यां प्रकाशित, पुरस्कृत हुय चुकी है। पिलपिली भावुकता सूं दूर आंरी जथारथपरक दीठ जिनगाणी रै आडम्बरपूर्ण आवरण नै भेद'र उणरै असली रूप नै सामै ल्यावै। हालात अर सस्कारां सूं जकड़योड़ै आदमी री मांयली छटपटाहट नै उकेरण आळी आंरी कहाण्यां आपरै शिल्प-सौष्ठव रै कारण भी पाठक रै मन माथै आपरी एक गैरी छाप छोड़ै। "याद", "नाजायज" आद आपरी उल्लेखणजोग कहाण्यां है।

नूंवी पीढ़ी रा लिखारां में श्री चेतन स्वामी भी आपरी एक न्यारी ओळखाण बणाई है। कथारस सूं भरपूर आंरी कहाण्यां मे सरू सूं लेय'र छेकड़ ताई पाठक नै बान्ध'र राखण आळी विरल खिमता रा दरसण हुवै। परिवेश रो बिस्वासू नै सजीव अकण बात नै डूब'र माण्डण री आन्टो अर मनोवैज्ञानिक सत्यां नै ओळखण अर उघाड़ण री लकब आंरी कहाण्यां री खासियत मानी जा सकै है।

सेखावाटी अचल री छाप लियां श्री बी. एल. माली री कहाण्या "किली-किली कटको" नाव री पोथी मे छपी है। आंरी कहाण्यां मे जीवण री जूनी अर नूवी मानतावा रै बिचै चालती कसमसाहट रो अंकण हुयो है अर माय-विचाळै निर्मम जथारथ रा कारुणिक चित्राम माण्डीज्या है।

ऊपर जिण कथा-सकलणां अर कथाकारां री चरचा हुई है, बां नै टाळ'र भी मोकळा कथा-लेखक अर दसूं कथा-सग्रै राजस्थानी कहाणी री श्रीवृद्धि करण नै लाग रेया है। कथा सकलणां मे श्री दीनदयाल ओझा द्वारा सम्पादित राजस्थान के कहानीकार (राजस्थानी), श्री विजयदान देथा द्वारा सम्पादित "संभाळ" श्री प्रेमजी "प्रेम" द्वारा सम्पादित "बिखग्या ज्यो मोती", श्री श्याम महर्षि द्वारा सम्पादित "पावडा कहाणी रा" नै "सूरज उगाळी" श्री अमोलकचद जांगिड़ री "सेखावटी री आचळिक कहाणियां", श्री उदयवीर शर्मा री "किरत्यां रो झूमको", श्री रामनिरजन ठिमाऊ री "बेमाता रा आंक", श्री सुरेन्द्र अंचल री "मोत्यां मूंछो औसर" अर श्री मनोहरसिंह राठौड़ री "रोशनी रा जीव" आद पोथ्यां उल्लेखण जोग है। इणी भात कथा-लिखारां मे श्री जमनाप्रसाद ठाड़ा "राही", श्री शचीन्द्र उपाध्याय, डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, डॉ. नाथूलाल पाठक, श्री अर्जुनसिह शेखावत, श्री कल्याण गौतम, श्री मुरलीधर शर्मा 'विमल', श्री विश्वम्भर प्रसाद शर्मा 'विद्यार्थी',

श्री भागीरथसिंह 'भाग्य' श्री बुलाकी शर्मा, श्रीमती कमला भादाणी आद रा नांव उल्लेखणजोग है।

मोटामोटी राजस्थानी कहाणी आज भी सामयिक सामाजिक जीवण रै ओळै-दोळै ही घूमै है। वियांरा बानगी रै तौर पर ऐतिहासिक, पौराणिक, मनोविश्लेषणात्मक, हास्य-व्यंग्यात्मक, प्रतीकात्मक आद कहाण्यां भी लाध जावासी पण आं मे सूं कोई भी एक हिन्दी कहाणी री भांत अलायदी धारा रूप खुद नै थाप नी सकी है अर न कोई आपरी ओळखाण ही बणा सकी है। पण हिन्दी कहाणी सूं निरवाळै रूप में राजस्थानी *कहाणी में आपरी धरती री गन्ध अर आपरी संस्कृति रो रंग बेसी तीखो* खरो नै प्रमाणिक है। राजस्थानी री जुगां जूनी साहित्तिक परम्परा अर उणरी निरन्तरता, उणरै साहितकारां रो आपरै लोकजीवण, लोक-संस्कृति अर लोक साहित सूं ठाडो हेत नै सैठी पिछाण खाली राजस्थानी कथा साहित नै ही नीं, वरन् समूळै राजस्थानी साहित नै गरिमा, गाम्भीर्य अर विश्वसनीयता बख्शी है।

कथ्य अर शिल्प री दीठ सूं आधुनिक राजस्थानी कहाणी में दिनों-दिन निखार नै कसाव आंवतो जा रैयो है। उण मे अबै भावुकता भर्‌यै आदर्शवादी नजरियै री ठौड जथारथपरक दीठ, समस्यावां रै सतही समाधान री ठौड गहन विश्लेषण री प्रवृत्ति टाइप्ड अर वर्ग प्रतिनिधि पात्रां री ठौड़ निजू खासियत आळा पात्रां रो रचाव, घटनाबहुलता, आकस्मिकता, अर सयोग तत्वांरी ठौड परिवेश री गैरी छाणबीण अर उण रै बीच ही कथा रै रचाव-कसाव री समझ आद विशेषतावां साफ निजर आवै।

• • •